विक्रम संवत 2079 ■ अगहन (मार्गशीर्ष) /पौष मास(10) ■ 01 दिसम्बर 2022 ■ मूल्य : 23 रु.

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.01726169, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

चरैवेति

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत की G20 की अध्यक्षता की पारी शुरू

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बांसवाड़ा, राजस्थान में भील स्वतंत्रता सेनानी, श्री गोविंद गुरु की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने गांधीनगर में विधानसभा चुनाव के लिए संकल्प पत्र जारी किया।

▶ गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने बनासकांठा में विजय संकल्प रैली को संबोधित किया।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने दिल्ली में डोर टू डोर अभियान में भाग लिया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और अमेरिकी राष्ट्रपति श्री जो बिडेन ने G20 शिखर सम्मेलन में अभिवादन का आदान-प्रदान किया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री गुरु नानक देव जी की जयंती समारोह में भाग लिया।

▶ गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने गुजरात में विजय संकल्प रैली को संबोधित किया।

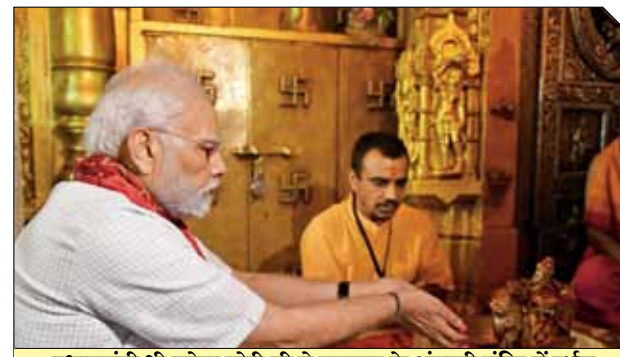

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुजरात के अंबाजी मंदिर में दर्शन और पूजा किया।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

- जी-20 की अध्यक्षता गौरव का विषय

कवर स्टोरी ▶ 05

- 'भारत की G20 की अध्यक्षता की पारी शुरू' : नरेन्द्र मोदी

- **आलेख : विष्णुदत्त शर्मा** 07
  जनजातीय गौरव दिवस स्वाभिमान का पावन पर्व...
- **पीएम किसान योजना :** 09
  पीएम किसान एक परिवर्तनकारी प्रत्यक्ष लाभ अंतरण योजना...
- **पेसा एक्ट :** 10
  पेसा एक्ट-जनजातीय समुदाय का सशक्तिकरण - मुख्यमंत्री
- **एक भारत श्रेष्ठ भारत :** 11
  काशी और तमिलनाडु हमारी संस्कृति और सभ्यताओं...
- **पराक्रम की निरंतरता :** 13
  परिवारवाद, भाई-भतीजावाद नहीं- देश सबसे बड़ा
- **युवाओं को रोजगार :** 15
  प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 71,000 नियुक्ति पत्र प्रदान किए
- **लाड़ली लक्ष्मी योजना :** 17
  बेटियों के विकास की बाधाएँ दूर: मुख्यमंत्री श्री चौहान
- **महिला मोर्चा प्रदेश प्रशिक्षण वर्ग :** 18
  बच्चियों के जन्म से विवाह तक के काम कर रही भाजपा...
- **पिछड़ा वर्ग मोर्चा प्रशिक्षण वर्ग:** 19
  कांग्रेस पिछड़ा वर्ग के लोगों को छलती रही, भाजपा ने शुरू...
- **युवा मोर्चा प्रदेश प्रशिक्षण वर्ग :** 22
  प्रदेश सरकार विकास, जनकल्याण और सुराज के कीर्तिमान...
- **आलेख : रमेश शर्मा** 23
  अंग्रेजों के पहले भारत में एक रूप रहा है जनजातीय और...
- **सुघोष मंडल प्रशिक्षण अभियान :** 26
  देश विरोधियों को जवाब देगा, विकास का संदेश नीचे तक ले...
- **जिलाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, सह कोषाध्यक्ष बैठक :** 27
  सिस्टम को पारदर्शी बनाना हमारी जिम्मेदारी: विष्णुदत्त शर्मा
- **मन की बात :** 28
  देश के स्वर्णिम भविष्य में सबका स्वर्णिम भविष्य है
- **पुण्यतिथि :** 33
  सरदार पटेल अपने कामों से ही अजर-अमर और अटल... : अमित शाह
  ठाकरेजी के जीवन को मैंने स्वयं देखा है:लालकृष्ण आडवाणी
- **जयंती :** 36
  धर्मो रक्षति रक्षित:पं. मदन मोहन मालवीय
  सोमनाथ मंदिर के पुर्नरूद्धार पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का प्रेरक...
  मौन कर्म साधक परमपूज्य बालासाहब देवरस
- **पुण्यतिथि :** 40
  प्रमुख लोगों की दृष्टि में डॉ. अंबेडकर
- **विचार-प्रवाह :** 41
  राष्ट्र और राज्य

मुख्य व्रत-त्यौहार

4. मोक्षदा एकादशी व्रत, मौन ग्यारस 5. अनंग त्रियोदशी, प्रदोष व्रत 6. पिशाचमोचनी यात्रा 7. पूर्णिमा व्रत, दत्त पूर्णिमा 8. स्नानदान पूर्णिमा, रोहिणी व्रत 10. कुमुहूर्त्ता प्रारम्भ 11. गणेश चतुर्थी व्रत 16. रूक्मिणी अष्टमी 19. सफला एकादशी व्रत 20. सुरूप द्वादशी 21. प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत 23. स्नानदान श्राद्ध अमावस 24. चन्द्रदर्शन 26. विनायकी चतुर्थी व्रत

मुख्य जयंती-दिवस

3. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती, भोपाल गैस त्रासदी दिवस 4. स्वामी ब्रह्मानंद लोधी जयंती 7. सशस्त्र सेना झंडा दिवस 10. श. वीरनारायण सिंह ब. दि. 11. महा. छत्रसाल परमधामवास दि. 20. संत गाडगे महाराज निर्वाण दिवस 22. श्रीनिवास रामानुजन जयंती 24. राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस 25. पं. मदनमोहन मालवीय जयंती, पं. अटल बिहारी वाजपेयी जयंती

वर्ष-54, अंक : 10, भोपाल, दिसम्बर 2022

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

ये जरूरी है कि हम हमारी राष्ट्रीय पहचान के बारे में सोचे जिसके बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

जी-20 की अध्यक्षता गौरव का विषय

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत को जी-20 देशों की अध्यक्षता करने का अवसर मिला है। यह भारत व भारतवासियों के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अत्यंत गौरव का विषय है।
अगर पूरे विश्व के सारे नेताओं के ऊपर एक समग्र दृष्टि डालें तो निश्चित तौर पर भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी सबसे ऊपर के पायदान पर खड़े नजर आते हैं।

दिसम्बर का महीना कई मामलों में कई सारी उपलब्धियों को लेकर सामने आने वाला है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत को जी-20 देशों की अध्यक्षता करने का अवसर मिला है। यह भारत व भारतवासियों के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अत्यंत गौरव का विषय है। अगर पूरे विश्व के सारे नेताओं के ऊपर एक समग्र दृष्टि डालें तो निश्चित तौर पर भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी सबसे ऊपर के पायदान पर खड़े नजर आते हैं। आज विश्व जिस दोराहे पर खड़ा है वहाँ पर उसे सही रास्ते पर दिशा दिखाने के लिए भारत और भारत का नेतृत्व जरूरी है। कोरोना की भीषण महामारी के बाद पूरा विश्व आर्थिक तंगी से जूझ रहा था, इस विभिषिका को भारत ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जिस तरह से निपटा उसने सारे विश्व को आश्चर्य से भर दिया। वर्तमान समय में रूस व युक्रेन के युद्ध ने एक बार फिर सारे विश्व की आर्थिक स्थिती को बुरी तरह से प्रभावित कर दिया है। कई देशों में ईंधन से लेकर खाने-पीने के सामानों तक कमी साफ - साफ देखी जा रही है। कई विकसित देश महंगाई के भीषण दौर से गुजर रहे हैं। वहां की स्थिती बद से बदतर होती जा रही है। परन्तु भारत में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में इस युद्ध का दुष्प्रभाव बहुत कम पड़ा। इसका सारा श्रेय भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व को जाता है, जिन्होंने सही समय पर सही निर्णय ले कर के भारतवासियों को भीषण आपदा से दूर कर दिया। भारत सदैव से वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत को मानने वाला राष्ट्र रहा है, इसीलिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की जी-20 की अध्यक्षता दुनिया में एकता की भावना को बढ़ावा देने का काम करेगी। उम्मीद ही नहीं विश्वास है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में जी-20 सफलता के नए आयाम छुऐगा।

विश्व के सबसे पुराने और सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ शहर बनारस में काशी-तमिल संगमम का आयोजन हो रहा है। जिसका अपने आप में बड़ा महत्व है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में काशी-तमिल संगमम का आयोजन एक बड़ी सार्थक पहल है। हमारे बीच में संगमों की बड़ी महिमा और बड़ा महत्व रहा है। नदियों और धाराओं के संगम से लेकर विभिन्न विचारों, विचारधाराओं, ज्ञान-विज्ञान, समाज और संस्कृतियों के हर संगम को हम भारतवासी सदैव से उत्सव के रूप में मनाते रहे हैं। इसीलिए काशी-तमिल संगमम भी विशेष है। भारत की सांस्कृतिक राजधानी काशी जहां बाबा विश्वनाथ विराजमान हैं, वह विश्व की सबसे प्राचीनतम नगरी है। यहां पर शिक्षा का विशाल केन्द्र बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय है। तो वहीं दूसरी ओर भारत की प्राचीनतम और गौरव का केन्द्र रहा तमिलनाडु और तमिल संस्कृति है। इसीलिए काशी और तमिल का यह संगम कई सारी संभावनाओं और सामर्थ्य को समेटे हुए है। काशी और तमिलनाडु दोनों शिवमय और शक्तिमय हैं। काशी-तमिल संगमम वास्तव में अद्भुत संगम है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में रोजगार के क्षेत्र में अनेक सार्थक प्रयास लगातार होते जा रहे हैं। आज देश में अनेकों स्टार्ट-अप तेजी से स्थापित हो रहे हैं। इनमें से कई युनिकॉर्न का स्वरूप ले चुके हैं। इसके साथ-साथ सरकारी नौकरी के क्षेत्र में भी युवाओं की भागीदारी तेजी से सुनिश्चित की जा रही है।

इसका प्रमाण तब दिखा जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने रोजगार मेले के अन्तर्गत नए भरती किये गये लगभग 71000 युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान किये। इसके पहले भी रोजगार मेले में लगभग 75000 से ज्यादा युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपे गये थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र की सरकार राष्ट्र निर्माण में युवाओं की प्रतिभा और ऊर्जा का सदुपयोग करने के कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत आर्थिक, सामाजिक, रक्षा और सांस्कृतिक क्षेत्र में चहुंमुखी विकास की ओर तेजी से बढ़ रहा है। राष्ट्र की सांस्कृतिक और गर्व से भर देने वाली साझी शहादत और साझी विरासत को देश के सामने लाने का पुनीत कार्य यह सरकार कर रही है। इसी कड़ी में असम के वीर योद्धा श्री लचिक बोरफूकन जी की 400वीं जन्म-जयंती बड़े सम्मान के साथ मनाई गयी। पूरे देश में इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा। भारत की युवा पीढ़ी को इस मुगल विजयी वीर के बारे में बहुत ज्यादा जानकारी मिली। वरना पहले तो इतिहास में सिर्फ कुछ चन्द परिवारों की ही गौरव गाथाऐं पढ़ाई जाती थीं। 15 नवम्बर को भगवान बिरसा मुंडा जी की जन्म-जयंती पर जनजातीय गौरव दिवस बड़े धूम-धाम से मनाया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जनजातीय गौरव दिवस की स्थापना का भाव यही है कि जनजातीय संस्कृति में विद्यमान प्रेरक प्रसंगों को जन मानस समझे और उसे आत्मसात करे।

मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में जनजातीय समुदाय का सशक्तिकरण करने के लिए पेसा एक्ट लाया गया है। यह एक्ट जनजातीय समाज की आर्थिक, सामाजिक उन्नति और उन्हें ज्यादा सशक्त एवं अधिकार सम्पन्न बनाने के लिए लाया गया है। यह एक्ट अनुसूचित क्षेत्र में गांव में लागू होगा। यह एक्ट शहर में लागू नहीं होगा। जनजातीय समाज के लोगों को पेसा एक्ट और ज्यादा मजबूत बनाएगा। मध्यप्रदेश में बेटियों को शिक्षा में सहयोग के साथ ही अन्य कई क्षेत्रों में विकास और सामाजिक नेतृत्व के लिए सक्षम बनाया जायेगा। इसी कड़ी में मध्यप्रदेश में लाड़ली लक्ष्मियों के खातों में 1.85 करोड़ प्रोत्साहन राशि अन्तरित की गयी। इसी माह गुजरात व हिमाचल प्रदेश में होने वाले विधानसभा के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में प्रचंड बहुमत प्राप्त करेगी ऐसा सभी कार्यकर्ताओं का विश्वास है। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

भारत की G20 की अध्यक्षता की पारी शुरू

नरेन्द्र मोदी

जी 20 अध्यक्षता के दौरान, हम भारत के अनुभव, ज्ञान और प्रारूप को दूसरों के लिए, विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए एक संभावित टेम्प्लेट के रूप में प्रस्तुत करेंगे।

हमारी जी 20 प्राथमिकताओं को, न केवल हमारे जी 20 भागीदारों, बल्कि वैश्विक दक्षिण में हमारे साथ-चलने वाले देशों, जिनकी बातें अक्सर अनसुनी कर दी जाती है, के परामर्श से निर्धारित किया जाएगा। हमारी प्राथमिकताएं, हमारी 'एक पृथ्वी' को संरक्षित करने, हमारे 'एक परिवार' में सद्भाव पैदा करने और हमारे 'एक भविष्य' को आशान्वित करने पर केंद्रित होंगी।

जी 20 की पिछली 17 अध्यक्षताओं के दौरान वृहद आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने, अंतरराष्ट्रीय कराधान को तर्क संगत बनाने और विभिन्न देशों के सिर से कर्ज के बोझ को कम करने समेत कई महत्वपूर्ण परिणाम सामने आए। हम इन उपलब्धियों से लाभान्वित होंगे तथा यहां से और आगे की ओर बढ़ेंगे। अब, जबकि भारत ने इस महत्वपूर्ण पद को ग्रहण किया है, मैं अपने आपसे यह पूछता हूं-

- क्या जी 20 अभी भी और आगे बढ़ सकता है?
- क्या हम समग्र मानवता के कल्याण के लिए मानसिकता में मूलभूत बदलाव को उत्प्रेरित कर सकते हैं?

मेरा विश्वास है कि हम ऐसा कर सकते हैं।

हमारी परिस्थितियां ही हमारी मानसिकता को आकार देती हैं। पूरे इतिहास के दौरान, मानवता अभाव में रही। हम सीमित संसाधनों के लिए लड़े, क्योंकि हमारा अस्तित्व दूसरों को उन संसाधनों से वंचित कर देने पर निर्भर था। विभिन्न विचारों, विचारधाराओं और पहचानों के बीच, टकराव और प्रतिस्पर्धा आदर्श बन गए। दुर्भाग्य से, हम आज भी उसी शून्य-योग की मानसिकता में अटके हुए हैं। हम इसे तब देखते हैं जब विभिन्न देश-क्षेत्र या संसाधनों के लिए आपस में लड़ते हैं। हम इसे तब देखते हैं जब आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति को हथियार बनाया जाता है। हम इसे तब देखते हैं जब कुछ लोगों द्वारा टीकों की जमाखोरी की जाती है, भले ही अरबों लोग बीमारियों से असुरक्षित हों। कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि टकराव और लालच मानवीय स्वभाव है। मैं इससे असहमत हूं। अगर मनुष्य स्वाभाविक रूप से स्वार्थी है, तो हम सभी में मूलभूत एकात्मता की हिमायत करने वाली इतनी सारी आध्यात्मिक परंपराओं के स्थायी आकर्षण को कैसे समझा जाए? भारत में प्रचलित ऐसी ही एक परंपरा है जो सभी जीवित प्राणियों और यहां तक कि निर्जीव चीजों को भी एक समान ही पांच मूल तत्वों -पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के पंचतत्व से बना हुआ मानती है। इन तत्वों का सामंजस्य - हमारे भीतर और हमारे बीच भी- हमारे भौतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय कल्याण के लिए आवश्यक है। भारत की जी-20 की अध्यक्षता दुनिया में एकता की इस सार्वभौमिक भावना को बढ़ावा देने की ओर काम करेगी। इसलिए हमारी थीम - **'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' है**। ये सिर्फ एक नारा नहीं है। ये मानवीय परिस्थितियों में उन हालिया बदलावों को ध्यान में रखता है, जिनकी सराहना करने में हम सामूहिक रूप से विफल रहे हैं। आज हमारे पास दुनिया के सभी लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त उत्पादन करने के साधन हैं। आज, हमें अपने अस्तित्व के लिए लड़ने की जरूरत नहीं है - हमारे युग को युद्ध का युग होने की जरूरत नहीं है। ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए! आज हम जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और महामारी जैसी जिन सबसे बड़ी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, उनका समाधान आपस में लड़कर नहीं बल्कि मिलकर काम करके ही निकाला जा सकता है। सौभाग्य से, आज की जो तकनीक है वह हमें मानवता के व्यापक पैमाने पर समस्याओं का समाधान करने का साधन भी प्रदान करती है।

आज हम जिस विशाल वर्चुअल दुनिया में रहते हैं, वह डिजिटल प्रौद्योगिकियों की मापनीयता को प्रदर्शित करती है। भारत इस सकल विश्व का सूक्ष्म जगत है जहां विश्व की आबादी का छठवां हिस्सा रहता है और जहां भाषाओं, धर्मों, रीति-रिवाजों और विश्वासों की विशाल विविधता है। सामूहिक निर्णय लेने की सबसे पुरानी ज्ञात परंपराओं वाली सभ्यता होने के नाते भारत दुनिया में लोकतंत्र के मूलभूत डीएनए में योगदान देता है। लोकतंत्र की जननी के रूप में भारत की राष्ट्रीय सहमति किसी फरमान से नहीं, बल्कि करोड़ों स्वतंत्र आवाजों को एक सुरीले स्वर में मिला कर बनाई गई है। आज, भारत सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था है। हमारे प्रतिभाशाली युवाओं की रचनात्मक प्रतिभा का पोषण करते हुए, हमारा नागरिक- केंद्रित शासन मॉडल एकदम हाशिए पर पड़े नागरिकों का भी ख्याल रखता है। हमने राष्ट्रीय विकास को ऊपर से नीचे की ओर के शासन की कवायद नहीं, बल्कि एक नागरिक-नेतृत्व वाला 'जन आंदोलन' बनाने की कोशिश की है। हमने ऐसी डिजिटल जन उपयोगिताएं निर्मित करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाया है जो खुली, समावेशी और अंतर-संचालनीय हैं। इनके कारण सामाजिक सुरक्षा, वित्तीय समावेशन और इलेक्ट्रॉनिक भुगतान जैसे विविध क्षेत्रों में क्रांतिकारी प्रगति हुई है।

इन सभी कारणों से भारत के अनुभव संभावित वैश्विक समाधानों के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। जी 20 अध्यक्षता के दौरान, हम भारत के अनुभव, ज्ञान और प्रारूप को दूसरों के लिए, विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए एक संभावित टेम्प्लेट के रूप में प्रस्तुत करेंगे। हमारी जी 20 प्राथमिकताओं को, न केवल हमारे जी 20 भागीदारों, बल्कि वैश्विक दक्षिण में हमारे साथ-चलने वाले देशों, जिनकी बातें अक्सर अनसुनी कर दी जाती है, के परामर्श से निर्धारित किया जाएगा। हमारी प्राथमिकताएं, हमारी 'एक पृथ्वी' को संरक्षित करने, हमारे 'एक परिवार' में सद्भाव पैदा करने और हमारे 'एक भविष्य' को आशान्वित करने पर केंद्रित होंगी। अपने प्लेनेट को पोषित करने के लिए, हम भारत की प्रकृति की देख-भाल करने की परंपरा के आधार पर स्थायी और पर्यावरण-अनुकूल जीवन शैली को प्रोत्साहित करेंगे।

मानव परिवार के भीतर सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए, हम खाद्य, उर्वरक और चिकित्सा उत्पादों की वैश्विक आपूर्ति को गैर-राजनीतिक बनाने की कोशिश करेंगे, ताकि भू-राजनीतिक तनाव मानवीय संकट का कारण न बनें। जैसा हमारे अपने परिवारों में होता है, जिनकी जरूरतें सबसे ज्यादा होती हैं, हमें उनकी चिंता सबसे पहले करनी चाहिए। हमारी आने वाली पीढ़ियों में उम्मीद जगाने के लिए, हम, बड़े पैमाने पर विनाश के हथियारों से पैदा होने वाली जोखिमों को कम करने और वैश्विक सुरक्षा बढ़ाने पर सर्वाधिक शक्तिशाली देशों के बीच एक ईमानदार बातचीत को प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

भारत का जी 20 एजेंडा समावेशी, महत्वाकांक्षी, कार्यवाही-उन्मुख और निर्णायक होगा। आइए हम भारत की जी 20 अध्यक्षता को संरक्षण, सद्भाव और उम्मीद की अध्यक्षता बनाने के लिए एकजुट हों। आइए हम मानव-केंद्रित वैश्वीकरण के एक नए प्रतिमान को स्वरुप देने के लिए साथ मिलकर काम करें। ▪

जनजातीय गौरव दिवस
स्वाभिमान का पावन पर्व

केंद्र सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार ने जनजातीय गौरव की दिशा में कई ऐसे काम किये हैं, जिसकी चर्चा यहां लंबी हो सकती है लेकिन एक तथ्य जो आज चहुंओर स्वीकार किया जा रहा है कि भाजपा सरकारों ने जनजातीय इतिहास के उन नायकों व नायिकाओं को विमर्श की मुख्य धारा में लाने में सफलता पाई है, जिन्हें अब तक भुलाया जाता रहा।

विष्णुदत्त शर्मा

हम सभी को स्मरण है कि पिछले साल 15 नवंबर 2021 को भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इसे देश में जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाये जाने की घोषणा की थी। विगत एक साल में हमने यह भी देखा है कि केंद्र की सरकार ने जनजाति समाज के हित के लिए कई बड़े कदम उठाए हैं। सबसे बड़ा फैसला यह लिया कि जनजातीय समाज से आने वाली श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी को देश का राष्ट्रपति बनाया गया। भाजपा के शीर्ष नेतृत्व एवं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की इच्छा शक्ति के कारण आजादी के 70 साल बाद पहली बार देश के सर्वोच्च पद पर किसी जनजातीय महिला को स्थान मिला है।

वस्तुतः विगत सात दशकों में भारतीय चेतना में यह बात गहरे रूप से बैठा दी गई थी कि जनजातीय समाज पिछड़ा समाज है, इसका कोई योगदान नहीं है, इनके पास कुछ भी गौरवशाली बात नहीं है। ऐसे अनगिनत झूठ थोपे और रोपे गये, जिसके पीछे बहुत बड़ी साजिश भी थी। क्योंकि एक भोले समाज को बरगलाना बहुत सरल है। उसे व्यवस्था के विरुद्ध भड़काना भी कठिन नहीं है। इसलिए यह तथ्य सभी को समझना चाहिए कि वामपंथी इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों ने देशभर में जनजातीय समाज को हीन-दीन बनाने व जताने के लिए हर प्रकार से षडयंत्र पूर्वक प्रयास किये हैं।

जबकि सच्चाई यह है कि भारतीय वांग्मय में हमारे वनवासी बंधुओं का महत्व और उनका योगदान हर कालखंड में रेखांकित किया गया

है। उनकी महिमा, उनकी कुशलता, उन पर सर्व समाज की निर्भरता का बखान हमारे प्राचीन साहित्यों में उपलब्ध है। रामायण, महाभारत ही नहीं वेदों, उपनिषदों की ऋचाएँ भी जनजाति गौरव की गाथा कहते हैं। दरअसल, भारत में जो कुछ भी हमें औद्योगीकरण से पहले दिखाई देता है, या हमने हासिल किया है, उसमें आरण्यक समुदायों का महान योगदान रहा है। वन-क्षेत्रों के आसपास बनाए गए ऐतिहासिक धरोहर भी उन्हीं की बदौलत हैं। कला-शिल्प और कौशल के अनेक विधाओं में हमारी जनजातियां निपुण रही हैं। उनकी अपनी देशज ज्ञान परंपराएँ भी हैं। परंतु देश की प्रारंभिक सरकारों ने इन पक्षों पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। उन्होंने उन्हें उत्पादक समाज की बजाय उपभोक्ता समाज की तरह ट्रीट किया। वर्ष 2014 में केंद्र की सत्ता में मोदी सरकार के आगमन के बाद देश में जनजातीय समाज के प्रति एक संवेदनशील युग की शुरुआत हुई। मोदी सरकार ने जनजातियों के लिए चल रही योजनाओं को और मजबूत किया है। साथ ही जनजातीय संस्कृति एवं परंपराओं को केंद्र में रखकर बड़े कदम उठाये हैं। इसी क्रम में केंद्र सरकार ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। जनजातीय गौरव के तहत सभी सरकारें उनके विविध पक्षों पर चर्चा कर रही हैं तथा अनेक प्रकार की हितकारी योजनाओं को भी क्रियान्वित कर रही हैं।

जनजातीय गौरव दिवस की स्थापना के पीछे का भाव भी यही है कि जनजातीय संस्कृति में विद्यमान प्रेरक प्रसंगों को आम जनमानस भी समझे और उसे आत्मसात करे। आने वाली पीढ़ियां हमारे समस्त जनजातीय बंधुओं के गौरवशाली पक्षों को जान सकें और उन्हें अपनी विचार-यात्रा में स्थान दे सकें । कहना होगा कि स्वाधीनता के अमृत काल में लिया गया यह निर्णय भारतीय लोकतंत्र का सुनहरा अध्याय है।

उल्लेखनीय है भगवान बिरसा मुंडा जनजातीय समाज से निकले एक ऐसे प्रतीक हैं, जिन्होंने अपने समय में उन शक्तियों के सामने अपनी आवाज बुलंद की जिनके सामने आंख उठाने वाले कुचल दिए जाते थे। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध बिरसा मुंडा ने न केवल महाआंदोलन (उलगुलान) किया अपितु अपने लोगों को स्वधर्म की ओर लौटने की बड़ी मुहिम चलाई। उस मुहिम में वे अत्यंत सफल हुए और अंग्रेजों को यह संदेश देने में सफल हुए कि उनके द्वारा संचालित धर्मांतरण का धंधा अब नहीं चल सकता। भगवान बिरसा मुंडा एक सनातनी धर्मयोद्धा थे, जिन्होंने अपने समाज को परधर्मियों के चंगुल से बचाने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। इस अर्थ में वे पहले जनजाति नायक हैं जिन्होंने न केवल स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी बल्कि अपने स्वधर्म की रक्षा का संघर्ष भी छेड़ा। उन्होंने चर्च द्वारा चलाए जा रहे धर्मांतरण से अपने लोगों को बचाने के लिए सद्मार्ग अपनाया और हजारों युवाओं को धर्म की ओर वापस मोड़ा। समय की आवश्यकता के दृष्टिगत उन्होंने लोगों को नशा मुक्ति से लेकर सदाचार के धर्मप्राण मार्ग बताए जिस पर लाखों लोग चल पड़े थे। 15 नवंबर 1875 को छोटानागपुर पठार के अत्यंत गरीब परिवार में जन्मे बिरसा मुंडा ने कम आयु में अंग्रेजों की नीतियों और कार्यशैली का प्रतिकार किया। मात्र 16 साल से 25 साल की कम आयु तक उन्होंने ऐसा आन्दोलन चलाया जो भारतीय संस्कृति की रक्षा में बड़ा अध्याय है। उन्होंने आस्थागत आक्रमण को समझकर लोगों को जागरुक किया। जून 1900 में जेल में उन्हें जहर देकर मार दिया गया। प्रारंभ में मिशनरी स्कूल से पढ़े बिरसा को अंग्रेजी और हिन्दी आती थी। उनके अनेक परिजन धर्म परिवर्तित कर चुके थे, वे भी चाहते तो उस समय अंग्रेजों के संरक्षण में बड़ा ओहदा हासिल कर सकते थे। लेकिन बिरसा मुंडा ने अपनी धर्मचेतना से जागृत होकर मातृभूमि की रक्षा के साथ-साथ अपनी पहचान की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, इसलिए बिरसा मुंडा को लोकजगत ने भगवान का स्थान दिया। वे हमारी समस्त पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

जनजातीय समाज और संस्कृति का इतिहास अनेक गौरवशाली प्रसंगों से भरा पड़ा है। लेकिन कई दशकों तक वामपंथी इतिहासकारों ने एक विशेष परिवार और दल को गौरव का सारा श्रेय देने के लिए अनेक अध्यायों को ढक दिया। ऐसे परिदृष्य में मोदी सरकार ने बिरसा मुंडा के जन्मदिन को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में स्थापित करके उन सभी गौरवशाली पृष्ठों का पुनरुच्चारण किया है। आज हम इस अवसर पर जनजातीय गौरव के विविध पक्षों को सामने ला सकते हैं। यह हमारे लिए स्वाभिमान का पावन पर्व है।

निःसंदेह केंद्र सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार ने जनजातीय गौरव की दिशा में कई ऐसे काम किये हैं, जिसकी चर्चा यहां लंबी हो सकती है लेकिन एक तथ्य जो आज चहुंओर स्वीकार किया जा रहा है कि भाजपा सरकारों ने जनजातीय इतिहास के उन नायकों व नायिकाओं को विमर्श की मुख्य धारा में लाने में सफलता पाई है, जिन्हें अब तक भुलाया जाता रहा। साथ ही प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में जनजातीय प्रतिनिधित्व का भी एक नया अध्याय प्रारंभ हुआ है। आज हमारे लोकतंत्र के सबसे बड़े संवैधानिक पद पर उसी समाज की एक बेटी विराजमान हुई हैं, जिनके योगदान को कई साल तक कमतर आंका जाता रहा। जनजातीय गौरव दिवस की दूसरी वर्षगांठ और राष्ट्रपति बनने के बाद पहले जनजातीय गौरव दिवस पर श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी का शहडोल में आगमन भी मध्यप्रदेश के लिए गौरव का विषय है। ▪

(लेखक मध्यप्रदेश भाजपा के अध्यक्ष एवं खजुराहो लोकसभा से सांसद हैं)

प्रधानमंत्री ने पहले निजी रॉकेट विक्रम-एस के सफल प्रक्षेपण पर बधाई दी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्काईरूट एयरोस्पेस द्वारा विकसित भारत के पहले निजी रॉकेट, विक्रम-सबऑर्बिटल के सफल प्रक्षेपण के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और इन-स्पेस को बधाई दी है।

प्रधानमंत्री ने कहा ''भारत के लिए एक ऐतिहासिक क्षण, स्काईरूट एयरोस्पेस द्वारा विकसित रॉकेट विक्रम-एस ने श्रीहरिकोटा से उड़ान भरी! यह भारत के निजी अंतरिक्ष उद्योग की यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस उपलब्धि को हासिल करने के लिए @isro और @INSPACeIND को बधाई।''

''यह उपलब्धि हमारे युवाओं की अपार प्रतिभा का प्रमाण देती है, जिन्होंने जून 2020 के ऐतिहासिक अंतरिक्ष क्षेत्र के सुधारों का पूरा लाभ उठाया।'' ▪

पीएम किसान
एक परिवर्तनकारी प्रत्यक्ष लाभ अंतरण योजना

पीएम किसान योजना भूमिधारक किसानों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए केंद्र सरकार की एक मुख्य योजना है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से किसान परिवारों के बैंक खातों में प्रति वर्ष 6000 रुपये का वित्तीय लाभ हस्तांतरित किया जाता है। उच्च आर्थिक स्थिति की कुछ श्रेणियों को इस योजना से बाहर रखा गया है।

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 24 फरवरी, 2019 को शुरू की गई यह महत्वाकांक्षी योजना दुनिया की सबसे बड़ी प्रत्यक्ष लाभ अंतरण योजनाओं में से एक है। यह योजना करोड़ों किसानों तक लाभ पहुंचाने में सफल रही है, और खास बात यह है कि इसमें बीच का कोई बिचौलिया शामिल नहीं है। भारत सरकार लाभार्थियों के पंजीकरण और सत्यापन की प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता बनाए रखते हुए, इकठ्ठा राशि जारी करने वाले कार्यक्रमों के दौरान माननीय प्रधानमंत्री द्वारा एक बटन दबाने के कुछ ही मिनटों के भीतर योजना का लाभ हस्तांतरित करने में सफल रही है।

पीएम किसान के तहत किसी भी किश्त अवधि के लिए लाभ जारी करने की संख्या अब 10 करोड़ किसानों को पार कर गई है। शुरुआत में यह संख्या 3.16 करोड़ थी, अर्थात 3 वर्षों में 3 गुना से अधिक की वृद्धि हो चुकी है। पीएम किसान योजना ने 3 से अधिक वर्षों के दौरान करोड़ों जरूरतमंद किसानों को सफलता पूर्वक 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की आर्थिक सहायता प्रदान की है। पीएम किसान एक उभरती हुई योजना है और यह योजना प्रत्येक किसान द्वारा स्व-प्रमाणन पर निर्धारित किसानों की पात्रता के साथ शुरू की गई थी। राज्यों द्वारा किसानों के पंजीकरण एवं सत्यापन के तरीके में समय के साथ सुधार किए गए हैं। इस योजना की सफलता किसान विवरण के सत्यापन और प्रमाणीकरण के लिए समय के साथ शुरू किए गए सुधारों में निहित है। प्राथमिक स्तर की जांच के लिए इसकी स्थापना के बाद से कुछ अनिवार्य क्षेत्र बनाये गए हैं। राज्यों द्वारा पात्र किसानों के डाटा की जांच तथा सत्यापन करने के बाद, इसे पीएम किसान पोर्टल पर अपडेटेड किया जाता है और इसे वित्तीय विवरणों के सत्यापन के लिए पीएफएमएस को भेजा जाता है; इसके बाद आधार के प्रमाणीकरण के लिए यूआई यू डीएआई सर्वर पर; आयकर दाता का स्टेटस चेक करने के लिए इनकम टैक्स सर्वर को; और एनपीसीआई को बैंक खातों की आधार सीडिंग को सत्यापित करने के लिए आगे बढ़ा दिया जाता है। इसने सरकार को मौजूदा और नए लाभार्थियों के निरंतर सत्यापन एवं प्रमाणीकरण में सक्षम बनाया है। पीएम किसान भारत में किसानों को सरकारी सहयोग की प्रकृति में एक बड़ा बदलाव है और नागरिकों तक सीधे पहुंचने के लिए सुशासन तथा डिजिटल सार्वजनिक वस्तुओं के उपयोग के बेहतरीन उदाहरणों में से एक है। सरकार ने पीएम किसान के कार्यान्वयन में डिजिटल तकनीकों के व्यापक उपयोग का लाभ उठाते हुए कृषि या एग्री स्टैक के लिए एक डिजिटल इकोसिस्टम के निर्माण के लिए भी कदम उठाए हैं।

यह कृषि क्षेत्र में एक और डिजिटल सार्वजनिक सार्थक पहल साबित होगी, जिसमें पीएम किसान डेटा का उपयोग राज्यों द्वारा बनाए जाने वाले संघबद्ध किसानों के डेटा बेस के आधार के रूप में किया जाएगा। एग्री स्टैक का निर्माण सरकार को सभी पात्र किसानों के साथ पीएम किसान योजना को जोड़ने और योजना के परिचालन दिशा निर्देशों के अनुसार सभी मौजूदा लाभार्थियों को फिर से सत्यापित करने का अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार मौजूदा लाभार्थियों के भूमि विवरण को राज्यों के भूमि रिकॉर्ड के अनुसार देखा तथा परखा जा रहा है, ताकि भविष्य में राज्यों के डिजिटल भूमि रिकॉर्ड के साथ गतिशील जुड़ा व सुचारू रूप से सुनिश्चित हो सके। योजना में अधिक पारदर्शिता लाने के लिए कृषि मंत्रालय द्वारा किसानों का ई-केवाईसी और आधार पेमेंट ब्रिज (एपीबी) का उपयोग कर भुगतान भी शुरू किया गया है। इस पहल से उन किसानों को बाहर निकालने में भी मदद मिलेगी, जिनकी बीच में ही मृत्यु हो गई हो या फिर उन्होंने अपनी जमीन बेच दी हो, और इस बीच योजना के तहत निर्धारित तरीके से बाहर जाने के मानदंड में प्रवेश कर गए हों।

कई अध्ययन और निष्कर्ष निकल कर सामने आये हैं, जो इशारा करते हैं कि पीएम किसान योजना ने किसानों को कृषि गतिविधियों में उत्पादक निवेश की दिशा में मदद की है। इसके बदले में, गुणक प्रभाव के माध्यम से कृषि क्षेत्र के समग्र सुधार में योगदान दिया गया है। उदाहरण के तौर पर आईसीएआर और अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (आईएफपीआरआई) के सहयोग से किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि इस योजना ने कृषि के लिए आवश्यक वस्तुओं को खरीदने के लिए किसानों की तरलता की कमी को दूर करने में काफी मदद की है। इसके अलावा, छोटे व सीमांत किसानों के लिए इस योजना से उन्हें न केवल कृषि कार्यों के लिए धन की आवश्यकता को पूरा करने में मदद मिली है, बल्कि उनके दैनिक उपभोग, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य आकस्मिक खर्चों के लिए भी सहायता मिली है। सही मायने में, हर चार महीने में और किसानों की जरूरत के समय देश में किसानों तक सीधे पहुंचने में पीएम किसान एक परिवर्तन कारी प्रत्यक्ष लाभ अंतरण योजना साबित हुई है। ▪

पेसा एक्ट-जनजातीय समुदाय का सशक्तिकरण - मुख्यमंत्री

पेसा एक्ट जनजातीय समाज की आर्थिक, सामाजिक उन्नति और उन्हें सशक्त एवं अधिकार सम्पन्न बनाने के लिये लागू किया गया है। यह एक्ट समाज के सभी नागरिकों के हित में है। किसी भी गैर-जनजातीय समाज के नागरिक के खिलाफ नहीं है। पेसा एक्ट अनुसूचित क्षेत्र में गाँव में लागू होगा, यह एक्ट शहर में लागू नहीं होगा। जनजातीय भाई-बहन जो विकास की दौड़ में पीछे रह गये हैं, पेसा एक्ट उन्हें मजबूत बनायेगा।

जल, जंगल और जमीन पर सबका अधिकार होना चाहिये। पेसा एक्ट के नियमों के अनुसार अब पटवारी और वन विभाग के बीट गार्ड को गाँव की जमीन का नक्शा, खसरा, बी-1 नकल वर्ष में एक बार गाँव में लाकर ग्राम सभा में दिखाना होगा, जिससे जमीन के रिकॉर्ड में कोई गड़बड़ी न कर सके। यदि कोई गड़बड़ी पाई जाती है, तो ग्राम सभा को रिकॉर्ड को सुधारने की अनुशंसा करने का अधिकार होगा। पटवारी को ग्राम सभा की बैठक में भूमि संबंधी डिटेल्स पढ़ कर सुनानी होगी।

पेसा एक्ट के नियम में प्रावधान है कि शासन की योजना के किसी भी प्रोजेक्ट में किये जाने वाले सर्वे और भू-अर्जन के लिये ग्राम सभा की अनुमति आवश्यक होगी। किसी भी जनजातीय नागरिक की भूमि छल-कपट और बलपूर्वक अब कोई हड़प नहीं सकेगा। यदि कोई ऐसा करता है, तो ग्राम सभा को उसे वापस करवाने का अधिकार रहेगा। बहला-फुसला कर धर्मान्तरण कराने और फिर जनजातीय समाज की जमीन हड़प लेने की कोशिश नहीं होने दी जायेगी। खनिज की खदान, जिसमें रेत, गिट्टी पत्थर की खदान शामिल है, के ठेके देना है या नहीं, इसका निर्णय ग्राम सभा द्वारा किया जायेगा। खदान पर पहला अधिकार सोसायटी, फिर गाँव की बहन-बेटी और उसके बाद पुरुष का होगा।

सिंचाई तालाबों का प्रबंधन ग्राम सभा करेगी

राज्य सरकार ने गाँव-गाँव में तालाब बनवाये हैं। इन तालाबों का पूरा प्रबंधन ग्राम सभा करेगी। ग्राम सभा तय करेगी कि तालाब में मछली पाले या नहीं। तालाब से जो आमदनी होगी, वह ग्राम सभा को मिलेगी। सौ एकड़ कृषि क्षेत्र में सिंचाई

करने वाले तालाब का प्रबंधन अब सिंचाई विभाग नहीं ग्राम सभा करेगी।

जंगल से मिलने वाली वनोपज पर ग्राम सभा का अधिकार

गाँव की सीमा के जंगल में होने वाली वनोपज- महुआ, हर्रा, बहेरा आदि के संग्रहण और बेचने और भाव तय करने का अधिकार ग्राम सभा के पास होगा। तेन्दूपत्ता को तोड़ने और बेचने का अधिकार ग्राम सभा को दिया गया है। इसमें सरकार का किसी भी प्रकार का दखल नहीं रहेगा। सरकार यह काम तभी करेगी, जब ग्राम सभा चाहेगी।

ग्राम विकास का निर्णय ग्राम सभा लेगी

ग्राम सभा ही ग्राम विकास की कार्य-योजना बनायेगी। ग्राम सभा की अनुमति के बाद ही ग्राम पंचायत को मिलने वाली राशि खर्च की जा सकेगी। काम के लिये गाँव से बाहर जाने वाले श्रमिक को पहले ग्राम सभा में यह बताना होगा कि वह कहाँ काम करने जा रहा है, उस स्थान का पता लिखाना होगा, जिससे कि उस श्रमिक के हितों का ध्यान ग्राम सभा रख सके। यदि कोई बाहर का व्यक्ति गाँव में आता है, तो उसे भी ग्राम सभा को सूचित करना होगा। श्रमिकों को पूरा पारिश्रमिक मिले, इसका ध्यान भी ग्राम सभा रखेगी। जनजातीय क्षेत्रों में केवल लायसेंस धारी साहूकार ही निर्धारित ब्याज दर पर पैसा उधार दे सकेंगे। इसकी जानकारी भी ग्राम सभा को देनी होगी। अधिक ब्याज लेने पर संबंधित साहूकार पर कार्यवाही होगी।

ग्राम सभा की अनुमति के बिना नई शराब की दुकान नहीं खुलेगी

ग्राम सभा की अनुमति के बिना शराब और भांग की नई दुकान नहीं खुल सकेगी। किसी शराब दुकान को हटाने की अनुशंसा ग्राम सभा कर सकेगी। यदि शराब की दुकान के पास स्कूल, अस्पताल और धर्मशाला है, तो ग्राम सभा उस शराब दुकान को वहाँ से हटाने की अनुशंसा सरकार को भेज सकेगी। ग्राम सभा को अवैध रूप से संचालित शराब की दुकानों पर कार्यवाही करवाने का अधिकार रहेगा।

ग्राम सभा सुलझाएगी छोटे झगड़े

गाँव में शांति एवं विवाद निवारण समिति बनेगी और गाँव के छोटे-मोटे झगड़े थाने नहीं जायेंगे, उन्हें अब ग्राम सभा में ही सुलझाया जायेगा। गाँव के किसी व्यक्ति के विरुद्ध थाने में एफआईआर दर्ज करने के पहले पुलिस को ग्राम सभा को बताना होगा।

स्कूल-आँगनवाड़ी के निरीक्षण का अधिकार ग्राम सभा को

पेसा एक्ट ने ग्राम सभा को अधिकार दिया है कि वह आँगनवाड़ी, स्कूल, आश्रम, छात्रावास का निरीक्षण करे और इनके काम ठीक से संचालित कराएँ। ▪

काशी और तमिलनाडु हमारी संस्कृति और सभ्यताओं के कालातीत केंद्र हैं-नरेन्द्र मोदी

''संपूर्ण भारत को समेटे हुए काशी भारत की सांस्कृतिक राजधानी है जबकि तमिलनाडु और तमिल संस्कृति भारत की प्राचीनता और गौरव का केंद्र है''

''अमृत काल में हमारे संकल्प समूचे देश की एकता से पूरे होंगे''

''इस विरासत को सहेजने और समृद्ध करने की जिम्मेदारी 130 करोड़ भारतीयों की है''

काशी में बाबा विश्वनाथ हैं तो तमिलनाडु में भगवान रामेश्वरम का आशीर्वाद है। काशी और तमिलनाडु, दोनों शिवमय हैं, दोनों शक्तिमय हैं। एक स्वयं में काशी है, तो तमिलनाडु में दक्षिण काशी है। 'काशी-कांची' के रूप में दोनों की सप्तपुरियों में अपनी महत्ता है।

काशी और तमिलनाडु दोनों संगीत, साहित्य और कला के अद्भुत स्रोत भी हैं। काशी का तबला और तमिलनाडु का तन्नुमाई। काशी में बनारसी साड़ी मिलेगी तो तमिलनाडु का कांजीवरम सिल्क पूरी दुनिया में फेमस है।

विश्व के सबसे प्राचीन जीवंत शहर काशी की पावन धरती पर काशी-तमिल संगमम में हृदय से स्वागत। हमारे देश में संगमों की बड़ी महिमा, बड़ा महत्व रहा है। नदियों और धाराओं के संगम से लेकर विचारों-विचारधाराओं, ज्ञान-विज्ञान और समाजों-संस्कृतियों के हर संगम को हमने सेलिब्रेट किया है। ये सेलिब्रेशन वास्तव में भारत की विविधताओं और विशेषताओं का सेलिब्रेशन है। और इसलिए काशी-तमिल संगमम अपने आप में विशेष है, अद्वितीय है। हमारे सामने एक ओर पूरे भारत को अपने आप में समेटे हमारी सांस्कृतिक राजधानी काशी है तो दूसरी ओर, भारत की प्राचीनता और गौरव का केंद्र हमारा तमिलनाडु और तमिल संस्कृति है। ये संगम भी गंगा यमुना के संगम जितना ही पवित्र है। ये गंगा-यमुना जितनी ही अनंत संभावनाओं और सामर्थ्य को समेटे हुये है। काशी और तमिलनाडु के सभी लोगों को इस आयोजन के लिए हार्दिक बधाई।

इसमें BHU और IIT मद्रास जैसे महत्वपूर्ण शिक्षा संस्थान भी सहयोग कर रहे हैं।

हमारे यहाँ ऋषियों ने कहा है-
'एको अहम् बहु स्याम्'!

अर्थात्, एक ही चेतना, अलग-अलग रूपों में प्रकट होती है। काशी और तमिलनाडु के context में इस फिलॉसफी को हम साक्षात देख सकते हैं। काशी और तमिलनाडु, दोनों ही संस्कृति और सभ्यता के timeless centres हैं। दोनों क्षेत्र, संस्कृत और तमिल जैसी विश्व की सबसे प्राचीन भाषाओं के केंद्र हैं। काशी में बाबा विश्वनाथ हैं तो तमिलनाडु में भगवान रामेश्वरम का आशीर्वाद है। काशी और तमिलनाडु, दोनों शिवमय हैं, दोनों शक्तिमय हैं। एक स्वयं में काशी है, तो तमिलनाडु में दक्षिण काशी है। 'काशी-कांची' के रूप में दोनों की सप्तपुरियों में अपनी महत्ता है। काशी और तमिलनाडु दोनों संगीत, साहित्य और कला के अद्भुत स्रोत भी हैं। काशी का तबला और तमिलनाडु का तन्नुमाई। काशी में बनारसी साड़ी मिलेगी तो तमिलनाडु का कांजीवरम सिल्क पूरी दुनिया में फेमस है। दोनों भारतीय आध्यात्म के सबसे महान आचार्यों की जन्मभूमि और कर्मभूमि हैं। काशी भक्त तुलसी की धरती तो तमिलनाडु संत तिरुवल्लवर की भक्ति-भूमि। आप जीवन के हर क्षेत्र में, लाइफ के हर dimension में काशी और तमिलनाडु के अलग-अलग रंगों में इस एक जैसी ऊर्जा के दर्शन कर सकते हैं। आज भी तमिल विवाह

परंपरा में काशी यात्रा का जिक्र होता है। यानी, तमिल युवाओं के जीवन की नई यात्रा से काशी यात्रा को जोड़ा जाता है। ये है तमिल दिलों में काशी के लिए अविनाशी प्रेम, जो न अतीत में कभी मिटा, न भविष्य में कभी मिटेगा। यही 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की वो परंपरा है, जिसे हमारे पूर्वजों ने जिया था, और आज ये काशी-तमिल संगमम फिर से उसके गौरव को आगे बढ़ा रहा है।

काशी के निर्माण में, काशी के विकास में भी तमिलनाडु ने अभूतपूर्व योगदान दिया है। तमिलनाडु में जन्में डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन बीएचयू के पूर्व कुलपति थे। उनके योगदान को आज भी बीएचयू याद करता है। श्री राजेश्वर शास्त्री जैसे तमिल मूल के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान काशी में रहे। उन्होंने रामघाट पर सांगवेद विद्यालय की स्थापना की। ऐसे ही, श्री पट्टाभिराम शास्त्री जी, जो कि हनुमान घाट में रहते थे, उन्हें भी काशी के लोग याद करते हैं। आप काशी भ्रमण करेंगे, तो देखेंगे कि हरिश्चन्द्र घाट पर ''काशी कामकोटिश्वर पंचायतन मन्दिर'' है, जो कि एक तमिलियन मन्दिर है। केदार घाट पर भी 200 वर्ष पुराना कुमारस्वामी मठ है तथा मार्कण्डेय आश्रम है। यहाँ हनुमान घाट और केदार घाट के आस-पास बड़ी संख्या में तमिलनाडु के लोग रहते हैं, जिन्होंने पीढ़ियों से काशी के लिए अभूतपूर्व योगदान दिये हैं। तमिलनाडु की एक और महान विभूति, महान कवि श्री सुब्रमण्यम भारती जी, जो कि महान स्वतन्त्रता सेनानी भी थे, वो भी कितने समय तक काशी में रहे।

यहीं मिशन कॉलेज और जयनारायण कॉलेज में उन्होंने पढ़ाई की थी। काशी से वो ऐसे जुड़े कि काशी उनका हिस्सा बन गई। कहते हैं कि अपनी पॉपुलर मूछें भी उन्होंने यहीं रखीं थीं। ऐसे कितने ही व्यक्तित्वों ने, कितनी ही परम्पराओं ने, कितनी ही आस्थाओं ने काशी और तमिलनाडु को राष्ट्रीय एकता के सूत्र से जोड़कर रखा है। अब BHU ने सुब्रमण्यम भारती के नाम से चेयर की स्थापना करके, अपना गौरव और बढ़ाया है।

काशी-तमिल संगमम का ये आयोजन तब हो रहा है, जब भारत ने अपनी आजादी के अमृतकाल में प्रवेश किया है। अमृतकाल में हमारे संकल्प पूरे देश की एकता और एकजुट प्रयासों से पूरे होंगे। भारत वो राष्ट्र है जिसने हजारों वर्षों से

'सं वो मनांसि जानताम्' के मंत्र से, 'एक दूसरे के मनों को जानते हुये', सम्मान करते हुये स्वाभाविक सांस्कृतिक एकता को जिया है। हमारे देश में सुबह उठकर 'सौराष्ट्रे सोमनाथम्' से लेकर 'सेतुबंधे तु रामेशम्' तक 12 ज्योतिर्लिंगों के स्मरण की परंपरा है। हम देश की आध्यात्मिक एकता को याद करके हमारा दिन शुरू करते हैं। हम स्नान करते समय, पूजा करते समय भी मंत्र पढ़ते हैं-

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जले अस्मिन् सन्निधिम् कुरु॥

अर्थात्, गंगा, यमुना से लेकर गोदावरी और कावेरी तक, सभी नदियां हमारे जल में निवास करें। यानी, हम पूरे भारत की नदियों में स्नान करने की भावना करते हैं। हमें आजादी के बाद हजारों वर्षों की इस परंपरा को, इस विरासत को मजबूत करना था। इसे देश का एकता सूत्र बनाना था। लेकिन, दुर्भाग्य से, इसके लिए बहुत प्रयास नहीं किए गए। काशी-तमिल संगमम इस संकल्प के लिए एक प्लेटफॉर्म बनेगा। ये हमें हमारे इस कर्तव्यों का बोध कराएगा, और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए ऊर्जा देगा।

भारत का स्वरूप क्या है, शरीर क्या है, ये विष्णु पुराण का एक श्लोक हमें बताता है, जो कहता है-

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

अर्थात्, भारत वो जो हिमालय से हिन्द महासागर तक की सभी विविधताओं और विशिष्टताओं को समेटे हुये है। और उसकी हर संतान भारतीय है। भारत की इन जड़ों को, इन रूट्स को अगर हमें अनुभव करना है, तो हम देख सकते हैं कि उत्तर और दक्षिण हजारों किमी दूर होते हुये भी कितने करीब हैं। संगम तमिल साहित्य में हजारों मील दूर बहती गंगा का गौरव गान किया गया था, तमिल ग्रंथ कलितोगै में वाराणसी के लोगों की प्रशंसा की गई है। हमारे पूर्वजों ने तिरुप्पुगल के जरिए भगवान मुरुगा और काशी की महिमा एक साथ गाई थी, दक्षिण का काशी कहे जाने वाले तेनकासी की स्थापना की थी।

ये भौतिक दूरियां और ये भाषा-भेद को तोड़ने वाला अपनत्व ही था, जो स्वामी कुमरगुरुपर तमिलनाडु से काशी आए और इसे अपनी कर्मभूमि बनाया था। धर्मापुरम आधीनम के स्वामी कुमरगुरुपर ने यहां केदार घाट पर केदारेश्वर मंदिर का निर्माण कराया था। बाद में उनके शिष्यों ने तंजावुर जिले में कावेरी नदी के किनारे काशी विश्वनाथ मंदिर की स्थापना की थी। मनोन्मणियम सुंदरनार जी ने तमिलनाडु के राज्य गीत 'तमिल ताई वाड्तु' को लिखा है। कहा जाता है कि उनके गुरू कोडगा-नल्लूर सुंदरर स्वामीगल जी ने काशी के मणिकर्णिका घाट पर काफी समय बिताया था। खुद मनोन्मणियम सुंदरनार जी पर भी काशी का बहुत प्रभाव था। तमिलनाडु में जन्म लेने वाले रामानुजाचार्य जैसे संत भी हजारों मील चलकर काशी से कश्मीर तक की यात्रा करते थे। आज भी उनके ज्ञान को प्रमाण माना जाता है। सी राजगोपालाचारी जी की लिखी रामायण और महाभारत से, दक्षिण से उत्तर तक, पूरा देश आज भी inspiration लेता है। एक टीचर ने मुझे कहा था कि तुमने रामायण और महाभारत तो पढ़ ली होगी, लेकिन अगर इसे गहराई से समझना है तो जब भी तुम्हे मौका मिले तुम राजाजी ने जो रामायण महाभारत लिखे, वो पढ़ोगे तो तुम्हे कुछ समझ आएगा। मेरा अनुभव है, रामानुजाचार्य और शंकराचार्य से लेकर राजाजी और सर्वपल्ली राधाकृष्णन तक, दक्षिण के विद्वानों के भारतीय दर्शन को समझे बिना हम भारत को नहीं जान सकते, ये महापुरुष हैं, उनको हमें समझना होगा।

भारत ने अपनी 'विरासत पर गर्व' का पंच-प्राण सामने रखा है। दुनिया में किसी भी देश के पास कोई प्राचीन विरासत होती है, तो वो देश उस पर गर्व करता है। उसे गर्व से दुनिया के सामने प्रमोट करता है। हम Egypt के पिरामिड से लेकर इटली के कोलोसियम और पीसा की मीनार तक, ऐसे कितने ही उदाहरण देख सकते हैं। हमारे पास भी दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा तमिल है।

आज तक ये भाषा उतनी ही पॉपुलर है, उतनी ही alive है। दुनिया में लोगों को पता चलता है कि विश्व की oldest language भारत में है, तो उन्हें आश्चर्य होता है। लेकिन हम उसके गौरवगान में पीछे रहते हैं। ये हम 130 करोड़ देशवासियों की जिम्मेदारी है कि हमें तमिल की इस विरासत को बचाना भी है, उसे समृद्ध भी करना है। अगर हम तमिल को भुलाएंगे तो भी देश का नुकसान होगा, और तमिल को बंधनों में बांधकर रखेंगे तो भी इसका नुकसान है। हमें याद रखना है- हम भाषा भेद को दूर करें, भावनात्मक एकता कायम करें।

काशी-तमिल संगमम, ये शब्दों से ज्यादा अनुभव का विषय है। अपनी इस काशी यात्रा के दौरान आप उनकी मेमरीज से जुड़ने वाले हैं, जो आपके जीवन की पूंजी बन जाएंगे। काशीवासी आपके सत्कार में कोई कमी नहीं छोड़ेंगे। तमिलनाडु और दक्षिण के दूसरे राज्यों में भी इस तरह के आयोजन हों, देश के दूसरे हिस्सों से लोग वहाँ जाएँ, भारत को जियें, भारत को जानें। काशी-तमिल संगमम इससे जो अमृत निकले, उसे युवा के लिए रिसर्च और अनुसंधान के जरिए आगे बढ़ाएँ। ये बीज आगे राष्ट्रीय एकता का वटवृक्ष बने। राष्ट्र हित ही हमारा हित है -**'नाडु नलने नमदु नलन'।**

ये मंत्र हमारे देशवासी का जीवनमंत्र बनना चाहिए। ▪

परिवारवाद, भाई-भतीजावाद नहीं- देश सबसे बड़ा

सबसे पहले मैं असम की उस महान धरती को प्रणाम करता हूँ, जिसने मां भारती को लचित बोरफूकन जैसे अदम्य वीर दिये हैं। पूरे देश में वीर लचित बोरफूकन की 400वीं जन्म जयंती मनाई गई।

असम का इतिहास, अपने आप में भारत की यात्रा और संस्कृति की एक अनमोल विरासत है। हम अलग-अलग विचारों-विचारधाराओं को, समाजों-संस्कृतियों को, आस्थाओं-परंपरा को एक साथ जोड़ते हैं।

आहोम राज में सबको साथ लेकर बने शिवसागर शिव दोउल, देवी दोउल और विष्णु दोउल आज भी इसके उदाहरण हैं। लेकिन, अगर कोई तलवार के जोर से हमें झुकाना चाहता है, हमारी शाश्वत पहचान को बदलना चाहता है, तो हमें उसका जवाब देना भी आता है। असम और पूर्वोत्तर की धरती इसकी गवाह रही है।

हमें वीर लचित की 400वीं जन्म जयंती मनाने का सौभाग्य उस कालखंड में मिला है, जब देश अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। ये ऐतिहासिक अवसर, असम के इतिहास का एक गौरवशाली अध्याय है। मैं भारत की अमर संस्कृति, अमर शौर्य और अमर अस्तित्व के इस पर्व पर इस महान परंपरा को प्रणाम करता हूं। आज देश गुलामी की मानसिकता को छोड़ अपनी विरासत पर गर्व करने के भाव से भरा हुआ है। आज भारत न सिर्फ अपनी सांस्कृतिक विविधता को सेलिब्रेट कर रहा है, बल्कि अपनी संस्कृति के ऐतिहासिक नायक-नायिकाओं को गर्व से याद भी कर रहा है। लचित बोरफूकन जैसी महान विभूतियाँ, भारत माँ की अमर सन्तानें, इस अमृतकाल के संकल्पों को पूरा करने के लिए हमारी अविरत प्रेरणा हैं, निरंतर प्रेरणा हैं। उनके जीवन से हमें अपनी पहचान का, अपने आत्मसम्मान का बोध भी होता है, और इस राष्ट्र के लिए समर्पित होने की ऊर्जा भी मिलती है। मैं इस पुण्य अवसर पर लचित बोरफूकन के महान शौर्य और पराक्रम को नमन करता हूं।

मानव इतिहास के हजारों वर्षों में दुनिया की कितनी ही सभ्यताओं ने जन्म लिया। उन्होंने सफलता के बड़े-बड़े शिखरों को छुआ। ऐसी सभ्यताएं भी हुईं, जिन्हें देखकर लगता था कि वो अमर हैं, अपराजेय हैं। लेकिन, समय की परीक्षा ने बहुत सारी सभ्यताओं को परास्त कर दिया, चूर-चूर कर दिया। आज दुनिया उनके अवशेषों से इतिहास का आकलन करती है। लेकिन, दूसरी ओर ये हमारा महान भारत है। हमने अतीत के उन अप्रत्याशित झंझावातों का सामना किया। हमारे पूर्वजों ने विदेशों से आए आततायियों के अकल्पनीय आतंक को झेला, सहन किया। लेकिन, भारत आज भी अपनी उसी चेतना, उसी ऊर्जा और उसी सांस्कृतिक गौरव के साथ जीवंत है, अमरत्व के साथ जीवंत है। ऐसा इसलिए, क्योंकि भारत में जब भी कोई मुश्किल दौर आया, कोई चुनौती खड़ी हुई, तो उसका मुकाबला करने के लिए कोई न कोई विभूति अवतरित हुई है। हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान को बचाने के लिए हर कालखंड में संत आए, मनीषी आए। भारत को तलवार के जोर से कुचलने का मंसूबा पाले आक्रमणकारियों का माँ भारती की कोख से जन्मे वीरों ने डटकर मुकाबला किया। लचित बोरफूकन भी देश के ऐसे ही वीर योद्धा थे। उन्होंने दिखा दिया कि कट्टरता और आतंक की हर आग का अंत हो जाता है, लेकिन भारत की अमर-ज्योति, जीवन-ज्योति अमर बनी रहती है।

असम का इतिहास, अपने आप में भारत की यात्रा और संस्कृति की एक अनमोल विरासत है। हम अलग-अलग विचारों-विचारधाराओं को, समाजों-संस्कृतियों को, आस्थाओं-परंपरा को एक साथ जोड़ते हैं। आहोम राज में सबको साथ लेकर बने शिवसागर शिव दोउल, देवी दोउल और विष्णु दोउल आज भी इसके उदाहरण हैं। लेकिन, अगर कोई तलवार के जोर से हमें झुकाना चाहता है, हमारी शाश्वत पहचान को बदलना चाहता है, तो हमें उसका जवाब देना भी आता है। असम और पूर्वोत्तर की धरती इसकी गवाह रही है। असम के लोगों ने अनेकों बार तुर्कों, अफगानों, मुगलों के आक्रमणों का मुकाबला किया, और आक्रमणकारियों को पीछे खदेड़ा। अपनी पूरी ताकत झोंककर मुगलों ने गुवाहाटी पर कब्जा कर

वीर लचित बोरफूकन की शौर्य गाथा, ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए असम सरकार ने कुछ ही दिन पहले एक म्यूजियम बनाने का ऐलान किया है। सरकार ने असम के ऐतिहासिक नायकों के सम्मान में एक मेमोरियल तैयार करने की भी योजना बनाई है। निश्चय ही ऐसे प्रयासों से हमारी युवा और आने वाली पीढ़ियों को भारत की महान संस्कृति को ज्यादा गहराई से समझने का अवसर मिलेगा।

लिया था। लेकिन, फिर एक बार लचित बोरफूकन जैसे योद्धा आए, और अत्याचारी मुगल सल्तनत के हाथ से गुवाहाटी को आजाद करवा लिया। औरंगजेब ने हार की उस कालिख को मिटाने की हर मुमकिन कोशिश की, लेकिन वो हमेशा-हमेशा असफल ही रहा। वीर लचित बोरफूकन ने जो वीरता दिखाई, सराईघाट पर जो साहस दिखाया, वो मातृभूमि के लिए अगाध प्रेम की पराकाष्ठा भी थी। असम ने अपने साम्राज्य के एक-एक नागरिक को जरूरत पड़ने पर अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए तैयार किया था। उनका एक-एक युवा अपनी माटी का सिपाही था। लचित बोरफूकन जैसा साहस, उनके जैसी निडरता, यही तो असम की पहचान है। और इसीलिए तो हम आज भी कहते हैं- हुनिसाने लोराहोत, लासितोर कोथा मुगोल बिजोयी बीर, इतिहाखे लिखा अर्थात्, बच्चों तुमने सुनी है लचित की गाथा? मुगल-विजयी वीर का नाम इतिहास में दर्ज है।

हमारे हजारों वर्षों की जीवंतता, हमारे पराक्रम की निरंतरता, यही भारत का इतिहास है। लेकिन, हमें सदियों से ये बताने की कोशिश की गई कि हम हमेशा लुटने-पिटने वाले, हारने वाले लोग रहे हैं। भारत का इतिहास, सिर्फ गुलामी का इतिहास नहीं है। भारत का इतिहास योद्धाओं का इतिहास है, विजय का इतिहास है। भारत का इतिहास, अत्याचारियों के विरुद्ध अभूतपूर्व शौर्य और पराक्रम दिखाने का इतिहास है। भारत का इतिहास जय का है, भारत का इतिहास जंग का है, भारत का इतिहास त्याग का है, तप का है, भारत का इतिहास वीरता का है, बलिदान का है, महान परंपरा का है। लेकिन दुर्भाग्य से, हमें आजादी के बाद भी वही इतिहास पढ़ाया जाता रहा, जो गुलामी के कालखंड में साजिशन रचा गया था। आजादी के बाद जरूरत थी, हमें गुलाम बनाने वाले विदेशियों के एजेंडे को बदला जाए, लेकिन ऐसा नहीं किया गया। देश के हर कोने में मां भारती के वीर, बेटे-बेटियों ने कैसे आतताइयों का मुकाबला किया, अपना जीवन समर्पित कर दिया, इस इतिहास को जानबूझकर दबा दिया गया। क्या लचित बोरफूकन का शौर्य मायने नहीं रखता क्या? क्या देश की संस्कृति के लिए, पहचान के लिए मुगलों के खिलाफ युद्ध में लड़ने वाले असम के हजारों लोगों का बलिदान कोई मायने नहीं रखता? हम सब जानते हैं कि अत्याचारों से भरे लंबे कालखंड में अत्याचारियों पर विजय की भी हजारों गाथाएं हैं, जय की गाथाएं हैं, त्याग की गाथाएं हैं, तर्पण की गाथाएं हैं। इन्हें इतिहास की मुख्यधारा में जगह ना देकर पहले जो गलती हुई, अब देश उसे सुधार रहा है। दिल्ली में हो रहा ये आयोजन इसी का प्रतिबिंब है।

वीर लचित बोरफूकन की शौर्य गाथा, ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए असम सरकार ने कुछ ही दिन पहले एक म्यूजियम बनाने का ऐलान किया है। सरकार ने असम के ऐतिहासिक नायकों के सम्मान में एक मेमोरियल तैयार करने की भी योजना बनाई है। निश्चय ही ऐसे प्रयासों से हमारी युवा और आने वाली पीढ़ियों को भारत की महान संस्कृति को ज्यादा गहराई से समझने का अवसर मिलेगा। असम सरकार ने अपने विजन से जन-जन को जोड़ने के लिए एक थीम सॉन्ग भी लॉन्च किया है। इसके बोल भी बहुत अद्भुत हैं। ओखोमोर आकाखोर, ओखोमोर आकाखोर, भूटातोरा तुमि, हाहाहोर होकोटि, पोरिभाखा तुमि, यानि असम के आकाश का ध्रुवतारा तुम हो। साहस शक्ति की परिभाषा तुम हो। वाकई, वीर लचित बोरफूकन का जीवन हमें देश के सामने उपस्थित कई वर्तमान चुनौतियों का डटकर सामना करने की प्रेरणा देता है। उनका जीवन हमें प्रेरणा देता है कि- हम व्यक्तिगत स्वार्थों को नहीं, देशहित को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। उनका जीवन हमें प्रेरणा देता है कि- हमारे लिए परिवारवाद, भाई-भतीजावाद, नहीं बल्कि देश सबसे बड़ा होना चाहिए।

कहते हैं कि राष्ट्र रक्षा के लिए अपनी जिम्मेदारी न निभा पाने पर वीर लचित ने मौमाई को भी सजा दी थी। उन्होंने कहा था- ''देखोत कोई, मोमाई डांगोर नोहोय'' यानी, मौमाई देश से बड़ा नहीं होता। यानी, कह सकते हैं कि कोई भी व्यक्ति, कोई भी रिश्ता, देश से बड़ा नहीं होता। आप कल्पना करिए, जब वीर लचित की सेना ने ये सुना होगा कि उनका सेनापति देश को कितनी प्राथमिकता देता है, तो उस छोटे से सैनिक का हौसला कितना बढ़ गया होगा। और ये हौसला ही होता है जो जीत का आधार होता है। आज का नया भारत, राष्ट्र प्रथम, नेशन फर्स्ट के इसी आदर्श को लेकर आगे बढ़ रहा है।

जब कोई राष्ट्र अपने सही अतीत को जानता है, सही इतिहास को जानता है, तो ही वो अपने अनुभवों से सीखता भी है। उसे भविष्य के लिए सही दिशा मिलती है। हमारी ये जिम्मेदारी है कि हम अपने इतिहास की दृष्टि को केवल कुछ दशकों या कुछ सदियों तक सीमित न रखें। असम के प्रसिद्ध गीतकार द्वारा रचित और भारत रत्न भूपेन हजारिका द्वारा स्वरबद्ध एक गीत की दो पंक्तियां भी दोहराना चाहूंगा। इसमें कहा गया है-

मोई लासिटे कोइसु, मोई लासिटे कोइसु, मुर होहोनाई नाम लुवा, लुइत पोरिया डेका डॉल।

यानि, मैं लचित बोल रहा हूं, ब्रह्मपुत्र किनारे के युवाओं, मेरा बार-बार नाम लो। निरंतर स्मरण करके ही हम आने वाली पीढ़ियों को सही इतिहास से परिचित करा सकते हैं। लचित बोरफूकन जी के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी बहुत ही प्रभावित करने वाली, शिक्षा देने वाली थी। साथ ही उनकी शौर्य गाथा पर लिखी किताब के विमोचन का भी सौभाग्य मिला। इस तरह के आयोजनों के जरिए ही देश के सही इतिहास और ऐतिहासिक घटनाओं से जन-जन को जोड़ा जा सकता है।

जब मैं देख रहा था तो मेरे मन में एक विचार आया असम के और देश के कलाकारों को जोड़कर के हम इस पर सोच सकते है जैसे छत्रपति शिवाजी महाराज पर एक एक जाणता राजा नाट्य प्रयोग है। करीब 250-300 कलाकार, हाथी, घोड़े सारे कार्यक्रम में होते हैं और बड़ा प्रभावी कार्यक्रम है। क्या हम लचित बोरफूकन जी के जीवन पर ऐसा ही एक नाट्य प्रयोग तैयार करें और हिन्दुस्तान के कोने-कोने में लें जाए। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का जो संकल्प हैं ना उसमें ये सारी चीजें बहुत बड़ी ताकत देते है। हमें भारत को विकसित भारत बनाना है, पूर्वोत्तर को भारत के सामर्थ्य का केंद्र बिंदु बनाना है। वीर लचित बोरफूकन की 400वीं जन्म जयंती हमारे इन संकल्पों को मजबूत करेगी, और देश अपने लक्ष्यों को हासिल करेगा। ▪

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 71,000 नियुक्ति पत्र प्रदान किए

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने रोजगार मेले के तहत नए भर्ती किए गए उम्मीदवारों को लगभग 71,000 नियुक्ति पत्र प्रदान किए। रोजगार मेले से रोजगार सृजन को आगे बढ़ाने और युवाओं को उनके सशक्तिकरण के साथ-साथ प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय विकास में भागीदारी करने के लिए सार्थक अवसर प्रदान करने में एक उत्प्रेरक के रूप में काम करने की उम्मीद है। इससे पहले रोजगार मेले के तहत अक्टूबर में 75,000 से अधिक नए भर्ती किए गए उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र सौंपे गए थे।

देश के 45 से अधिक शहरों में 71,000 से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए, जिसके परिणाम स्वरूप इतने परिवारों के लिए खुशी का नया युग आएगा। इससे पहले धनतेरस के दिन केंद्र सरकार ने युवाओं को 75,000 नियुक्ति पत्र सौंपे थे। ''यह रोजगार मेला इस बात का प्रमाण है कि केंद्र सरकार देश के युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए एक मिशन मोड में काम कर रही है।''

केंद्र शासित प्रदेश और राज्य भी समय-समय पर ऐसे रोजगार मेलों का आयोजन करते रहेंगे। हजारों युवाओं को संबंधित सरकारों द्वारा महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, अंडमान और निकोबार, लक्षद्वीप, दमन और दीव, दादरा और नगर हवेली और चंडीगढ़ में नियुक्ति पत्र दिए गए। गोवा और त्रिपुरा भी कुछ दिनों में इसी तरह के रोजगार मेले का आयोजन करेंगे। इस शानदार उपलब्धि के लिए डबल इंजन की सरकारों को श्रेय जाता है। भारत के युवाओं को सशक्त बनाने के लिए इस तरह के रोजगार मेले समय-समय पर आयोजित किए जाएंगे।

युवा देश की सबसे बड़ी ताकत हैं। केंद्र सरकार राष्ट्र निर्माण में युवाओं की प्रतिभा और ऊर्जा का सदुपयोग करने के कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। नए लोक सेवक इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को एक बहुत ही विशिष्ट समयावधि यानी अमृत काल में संभाल रहे हैं। अमृत काल में देश को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प में नए लोक सेवकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। केंद्र सरकार के प्रतिनिधियों के रूप में उन्हें अपनी भूमिका और कर्तव्यों को व्यापक रूप से समझ लेना चाहिए। अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए क्षमता निर्माण पर भी लगातार ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

देश के 45 से अधिक शहरों में 71,000 से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए, जिसके परिणाम स्वरूप इतने परिवारों के लिए खुशी का नया युग आएगा। इससे पहले धनतेरस के दिन केंद्र सरकार ने युवाओं को 75,000 नियुक्ति पत्र सौंपे थे।

"यह रोजगार मेला इस बात का प्रमाण है कि केंद्र सरकार देश के युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए एक मिशन मोड में काम कर रही है।"

कर्मयोगी भारत प्रौद्योगिकी मंच सरकारी अधिकारियों के लिए कई ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ कर रहा है। सरकारी कर्मचारियों के लिए तैयार किए गए एक विशेष पाठ्यक्रम जिसे कर्मयोगी प्रारंभ कहा जाता है, नए भर्ती किए गए उम्मीदवारों को इसका अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। यह उनके कौशल विकास का एक बड़ा स्रोत सिद्ध होगा और साथ ही आने वाले दिनों में भी उन्हें लाभान्वित करेगा।

महामारी और युद्ध के कारण युवाओं के लिए वैश्विक स्तर पर पैदा हुए संकट के कठिन समय में भी दुनिया भर के विशेषज्ञ भारत के विकास पथ के बारे में आशान्वित रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, भारत सेवा क्षेत्र में एक बड़ी ताकत बन गया है और जल्द ही यह दुनिया का विनिर्माण केंद्र भी बन जाएगा। पीएलआई जैसी बड़ी पहल जहां इसमें बड़ी भूमिका निभाएगी, वहीं इसमें देश के युवाओं का और भी महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। पीएलआई योजना से 60 लाख रोजगार सृजित होने की संभावना है। मेक इन इंडिया, वोकल फॉर लोकल और स्थानीय को वैश्विक स्तर पर ले जाने जैसे अभियान रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर पैदा कर रहे हैं। ''सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में नई नौकरियों की संभावनाएं लगातार बढ़ रही हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि ये अवसर युवाओं के लिए उनके अपने शहरों और गांवों में ही उभर रहे हैं। इससे युवाओं की पलायन की मजबूरी कम हुई है और वे अपने क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में समर्थ हो रहे हैं।''

स्टार्टअप्स से लेकर स्वरोजगार और अंतरिक्ष से लेकर ड्रोन तक के क्षेत्रों में किए गए उपायों द्वारा सृजित नए अवसरों में 80,000 स्टार्टअप्स युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान कर रहे हैं। स्वामित्व योजना और रक्षा क्षेत्र में दवा, कीटनाशक और मैपिंग में ड्रोन का तेजी से उपयोग किया जा रहा है। इससे युवाओं के लिए नए रोजगार सृजित हो रहे हैं। कुछ दिनों पहले भारत में निजी क्षेत्र द्वारा भारत के पहले अंतरिक्ष रॉकेट का प्रक्षेपण, अंतरिक्ष क्षेत्र को खोलने के निर्णय से भारत के युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा हुए। 35 करोड़ से अधिक मुद्रा ऋणों को स्वीकृत किया गया है। अनुसंधान और नवाचार को आगे बढ़ाने के परिणामस्वरूप देश में रोजगार के अवसरों

में वृद्धि हुई है। नए भर्ती किए गए उम्मीदवारों को प्रस्तुत किए गए नए अवसरों का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। ये नियुक्ति पत्र केवल प्रवेश बिंदु हैं जो उनके लिए विकास की दुनिया को खोलते हैं। नए भर्ती किये गये उम्मीदवारों को अपने वरिष्ठों से सीखकर एक योग्य उम्मीदवार बनना चाहिए। किसी को भी आत्मा के भीतर के छात्र को नष्ट नहीं होने देना चाहिए। कुछ नया सीखने का मौका नहीं छोड़ना चाहिए। नये भर्ती किए गए उम्मीदवार ऑनलाइन प्रशिक्षण के अपने अनुभव को साझा करें और कर्मयोगी भारत मंच को बेहतर बनाने के लिए रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करें। ''हम पहले से ही भारत को एक विकसित देश में बदलने की राह पर अग्रसर हैं। आइए, हम इस दृष्टि के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लें।''

रोजगार मेला रोजगार सृजन के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता देने की प्रधानमंत्री जी की प्रतिबद्धता को पूरा करने की दिशा में एक कदम है। रोजगार मेले से आगे रोजगार का सृजन करने और युवाओं को उनके सशक्तिकरण तथा प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय विकास में भागीदारी करने के लिए सार्थक अवसर उपलब्ध कराने के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में काम करने की उम्मीद है। इससे पहले रोजगार मेले के तहत अक्टूबर में 75,000 से अधिक नए भर्ती किए गए उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र सौंपे गए थे।

नए भर्ती किए गए उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्रों की भौतिक प्रतियां देश के 45 स्थानों पर (गुजरात और हिमाचल प्रदेश को छोड़कर) सौंपी गयीं। पहले भर्ती किए गए पदों की श्रेणियों के अलावा शिक्षक, व्याख्याता, नर्स, नर्सिंग ऑफिसर, डॉक्टर, फार्मासिस्ट, रेडियोग्राफर और अन्य तकनीकी तथा पैरामेडिकल पदों पर भी भर्ती की जा रही हैं। गृह मंत्रालय द्वारा भी विभिन्न केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) में बड़ी संख्या में पदों की भर्ती की जा रही हैं।

प्रधानमंत्री ने कर्मयोगी प्रारंभ मॉड्यूल का शुभारंभ किया। यह मॉड्यूल विभिन्न सरकारी विभागों में सभी नए भर्ती किए गए उम्मीदवारों के लिए एक ऑनलाइन उन्मुखीकरण (ओरिएंटेशन) पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम में सरकारी कर्मचारियों के लिए आचार संहिता, कार्यस्थल में नैतिकता और अखंडता, मानव संसाधन नीतियां तथा अन्य लाभ और भत्ते शामिल होंगे जो उन्हें नीतियों के अनुकूल बनने और नई भूमिकाओं में आसानी से बदलाव करने में मदद करेंगे। उन्हें अपने ज्ञान, कौशल और क्षमताओं को बढ़ाने के लिए igotkarmayogi.gov.in प्लेटफॉर्म पर अन्य पाठ्यक्रमों का पता लगाने का भी अवसर प्राप्त होगा। ▪

वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता के बीच भारत विश्व अर्थव्यवस्था में एक चमकता हुआ स्थान है

दुनिया आज विकास को गति देने और रास्ता दिखाने के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था की ओर देख रही है। 'दुनिया भारत के मजबूत आर्थिक बुनियादी सिद्धांतों, जनसांख्यिकीय लाभांश, एक बेजोड़ उपभोक्ता आधार, कौशल और भारत के युवाओं की प्रबंधन क्षमताओं को पहचानती है।'

वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता के बीच भारत विश्व अर्थव्यवस्था में एक चमकते हुए स्थान पर है। भारत ने प्रदर्शित किया है कि दुनिया में मौजूदा अस्थिरता, अनिश्चितता, जटिलता और अस्पष्टता के बावजूद, हमारे देश के पास नेतृत्व, क्षमताएं और कौशल है जो आर्थिक सुधार को नेविगेट करने के लिए आवश्यक है। "महामारी की चुनौतियों के बावजूद, भारतीय अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए बहुत ही उचित उपाय किए गए थे जहाँ व्यापक आर्थिक बुनियादी बातों पर एक मजबूत ध्यान केंद्रित किया गया था। हमारी सरकार ने समाज के सभी वर्गों के समावेशी कल्याण पर ध्यान केंद्रित किया है।"

दुनिया आज विकास को गति देने और रास्ता दिखाने के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था की ओर देख रही है। 'दुनिया भारत के मजबूत आर्थिक बुनियादी सिद्धांतों, जनसांख्यिकीय लाभांश, एक बेजोड़ उपभोक्ता आधार, कौशल और भारत के युवाओं की प्रबंधन क्षमताओं को पहचानती है।' जी-20 प्रेसीडेंसी के लिए हमारी थीम 'वसुधैव कुटुंबकम' है। भारत का मानना है कि विश्व एक परिवार है। भारत पूरे-पूरे विश्व की परवाह करता है और इसी संदर्भ में हमने अपने प्रेसीडेंसी पद की थीम एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य रखी है। जबकि दुनिया उपभोग आधारित विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, भारत स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करता है और प्रकृति का सम्मान करता है। भारत इंटर-जेनरेशनल इक्विटी में विश्वास करता है और यह हम में से प्रत्येक पर निर्भर है कि हम विरासत में मिली दुनिया से बेहतर दुनिया छोड़ कर जाएं।

हम 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने और हर भारतीय तक समृद्धि पहुंचाने के विजन के साथ काम कर रहे हैं। 'प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और भारत के लोगों ने एक ऐसे भविष्य की कल्पना की है जहां हम आजादी के 100 साल पर भारत को एक विकसित राष्ट्र देखना चाहते हैं'।

'वैश्विक आर्थिक सुधार में जब दुनिया खुद को बेहतर ऊर्जा सुरक्षा और खाद्य सुरक्षा के लिए तैयार कर रही है, जैसा कि हम भविष्य देखते हैं जहां इनोवेशन और प्रौद्योगिकी विकास को गति देने जा रही है।' ▪

बेटियों के विकास की बाधाएँ दूर: मुख्यमंत्री श्री चौहान

लाड़ली लक्ष्मियों के खातों में 1 करोड़ 85 लाख की प्रोत्साहन राशि अंतरित की

प्रदेश की बेटियों को शिक्षा में सहयोग के साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में विकास और सामाजिक नेतृत्व के लिए सक्षम बनाया जाएगा। लाड़ली लक्ष्मी योजना 2.0 का क्रियान्वयन इसी उद्देश्य से ही प्रारंभ किया गया है। योजना के अंतर्गत 1477 लाड़ली लक्ष्मी बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए 1 करोड़ 85 लाख रूपये की राशि अंतरित की गयी। बेटियों के विकास की सभी बाधाएँ दूर हो गई हैं। बेटियाँ पढ़ें और आगे बढ़ें, वे ऊँचे आसमान तक जाकर लम्बी उड़ान भरें। बेटियाँ अपने साथ प्रदेश और देश के भविष्य को बनाने का कार्य भी करेंगी।

प्रदेश में बेटियों को शैक्षणिक और आर्थिक सशक्तिकरण मिले, इसके लिए अनेक कदम उठाए गए हैं। शिक्षकों की भर्ती में 50 प्रतिशत, पुलिस की भर्ती में 30 प्रतिशत और पंचायतों सहित स्थानीय निकायों में आरक्षण के प्रावधान से बेटी और बहनों को आगे बढ़ने का अवसर मिला है। मध्यप्रदेश सरकार यह प्रयास निरंतर जारी रखेगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने लाड़ली लक्ष्मियों से आव्हान किया कि वे अपने लिए ही जीवन न जिएँ बल्कि देश और समाज के लिए भी जिएँ। इसी में जीवन की सार्थकता है। लाड़ली लक्ष्मियाँ ग्रामों में नारी जागरण और नशा मुक्ति अभियान के लिए कार्य करें। इसके अलावा बेटियों को आगे चल कर बड़े-बड़े कार्य करना है। ये बेटियाँ प्रदेश भी चलाएंगी। स्वामी विवेकानंद ने कहा था, दुनिया में ऐसा कोई कार्य नहीं है, जो नहीं किया जा सकता। आप उठें, जागृत हों और तब तक कार्य करें, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। राज्य सरकार बेटियों के साथ है, उन्हें शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में कार्य के लिए पूरा प्रोत्साहन दिया जाएगा। लाड़ली लक्ष्मी बेटियाँ, स्वयं को कमजोर न समझें। बेटियों में ऐसी क्षमता है कि वे समाज को दिशा देने का कार्य करेंगी। बेटियाँ नया इतिहास रचेंगी। वे अपने जीवन के साथ ही मध्यप्रदेश और देश का भविष्य और भाग्य को सुनहरा बनायेंगी।

योजना की पृष्ठभूमि

मुख्यमंत्री श्री चौहान जब सार्वजनिक जीवन में आए तो ग्राम स्तर पर होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में जाते थे। समाज में बेटियों के प्रति तिरस्कार का भाव देखने को मिलता था। भारतीय समाज में अनेक इलाकों में बेटियों की उपेक्षा देखने को मिलती है। बेटियों को अभिशाप मान लिया गया था। ग्रामों में यह माना जाता था कि शिक्षा का अधिकार सिर्फ बेटों को ही है, बेटियों को नहीं। बेटियाँ तो सिर्फ घर के कामकाज की जिम्मेदारी लेने के लिए हैं। अक्सर पति-पत्नी के आपसी झगड़ों में पति द्वारा अत्याचार को भी खुद स्त्रियाँ ही जायज मानती थी। यह देख कर आत्मा को कष्ट होता था। बेटे को कुल दीपक और बुढ़ापे की लाठी भी माना जाता था। लेकिन बहुत से मामलों में बेटों की बेरूखी और बेटियों की आत्मीयता, माता-पिता के लिए दिखाई देती थी। सामाजिक प्रवृत्ति के कारण बेटियों की संख्या में कमी भी आई थी।

''बेटी है तो कल है'' एक बूढ़ी अम्मा ने यह नारा सुन कर उन्हें टोका भी था कि क्या बेटियों की विवाह की जिम्मेदारी आप लेंगे। यह प्रश्न उद्वेलित करने वाला था। मुख्यमंत्री श्री चौहान जब वर्ष 1990 में विधायक बने तो सबसे पहले बेटियों के विवाह के लिए सहायता देने का कार्य प्रारंभ किया। वर्ष 1991 में सांसद बनने के बाद उन्होंने भत्ते की राशि से अभावग्रस्त परिवारों की बेटियों के लिए आर्थिक सहायता की शुरुआत की। वर्ष 2005 में मुख्यमंत्री बनने के बाद लखपति बेटी पैदा हो, इस विचार से लाड़ली लक्ष्मी योजना तैयार करवाई। वर्ष 2007 से प्रारंभ की गई यह योजना इतनी लोकप्रिय हुई कि आज 43 लाख से अधिक लाड़ली लक्ष्मियाँ प्रदेश में हैं। लाड़ली लक्ष्मी योजना को शिक्षा से जोड़ा गया। विभिन्न कक्षाओं में उत्तीर्ण होने पर बेटी के लिए प्रोत्साहन राशि का भुगतान करने की व्यवस्था की गई। लाड़ली लक्ष्मियों को महाविद्यालय में प्रवेश के लिए सहायता देने के लिए लाड़ली लक्ष्मी योजना 2.0 प्रारंभ की गई है। अब महाविद्यालय की फीस की व्यवस्था राज्य सरकार करेगी।

कक्षा 12वीं उत्तीर्ण करने के बाद महाविद्यालय जाने पर बेटी को 25 हजार रूपये की आर्थिक सहायता उन्हें शिक्षित कर कैरियर का चयन करने में मददगार होगी। ▪

प्रदेश में बेटियों को शैक्षणिक और आर्थिक सशक्तिकरण मिले, इसके लिए अनेक कदम उठाए गए हैं। शिक्षकों की भर्ती में 50 प्रतिशत, पुलिस की भर्ती में 30 प्रतिशत और पंचायतों सहित स्थानीय निकायों में आरक्षण के प्रावधान से बेटी और बहनों को आगे बढ़ने का अवसर मिला है।

मध्यप्रदेश सरकार यह प्रयास निरंतर जारी रखेगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने लाड़ली लक्ष्मियों से आव्हान किया कि वे अपने लिए ही जीवन न जिएँ बल्कि देश और समाज के लिए भी जिएँ।

बच्चियों के जन्म से विवाह तक के काम कर रही भाजपा सरकार - श्री शिवराजसिंह चौहान

भारतीय जनता पार्टी दुनिया का सबसे बड़ा राजनैतिक दल है। पार्टी अलग अलग मोर्चों के माध्यम से सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में काम कर रही है। महिला मोर्चा की भूमिका उसमें महत्वपूर्ण है।

आजाद भारत में देश की सरकार ने दो निशान, दो प्रधान बनाने का प्रावधान किया था। जिसका विरोध हमारे पथ प्रदर्शक डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने किया था तथा राजनैतिक मतभेद के चलते जनसंघ की स्थापना की गई। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का बलिदान भी इसी आंदोलन में हुआ। भाजपा बलिदान के आधार पर खड़ा हुआ संगठन है।

भाजपा ने महिलाओं के उत्थान के लिये कई योजनाओं का क्रियान्वयन कर उनको आगे बढ़ाने का काम किया और उसमें सफलता भी हासिल की। एक समय था जब महिलाओं को कई बंधनों में रहना होता था। कई प्रकार की कुप्रथाओं के कारण महिलाएं आगे नहीं बढ़ पा रही थी। वर्तमान में महिलाओं को आरक्षण के माध्यम से राजनीतिक क्षेत्र के साथ-साथ शासकीय नौकरियों में स्थान दिया जा रहा है। पहले जब लड़की पैदा होती थी तो परिवार को बोझ लगती थी, लेकिन अब हमने इतनी योजनायें बना दी है कि उनके जन्म से लेकर विवाह तक का काम मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार कर रही है। मध्यप्रदेश एक ऐसा राज्य है जहां दुष्कर्म के 87 मामलों में आरोपियों को फांसी की सजा हुई है।

भाजपा बलिदान के आधार पर खड़ा हुआ संगठन है - श्री विष्णुदत्त शर्मा

भारतीय जनता पार्टी दुनिया का सबसे बड़ा राजनैतिक दल है। पार्टी अलग अलग मोर्चों के माध्यम से सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में काम कर रही है। महिला मोर्चा की भूमिका उसमें महत्वपूर्ण है। आजाद भारत में देश की सरकार ने दो निशान, दो प्रधान बनाने का प्रावधान किया था। जिसका विरोध हमारे पथ प्रदर्शक डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने किया था तथा राजनैतिक मतभेद के चलते जनसंघ की स्थापना की गई। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का बलिदान भी इसी आंदोलन में हुआ। भाजपा बलिदान के आधार पर खड़ा हुआ संगठन है। जनसंघ की स्थापना से लेकर आज की भाजपा एकात्म मानववाद एवं अन्त्योदय के सिद्धांत पर चलते हुए ही भारतीय जनता पार्टी अपनी लोकप्रियता के शिखर पर है। भाजपा सामाजिक परिवर्तन के लिए काम करती है।

हमारे संगठन की कार्यपद्धति विशेष है - श्री अजय जामवाल

भारतीय जनता पार्टी विचार आधारित संगठन है। हमारे संगठन की एक विशेष कार्यपद्धति है। जिसके आधार पर कार्यकर्ता कार्यक्रम आयोजित कर पार्टी की विचारधारा का विस्तार करते है।

कार्यपद्धति संगठन की आत्मा है। स्व. कुशाभाऊ ठाकरे जी ने मध्यप्रदेश में संगठन रचना और कार्यपद्धति कार्यकर्ताओं को दी। जिसके आधार पर मध्यप्रदेश की पहचान देश के श्रेष्ठ संगठन के रूप में होती है। प्रशिक्षणार्थियों से चर्चा कर संगठन की कार्य प्रणाली कैसी होनी चाहिये, संगठन का विस्तार कैसे हो और महिला मोर्चा सरकार की योजनाओं का लाभ किस प्रकार घर-घर पहुंचा सके इसकी जानकारी दी। साथ ही प्रशिक्षणार्थी महिलाओं के भी विचार जाने।

भाजपा एक व्यापक वैचारिक आंदोलन का अंग - हितानंद जी

हमारा विचार आज सभी क्षेत्रों में फैला है। समाज के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में हमारा गौरव बढ़ा है। हमें समझने की आवश्यकता है कि आज हमारे विचार के प्रतिकूल लोगों को भी हमारे विचार की जरूरत पड़ रही है। किंतु हमने वह काल भी देखा है जब हमारी पीढ़ियों ने राष्ट्रीयता के विचार के लिए अनथक प्रयास और संघर्ष किए। आज पुनः दसों दिशाओं में हमारी कीर्ति गूंज रही है, विचार परिवार के संगठन मजबूत हो रहे हैं। भाजपा इस व्यापक विचार परिवार की अंग है। हम सभी को समाज और राजनीति में आदर्श स्थापित कर रही भाजपा की रीति-नीतियों, आदर्शों, सिद्धांतों व विचारों को ध्यान में रख कर ही कार्य करना चाहिए। ▪

कांग्रेस पिछड़ा वर्ग के लोगों को छलती रही, भाजपा ने शुरू किए विकास के प्रयास

देश की आजादी के बाद से ही पिछड़ा वर्ग के विकास के लिए काम करने की जरूरत थी, लेकिन कांग्रेस की सरकारों ने उनके लिए कुछ नहीं किया। कांग्रेस की सरकारें काका कालेलकर समिति रिपोर्ट को भी दबाकर बैठी रहीं। बाद में आई कांग्रेस की सरकारें भी पिछड़ा वर्ग के लोगों को छलती रहीं। देश और प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद पिछड़ा वर्ग के लोगों के विकास के प्रयास शुरू हुए, योजनाएं लागू की गईं। लेकिन कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल आज भी पिछड़ा वर्ग के लोगों को भ्रमित करने का काम कर रहे हैं।

भाजपा सरकार ने जगाया देश का स्वाभिमान, बढ़ाया मान - शिवराजसिंह चौहान

भारत अत्यंत प्राचीन सभ्यता वाला, समृद्ध देश रहा है। जिस समय अमेरिका और यूरोप में सभ्यता का उदय भी नहीं हुआ था, उस समय हमारे देश में वेदों की रचना की गई। सैकड़ों साल पहले दुनिया की अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान 33 प्रतिशत हुआ करता था। इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था। लेकिन विदेशी आक्रांताओं की लूटपाट, शासन और फिर अंग्रेजी शासन ने देश की अर्थव्यवस्था को तार-तार कर दिया और वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान 3 प्रतिशत पर आ गया। स्वतंत्रता के बाद भी देश की बागडोर जिन हाथों में आई उन्होंने पाश्चात्य पद्धति अपनाई जिसका खामियाजा देश को भुगतना पड़ा। अटल जी की सरकार ने पोखरण विस्फोट करके दुनिया को भारत की शक्ति दिखाई और देश का स्वाभिमान बढ़ाया। लेकिन उसके बाद फिर कांग्रेस की ऐसी सरकार आई, जिसने अलगाववाद और तुष्टीकरण की राजनीति करते हुए घोटालों की लंबी श्रृंखला प्रस्तुत की। 2014 में मोदी जी की सरकार बनने के पश्चात देश में आमूलचूल परिवर्तन हुआ। भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है और आज हमारा देश दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में आज भारत का योगदान 3 फीसदी से बढ़कर 9.5 फीसदी पर आ गया है। हमारे प्रधानमंत्री जी ने आत्मनिर्भर भारत का नारा देकर उसका रोडमैप भी तैयार किया है। उन्होंने 2026 तक भारत को पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा है। सैन्य क्षेत्र में भारत अपने दुश्मनों को आंख से आंख मिलाकर जवाब दे रहा है और कोरोना

भाजपा कार्यकर्ता आधारित संगठन होने के नाते आज पूरी दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है। प्रत्येक कार्यकर्ता को गर्व होना चाहिए कि आज भारत के 70 प्रतिशत भू-भाग पर भाजपा स्वच्छ प्रशासन दे रही है।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने कश्मीर में धारा 370 और दो विधान, दो निशान, दो प्रधान वाली व्यवस्था का विरोध किया। 1951 में उन्होंने जनसंघ की स्थापना की और कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति के लिए अपना बलिदान दे दिया।

संकट के दौरान दो-दो वेक्सीन बनाकर तथा सारी दुनिया को वेक्सीन देकर भारत ने दुनिया को इस बदलाव का अहसास करा दिया है। विश्व योग दिवस के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने का काम किया है, तो रूस- यूक्रेन युद्ध में अपने छात्रों को यूक्रेन से सकुशल निकालकर वैश्विक परिदृश्य में भारत के बढ़ते कद का अहसास करा दिया है।

विकास के रास्ते पर बढ़ रहा मध्यप्रदेश

देश के साथ मध्यप्रदेश भी आत्मनिर्भरता और विकास के रास्ते पर तेजी से कदम बढ़ा रहा है। पहले जब कांग्रेस की दिग्गी राजा की सरकार थी तो मध्यप्रदेश गड्ढा युक्त था, लेकिन अब मध्यप्रदेश गड्ढा मुक्त बन रहा है। प्रदेश में भाजपा की सरकार के आने से पहले कुल 2900 मेगावाट बिजली उपलब्ध थी, उसे बढ़ाकर हमने 24000 मेगावाट कर दिया। 24000 करोड़ की बिजली सब्सिडी हम गरीबों को दे रहे हैं। 3 लाख किलोमीटर शानदार सड़कें हम बना रहे हैं। भाजपा की सरकार ने चंबल से डाकुओं के आतंक को खत्म किया है, तो नक्सलियों पर भी नकेल लगाई है। माफियाओं, गुंडों के अवैध कब्जों पर बुलडोजर चलाकर 21000 हजार एकड़ सरकारी जमीन मुक्त कराई गई है। कांग्रेस के समय में प्रदेश में 7.30 लाख हेक्टेयर में सिंचाई होती थी, हमने इसे बढ़ाकर 45 लाख हेक्टेयर पर पहुंचा दिया है। कृषि उत्पादन में मध्यप्रदेश दुनिया में धूम मचा रहा है। हमारा एग्रीकल्चर ग्रोथ रेट 18 प्रतिशत पर पहुंच गया है। प्रदेश की आर्थिक विकास दर 19.7 प्रतिशत हो गई है और हमारी जीडीपी 3 लाख करोड़ से बढ़कर 12.30 लाख करोड़ हो चुकी है। समाज हित में हमारी लाड़ली लक्ष्मी योजना, संबल योजना जैसी अन्य योजनाएं गरीबों के सपनों को साकार कर रही हैं। वहीं, हमारी सरकार ने पिछड़ा वर्ग के विकास के लिए भी अनेक योजनाएं लागू की हैं। लोगों तक इन योजनाओं का लाभ पहुंचाना

पिछड़ा वर्ग मोर्चा की जिम्मेदारी है।

देश के 70 फीसदी भूभाग पर स्वच्छ प्रशासन दे रही भाजपा: विष्णुदत्त शर्मा

भाजपा कार्यकर्ता आधारित संगठन होने के नाते आज पूरी दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है। प्रत्येक कार्यकर्ता को गर्व होना चाहिए कि आज भारत के 70 प्रतिशत भू-भाग पर भाजपा स्वच्छ प्रशासन दे रही है। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने कश्मीर में धारा 370 और दो विधान, दो निशान, दो प्रधान वाली व्यवस्था का विरोध किया। 1951 में उन्होंने जनसंघ की स्थापना की और कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति के लिए अपना बलिदान दे दिया। ऐसे समय में जबकि दुनिया में पूंजीवाद और साम्यवाद असफल हो रहे थे, हमारे नेता पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने एकात्म मानव दर्शन दिया। अंतिम व्यक्ति के कल्याण के लिए अंत्योदय की अवधारणा दी। 1980 में स्व. अटलजी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। उस समय हमारे लोकसभा में दो ही सदस्य थे, लेकिन हमारे विचार और कार्यकर्ताओं की बदौलत आज हमारी पूर्ण बहुमत वाली सरकार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने कश्मीर से धारा 370 को समाप्त करके डॉ. मुखर्जी के संकल्प को साकार किया और अंत्योदय के लिए हमारी सरकारें योजनाएं चला रही हैं।

कांग्रेस ने पिछड़ा वर्ग के लोगों को छला

भाजपा सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास के मूलमंत्र तथा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में गरीबों के विकास और भाग्य बदलने का काम कर रही है।

हर गरीब को खड़ा करने का काम भाजपा करती है।

हमारी केन्द्र और राज्य सरकार पिछड़ा वर्ग के हित में कार्य कर रही है। कांग्रेस ने इस वर्ग को हमेशा छलने का काम किया। जबकि मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने पिछड़ा वर्ग कल्याण आयोग बनाकर समाज के उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया। कांग्रेस ने समाज को जोड़ने के बजाए सामाजिक विद्वेष बढ़ाने का काम किया। पिछड़ा वर्ग हितैषी होने का ढोंग करने वाली कांग्रेस ने चुनाव में पिछड़ा वर्ग आरक्षण को लेकर भ्रम फैलाने का काम किया। भारतीय जनता पार्टी ने बिना पिछड़ा वर्ग आरक्षण के चुनाव नहीं किए जाने का पक्ष लिया और दृढ़ता के साथ न्यायालय में भी पिछड़ा वर्ग के हक में लड़ाई लड़ी ।

हम दुनिया को श्रेष्ठता का मार्ग दिखा रहे - हितानंद जी

हमारा विचार शास्वत और चिरपुरातन है, उसकी पुर्नस्थापना हो, इसके लिए हम मिलकर अलग-अलग क्षेत्रों में विचार को आगे बढ़ा रहे हैं। आजादी के बाद कश्मीर की स्वायत्ता को लेकर डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने नेहरू सरकार से त्यागपत्र दिया। जिसके बाद जनसंघ का गठन हुआ। जो 1975 में भारतीय जनता पार्टी में विलय हुआ। तब हमारे विचार का प्रसार हुआ और हम पुनः संघर्ष करते हुए खड़े हुए। नेहरू जी ने एक समय संसद में कहा था कि देश में एक इंच पर भी भगवा फहराने नहीं देंगे, तब डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने कहा था कि हम इस कुत्सित मानसिकता को कुचल डालेंगे। आज विचार परिवार के प्रयासों से भारत की इंच-इंच भूमि पर भगवा फहरा रहा है। आज संघ का विचार वटवृक्ष की तरह फैला हुआ है। हम विचार के आधार पर आगे बढ़ते जा रहे हैं। हम दुनिया को श्रेष्ठता का मार्ग दिखा रहे हैं।

भारत पुन: विश्वगुरू बने यह हमारा संकल्प

हम जिस शाश्वत विचार को लेकर काम कर रहे हैं, उस विचार के आधार पर भारत दुनिया को सिखाने के लिए फिर आगे बढ़ रहा है, क्योंकि हम दुनिया को एक परिवार के रूप में देखते हैं, हम सर्वेभवन्तु सुखिनः के आधार पर दुनिया को श्रेष्ठता की ओर ले जा रहे हैं। एक समय था, वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब उन्हें अमेरिका वीजा नहीं देता था, आज उन्हीं मोदी जी को बुलाने के लिए अमेरिका आतुर है। एक समय भारत के प्रधानमंत्री सिर्फ खड़े रहते थे, आज प्रधानमंत्री जी के पीछे कई देश खड़े हैं। यह हमारे विचार की ही ताकत है। विचार परिवार के सभी कार्यकर्ताओं का संकल्प है कि भारत पुनः विश्वगुरू बने।

कांग्रेस की सरकार ने 17 सालों तक दबाए रखी कालेलकर समिति की रिपोर्ट: डॉ. के लक्ष्मण

पिछड़ा वर्ग मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. के. लक्ष्मण ने द्वितीय सत्र में 'हमारी कार्यपद्धति और संगठन संरचना में हमारी भूमिका' विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि आजादी के बाद डॉ. अंबेडकर जी ने पिछड़ा वर्ग हित को लेकर सुझाव दिये, लेकिन उन पर अमल नहीं हुआ। काका कालेलकर कमीशन की रिपोर्ट को 17 साल तक प्रधानमंत्री नेहरू ने तवज्जो नहीं दी। 1978 में जब स्व. मोरारजी देसाई की सरकार बनी और स्व. वाजपेई जी तथा आडवाणी जी मंत्रिमंडल में शामिल हुए, तब पिछड़ा वर्ग के लोगों के लिए मंडल कमीशन का गठन हुआ, लेकिन 1980 से 1993 तक गैर भाजपा सरकारों ने इसके बारे में कोई पहल नहीं की। जब भाजपा के समर्थन वाली वीपी सिंह सरकार ने मंडल आयोग पर बातचीत शुरू की, तो स्व. राजीव गांधी ने ऑन रिकॉर्ड जाति आधारित आरक्षण का विरोध किया था। 2004 से 2014 तक यूपीए गवर्नमेंट ने भी कुछ नहीं किया।

मोदी सरकार ने शुरू किए पिछड़ा वर्ग की बेहतरी के प्रयास

2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए की सरकार बनने के बाद पिछड़ा वर्ग की बेहतरी के प्रयास शुरू किए गए। एससी आयोग की तरह ओबीसी आयोग का गठन किया गया, जिसका सपा और बसपा जैसी पार्टियां जो पिछड़ा वर्ग के नाम पर अपने संगठन को खड़ा करती हैं, ने विरोध किया। पिछड़ा वर्ग के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण प्रभावशील हुआ। ओबीसी के लगभग 4000 प्रोफेसर और असिस्टेंट ऑफिसर अभी तक बन चुके हैं। डॉ. लक्ष्मण ने कहा कि हमारे तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह जी ने 2015 में पहली बार पिछड़ा वर्ग मोर्चा का गठन किया। अब तक 30 राज्यों के 856 जिलों तथा 12000 मंडलों में ओबीसी मोर्चा का गठन किया जा चुका है। हमारा अगला लक्ष्य आगामी विधानसभा चुनाव से पहले बूथ स्तर तक मोर्चा का गठन करना है। आज पार्टी संगठन तथा केंद्र एवं राज्य सरकारों में पिछड़ा वर्ग के कार्यकर्ता विभिन्न पदों पर काम कर रहे हैं। जिन राज्यों में चुनाव हो रहे हैं, वहां भी पिछड़ा वर्ग मोर्चा को पर्याप्त महत्व दिया जा रहा है। गुजरात की 182 सीटों में से 45 पर पिछड़ा वर्ग मोर्चा के उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं।

जन-जन तक पहुंचाएं पिछड़ा वर्ग के हित में भाजपा सरकारों के काम: कुशवाहा

पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्री नारायणसिंह कुशवाहा ने कहा कि कांग्रेसी हम से पूछते हैं कि हमारी सरकारों ने पिछड़ा वर्ग के लिए क्या किया? लेकिन मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि

क्या कभी कांग्रेस ने पिछड़ा वर्ग के किसी नेता को कभी मुख्यमंत्री बनाया था? कांग्रेस की सरकारों ने काका कालेलकर समिति की रिपोर्ट पर भी कोई कार्रवाई नहीं की। लेकिन भाजपा की सरकार में पिछड़ा वर्ग के कार्यकर्ता तीन बार मुख्यमंत्री बने हैं और हमारे वर्तमान मुख्यमंत्री भी पिछड़ा वर्ग से ही हैं। हमारे प्रधानमंत्री भी पिछड़ा वर्ग से आते हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान की सरकारों ने पिछड़ा वर्ग के विकास के लिए अनेक कदम उठाए हैं। हर वर्ष हमारी प्रदेश सरकार पिछड़ा वर्ग के 50 छात्र छात्राओं को विदेश में पढ़ने के लिए भी भेजती है। हमें यह अध्ययन करना चाहिए कि हमारी सरकारें पिछड़ा वर्ग के हितों के लिए कौन-कौन सी योजनाएं चला रही हैं। हमारा यह दायित्व बनता है कि हम प्रत्येक पात्र व्यक्ति को इन योजनाओं का लाभ दिलाएं और इन योजनाओं की जानकारी समाज तक पहुंचाएं। यह सौभाग्य की बात है कि हम विश्व की सबसे बड़ी पार्टी के कार्यकर्ता और पदाधिकारी हैं। हमें संगठन के लक्ष्यों के लिए कटिबद्ध होकर काम करना है।

भाजपा सरकार ने किए पिछड़ा वर्ग के हित में प्रयास, निकाय चुनाव में दिलाया आरक्षण

कांग्रेस की सरकारों का रवैया पिछड़ा वर्ग के प्रति असहयोगात्मक रहा है। लेकिन भाजपा की सरकार बनने के बाद देश की राजनीति और पिछड़ा वर्ग की स्थिति में युगांतरकारी परिवर्तन आए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार के आने के बाद राष्ट्रीय स्तर पर पिछड़ा वर्ग की बेहतरी के लिए प्रयास शुरू किए गए। यही नहीं, बल्कि मध्यप्रदेश में अगर निकाय चुनावों में पिछड़ा वर्ग को आरक्षण का लाभ मिल सका है, तो इसका श्रेय भी भारतीय जनता पार्टी और मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के प्रयासों को जाता है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने दिलाया पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा- प्रहलादसिंह पटेल

सरकारों ने पिछड़ा वर्ग के लिए कुछ नहीं किया। विशेषकर कांग्रेस की सरकारों का रवैया पिछड़ा वर्ग के प्रति असहयोगात्मक रहा है।

यदि हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी नहीं होते तो पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा प्राप्त नहीं होता। अब यह एक सर्वाधिकार प्राप्त आयोग बन गया है। पिछड़े वर्ग को लेकर हमारी केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारें बहुत सारी योजनाओं पर काम कर रही हैं। यह हमारा दायित्व है कि पिछड़ा वर्ग मोर्चा के पदाधिकारी और कार्यकर्ता इन योजनाओं का अध्ययन करें तथा इन योजनाओं का लाभ जन-जन तक पहुंचाएं। पिछड़ा वर्ग के छात्रों के लिए दो तरह की छात्रवृत्ति योजनाएं चल रही हैं-प्री मैट्रिक और पोस्ट मैट्रिक। पिछले वर्ष छात्रवृत्ति के तौर पर प्रदेश सरकार ने 135.52 करोड़ रुपये दिये थे और इस साल के लिए प्रदेश सरकार ने 160 करोड़ का बजट निर्धारित किया है। इसके अलावा 10वीं एवं 12वीं कक्षाओं में प्रावीण्य सूची में आने वाले 207 विद्यार्थियों को भी प्रदेश सरकार ने 15लाख रुपये दिये हैं। प्रदेश सरकार पिछड़ा वर्ग के छात्रों के लिए भोपाल, जबलपुर और ग्वालियर में 100 सीटर छात्रावास तथा छात्राओं के लिए 500 सीटर छात्रावास संचालित कर रही है। वहीं केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय छात्रवृत्ति, फैलोशिप छात्रवृत्ति और ओवरसीज छात्रवृत्ति दी जा रही है। पिछड़ा वर्ग के विकास के लिए समाज में जागरूकता के प्रयास करना होंगे, ताकि वे योजनाओं का लाभ लेकर अपने जीवनस्तर को ऊपर उठा सकें।

सबका साथ, सबका विकास के मंत्र पर आगे बढ़ रही मोदी सरकार-रणवीर सिंह रावत

भाजपा के प्रदेश महामंत्री श्री रणवीर सिंह रावत ने आठवें सत्र में '2014 के बाद युगांतरकारी परिवर्तन' विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि 2014 में मोदी सरकार बनने के बाद देश में आमूलचूल परिवर्तन आए हैं। देश ने हर क्षेत्र में उपलब्धियां हासिल की हैं। कांग्रेस सरकारों के समय देश में परिवारवाद और भ्रष्टाचार की बातें हुआ करती थीं। गैर भाजपाई सरकारें देश में अलगाववाद और तुष्टिकरण की राजनीति करती रहीं। वहीं, जब से भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई है, देश में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की बातें होने लगी हैं। मोदी सरकार की योजनाएं 'सबका साथ सबका विकास' पर आधारित हैं, जिनके माध्यम से देश विकास के रास्ते पर बढ़ रहा है। 2014 के बाद देश का जीडीपी बढ़ा है और भारत एक आर्थिक महाशक्ति के तौर पर उभर रहा है। वैश्विक पटल पर भारत का मान-सम्मान बढ़ा है और देश विश्व में एक प्रभावी भूमिका का निर्वाह कर रहा है। मोदी सरकार के कुशल नेतृत्व में देश ने कोरोना संकट पर जिस तरह विजय हासिल की, वह सारी दुनिया के लिए एक उदाहरण बन गया है। हमने न सिर्फ अपने लिए वेक्सीन बनाई, बल्कि अन्य देशों को भी वेक्सीन देकर महामारी से लड़ने में मदद की। प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत विश्वगुरु बनने के रास्ते पर बढ़ चला है।

भाजपा सरकार, मुख्यमंत्री चौहान ने दिलाया निकाय चुनाव में आरक्षण- भूपेंद्रसिंह

नगरीय निकाय चुनाव में पिछड़ा वर्ग को

आरक्षण मिलना प्रदेश की भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान के भागीरथ प्रयासों और कभी न हारने वाले जज्बे की जीत है। 2019 में तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने पंचायतों के परिसीमन का निर्णय लिया। इसके साथ ही यह भी निर्णय लिया कि निकाय चुनाव अप्रत्यक्ष प्रणाली से कराए जाएंगे। 2020 में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद 2014 के समय के परिसीमन के आधार पर चुनाव कराने का निर्णय लिया गया। इसके लिए प्रदेश सरकार एक अध्यादेश भी लाई। कांग्रेस की कोशिश थी कि किसी भी तरीके से इन चुनावों को रोका जाए। इसके लिए कांग्रेस के दो प्रवक्ताओं ने हाईकोर्ट में याचिका लगा दी। हाईकोर्ट से याचिका रद्द होने के बाद कांग्रेस सुप्रीम कोर्ट गई। सुप्रीम कोर्ट में वरिष्ठ कांग्रेस नेता और सांसद ने महाराष्ट्र का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए आरक्षण के साथ चुनाव न कराने की बात कही, जिसे मानते हुए सुप्रीम कोर्ट ने आदेश जारी कर दिया।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद हमारे मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने यह तय किया कि हम पिछड़ा वर्ग के आरक्षण के बिना चुनाव नहीं कराएंगे। इसके लिए उन्होंने अपनी सरकार का वह अध्यादेश वापस ले लिया, जिसके आधार पर 2014 के परिसीमन पर चुनाव हो रहे थे। इससे चुनाव रद्द हो गए। इसके बाद की कहानी मुख्यमंत्री श्री चौहान के कभी न परास्त होने वाले जज्बे की कहानी है। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में पुनरीक्षण याचिका लगाई जो तर्क, तथ्य तथा साक्ष्य प्रस्तुत किए, उनके आधार पर सुप्रीम कोर्ट को आरक्षण के साथ चुनाव कराने का आदेश देना पड़ा। मध्यप्रदेश सरकार के हित में सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला एक नजीर बन गया है और विभिन्न राज्य सरकारें भी मध्यप्रदेश आकर यह जानने का प्रयास कर रही हैं कि आखिर मध्यप्रदेश यह कैसे कर पाया। मध्यप्रदेश सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के डेढ़ महीने के अंदर पंचायत और निकाय चुनाव कराए और इन दोनों ही चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को शानदार सफलता मिली है। ▪

प्रदेश सरकार विकास, जनकल्याण और सुराज के कीर्तिमान रच रही-श्री शिवराज सिंह चौहान

मध्यप्रदेश सरकार रोजगार देने के मामले में नंबर वन है। सरकार हर महीने रोजगार दिवस का आयोजन कर बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार दे रही है। इसका प्रचार-प्रसार सभी को करना चाहिए। प्रशिक्षण का उद्देश्य यही है कि कार्यकर्ता अपने विचार को जानें, वे अनुशासित हों और उनके व्यक्तित्व का विकास हो।

काम करने की निष्ठा कार्यकर्ताओं को सदैव आगे ले जाती है। एकमात्र लक्ष्य राष्ट्र की उन्नति और समाज सेवा के माध्यम से पं. दीनदयाल उपाध्याय के दिए मंत्र अंत्योदय को साकार करना है। इसी संकल्प की सिद्धि के लिए हम सभी निरंतर कार्य कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश में गरीब कल्याण की दिशा में अनेक कार्य हुए हैं और कई योजनाएं चल रही हैं। मध्यप्रदेश विकास की यात्रा पर है। प्रदेश सरकार विकास, जनकल्याण और सुराज के अनेक आयामों पर कीर्तिमान रच रही है। प्रदेश सरकार की विकास यात्रा जन-जन तक पहुंचे, इसकी जिम्मेदारी युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं को निभानी है। युवाओं को सशक्त और समृद्ध करने की दृष्टि से सरकार कई योजनाओं के माध्यम से युवाओं को लाभान्वित कर रही है। युवा मोर्चा कार्यकर्ताओं को अपने-अपने स्थान पर इन लाभार्थियों से संपर्क और संबंध स्थापित करना चाहिए।

राष्ट्र की उन्नति और समाज की सेवा ही हमारा ध्येय

मध्यप्रदेश सरकार रोजगार देने के मामले में नंबर वन है। सरकार हर महीने रोजगार दिवस का आयोजन कर बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार दे रही है। इसका प्रचार-प्रसार सभी को करना चाहिए। प्रशिक्षण का उद्देश्य यही है कि कार्यकर्ता अपने विचार को जानें, वे अनुशासित हों और उनके व्यक्तित्व का विकास हो। काम करने की निष्ठा कार्यकर्ताओं को सदैव आगे ले जाती है। एकमात्र लक्ष्य राष्ट्र की उन्नति और समाज सेवा के माध्यम से पं. दीनदयाल उपाध्याय के दिए मंत्र अंत्योदय को साकार करना है। इसी संकल्प की सिद्धि के लिए हम सभी निरंतर कार्य कर रहे हैं। युवा मोर्चा के सभी साथी सरकार और संगठन के काम को हर बूथ तक पहुंचाने में अपनी महती भूमिका निभाएं।

वैचारिक युवाओं को पार्टी से जोड़ें - विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की साख पूरे विश्व में बढ़ी है। भारत की इस बढ़ती साख से विभाजनकारी ताकतें परेशान हैं और वह हर समय देश के ताने बाने को चोट पहुंचाने के प्रयास में लगी रहती हैं। युवा मोर्चा की जिम्मेदारी है कि ऐसी विघटनकारी ताकतों के मंसूबे पूरे न हो, हमारा सामाजिक ताना बाना मजबूत हो और युवा भ्रमित न हो, इसके लिए दृढ़ता के साथ समाज के बीच जाएं और उन्हें विभाजनकारी ताकतों व संगठनों की हकीकत बताएं। देश विरोधी ताकतें इंटरनेट के माध्यम से सोशल मीडिया पर सामाजिक विद्वेष फैलाने के उद्देश्य से काम कर रही हैं। युवा मोर्चा समाज के ऐसे वैचारिक युवाओं को जोड़े जो सोशल मीडिया पर भी सक्रिय हो।

युवा मोर्चा के अभियान सराहनीय और प्रशंसनीय

भारतीय जनता पार्टी और उसके कार्यकर्ता केवल राजनीति ही नहीं करते बल्कि सामाजिक कार्यों में भी अग्रणी भूमिका निभाते हैं। युवा मोर्चा ने हाल ही में वृहद वृक्षारोपण अभियान चलाया जो पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन की दिशा में सराहनीय और प्रशंसनीय है। विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय युवा प्रतिभाएं हमारे परिवार का हिस्सा बनें, ऐसे प्रयास सभी को करना चाहिए। युवाओं के हित में क्या नवाचार किए जाएं इस दृष्टि से युवा मोर्चा को कार्ययोजना पर विचार करना चाहिए। सरकार की योजनाएं और युवा वर्ग के हित में लिए गए निर्णय हर बूथ तक पहुंचे, इस बात की चिंता युवा मोर्चा करे। ▪

अंग्रेजों के पहले भारत में एक रूप रहा है जनजातीय और नगरीय समाज

रमेश शर्मा

आधुनिक जीवन काल में जहाँ पूरी दुनियाँ एक गाँव बन रही है। पूरा यूरोपीय और इस्लामिक समाज अपने एकत्व के लिये संगठन बना रहे हैं वहीं भारतीय समाज जीवन में वनों में निवास करने वाले जनजातीय या आदिवासी समाज और नगरवासियों के बीच विभाजन रेखा गहरी करने के रोज नये बहाने खोजे जा रहे हैं। जबकि भारत में अंग्रेजों के पहले कहीं कोई भेद या विभाजन रेखा नहीं थी। पूरा समाज एक स्वरूप था। उनके बीच विवाह संबंध भी थे और भारत पर हुये विदेशी हमलों में पूरे समाज ने एकजुट होकर संघर्ष किया है।

भारतीय समाज जीवन की एकरूपता को समझने के लिये हमें आश्रम व्यवस्था और देव परिकल्पना को समझना होगा। यदि हम जीवन की औसत आयु सौ वर्ष माने तो सत्तर वर्ष का जीवन वनवासी के रूप में ही जीना होता था। भारत में सभी गुरुकुल वन में हुआ करते थे जो शिक्षा, चिकित्सा और अनुसंधान का केन्द्र होते थे। जीवन का आरंभ ब्रह्मचर्य आश्रम से होता था। बालक को पाँच वर्ष की आयु में ही पढ़ने के लिये गुरुकुल भेज दिया जाता था। रामजी भी पढ़ने गुरुकुल गये हैं। ऐसा नहीं कि कोई आचार्य महल में आकर पढ़ाने लगे। फिर गृहस्थाश्रम, फिर वानप्रस्थ और फिर संन्यास। अंत के दोनों आश्रम वन में ही जीवन बिताना होता था। इस प्रकार जीवन के सत्तर वर्ष वन में।

भारतीय समाज जीवन की एकरूपता को समझने के लिये हमें आश्रम व्यवस्था और देव परिकल्पना को समझना होगा। यदि हम जीवन की औसत आयु सौ वर्ष माने तो सत्तर वर्ष का जीवन वनवासी के रूप में ही जीना होता था। भारत में सभी गुरुकुल वन में हुआ करते थे जो शिक्षा, चिकित्सा और अनुसंधान का केन्द्र होते थे। जीवन का आरंभ ब्रह्मचर्य आश्रम से होता था।

बालक को पाँच वर्ष की आयु में ही पढ़ने के लिये गुरुकुल भेज दिया जाता था। रामजी भी पढ़ने गुरुकुल गए हैं। ऐसा नहीं कि कोई आचार्य महल में आकर पढ़ाने लगे। फिर गृहस्थाश्रम, फिर वानप्रस्थ और फिर संन्यास। अंत के दोनों आश्रम वन में ही जीवन बिताना होता था। इस प्रकार जीवन के सत्तर वर्ष वन में।

विवाह संबंध में समरसता

भारतीय जीवन में यदि वनवासी या नगरवासी के बीच भेद होता तो विवाह संबंध न होते। महर्षि भृगु की पत्नि देवी पुलोमा वनवासी थी जिनसे महर्षि च्यवन का जन्म हुआ। महर्षि बाल्मीकि का जन्म किस परिवार में हुआ यह सब जानते हैं वे ऋग्वेद के आठवें मंडल में ऋषि हैं और उन्ही के आश्रम में लव और कुश का जन्म हुआ। महर्षि व्यास की माता देवी सत्यवति मछुआरिन थीं। इन्ही का दूसरा विवाह चक्रवर्ती सम्राट शांन्तनु से हुआ। देवी सत्यवती का पुत्र ही राजा बनें, इसलिए भीष्म ने जीवन भर विवाह नहीं किया था। देवी रेणुका तो राजकुमारी थीं उन्होंने स्वयंवर में जमदग्नि जी का वरण किया। जमदग्नि जी महर्षि अवश्य थे पर रहते तो वन में थे। श्रृंगी ऋषि की माता वनवासी और दासी थी। महर्षि जाबालि की माता तो गणिंका थी। रामजी के साथ गुरुकुल में निषादराज भी पढ़े थे। अर्थात शिक्षा देने में कोई भेद न था। महाभारत काल के विद्वान विदुर दासी पुत्र थे। वे हस्तिनापुर के महामंत्री बने। राजनीति शास्त्र का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ ''विदुर नीति'' इन्ही की रचना है जो सदैव राजाओं का मार्गदर्शन करती रही। महाभारत काल के महाबली भीम का विवाह वनवासी हिडिम्बा से और अर्जुन का विवाह नाग वनवासी जाति की उलूपी से हुआ। श्री कृष्णजी का पालन पोषण जिस परिवार में हुआ वे गोपालन और दूध व्यवसाय करने वाला था। उनके अग्रज बलराम जी तो स्वयं कृषि करते थे इसीलिये तो उनका प्रतीक हल है।

भारतीय की एकात्मकता

यदि हम वैदिक, महाभारत और पुराण काल बात से आगे बढ़कर भारतीय इतिहास के प्रसंग

देखें। भारत के सबसे बड़े मगध साम्राज्य के अधिपति महापद्मनंद केश शिल्प अर्थात नाई समाज से थे। उन्होंने ही नंद वंश के राज्य की स्थापना की थी बाद में उनके वंशज भी राजा बने। उनके साम्राज्य का अंत कर अपना साम्राज्य स्थापित करने वाले चन्द्रगुप्त मौर्य की माता मुरा दासी थी। उनकी योग्यता देखकर आचार्य चाणक्य ने अपना शिष्य बनाया। उन्होने जाति न पूछी योग्यता देखी। मौर्य साम्राज्य के उत्तराधिकारी शुंगवंश का अंत करके गुप्त साम्राज्य की नींव रखने वाले घोड़े का अस्तबल के प्रभारी थे। हम साम्राज्य परंपरा से आगे मध्यकाल की गुरुकुल परंपरा को देखे। सब जानते हैं रविदास जी ने चर्म शिल्पकार परिवार में जन्म लिया और कबीर दास जी ने जुलाहा परिवार में जन्म लिया। ये शंकराचार्य परंपरा में बनारस उपपीठ शंकराचार्य स्वामी रामानंदाचार्य के शिष्य थे। और एक राजा की पुत्री एवं दूसरे राजा को ब्याही मीरा ने रविदास जी को अपना गुरु बनाया। यदि भेद होता तो रामानंदाचार्य जी रविदास जी और कबीरदास जी को शिष्य कैसे बनाते और मीरा गुरु के रूप रविदास जी को क्यों स्वीकार करतीं।

मराठा साम्राज्य में सुप्रसिद्ध विजेता पेशवा बाजी राव ब्राह्मण थे। पर उन्होने गाय चराने वाले गायकवाड़, चरवाहा जाति के होलकर और निजी सेवक शिन्दे को सेनापति बनाया। ये तीनों आगे चलकर गुजरात, मालवा और मध्यभारत के शासक बनें। वैदिक काल से लेकर मध्यकाल के अंत तक ऐसे उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है जब कोई भेद नहीं, कोई वनवासी या नगर वासी का भेद नहीं, कोई छुआछूत नहीं। आकलन केवल प्रतिभा से था। यही कारण था कि भारत पर प्रत्येक विदेशी हमले में सबसे अधिक बलिदान वनवासियों ने दिये। इसके उदाहरण सिकन्दर पर भारत पर आक्रमण से लेकर अंग्रेजों के साथ संघर्ष तक देखा जा सकता है। वह 1757 का प्लासी का युद्ध हो या 1857 की क्रान्ति। सैनिकों के रूप में अधिक संख्या वनवासियों की ही थी। 1820 के आसपास यदि नागपुर के भोंसले वन में छिप गये तो वनवासियों ने प्राण देकर भी उनकी रक्षा की। यही सब देखकर अंग्रेजों ने षडयंत्र किया।

अंग्रेजों का षडयंत्र

इसका आरंभ 1773 से दिखता है जब चर्च ने वनक्षेत्र में अपना नेटवर्क बढ़ाने का निश्चय किया। उन्होंने वनवासियों को ट्राइवल नाम दिया और आर्य हमलावर की थ्यौरी की कूट रचना की। जबकि आर्य शब्द ऋग्वेद में आया जो गुण वाचक है। एक श्रेष्ठ नागरिक को आर्य कहा गया। इसलिए वेद ने संकल्प लिया कि पूरे विश्व को आर्य बनाना है किन्तु चर्च ने पादरियों को आगे किया और प्रचार किया कि आर्य हमलावर थे

आज हम जब स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो इस विषय पर भी विचार होना चाहिए कि अंग्रेज किस नीति से सफल हुये थे। हमारी कमजोरियाँ क्या थीं।

उनके जाने के बाद कौन से षडयंत्र हैं जिनसे मुक्ति न हो सकी। हमें इन षडयंत्रों को भी उजागर करना चाहिये तभी भारतीय स्वाधीनता के अमृतत्व की यात्रा सफल होगी और भारत विश्व में अपनी खोई प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेगा।

उन्होने लोगों को वनों में धकेल दिया। उनकी तो घोषित नीति ही थी कि फूट डालो और राज्य करो। अंग्रेज अधिकारी निकोलस डार्क की किताब ''कास्ट ऑफ माइंड'', मैक्समूलर की ''आर्यन इन्वेजन थ्यौरी'' के साथ मैकाले और विलियम्स हंटर के लेखन में मिल जाएगा कि कैसे अंग्रेजों ने आदिवासी अलग, गोरे अलग काले अलग, जातिवाद, छुआछूत को स्थापित किया और कैसे भारत में ऐजेन्ट ढूंढकर प्रशिक्षित करके ऐसे दुष्प्रचार के लिये समाज में छोड़ दिया।

अंग्रेजों से पहले कितने विदेशी आये उनके संस्मरणों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। इनमें मेगास्थनीज, फाहियान, ह्यूनसांग और अलबरूनी आदि अनेक पर्यटक। इनके लेखन को विश्व भर में मान्यता है। इनके लेखन में भारतीय प्रतिभा और वन संपदा का भी उल्लेख है पर किसी ने भी आदिवासी या ट्राइवल शब्द या वनवासी समाज का पृथक से उल्लेख नहीं लिखा किया और न यह लिखा कि यहां किसी क्षेत्र या जन्म जाति के आधार पर कोई शोषण या भेद होता था। पर यह काम अंग्रेजों ने एक निश्चित योजना से किया। उन्होंने ट्राइवल शब्द का प्रचार जो भारत के सभी वनक्षेत्र एक समान किया। सभी मिशनरी कार्यकर्ताओं की शब्द शैली एक सी थी मानों वनवासियों में यह प्रचार करने के लिये मिशनरियों ने कोई प्रशिक्षण लिया हो। अंग्रेज यहीं तक न रुके उन्होंने एक और रणनीति बनाई। अपने प्रशिक्षित लोगों को पुरातत्व सर्वेक्षण के काम में लगाया और इसे आधार बनाकर भारत के इतिहास को नये सिरे से लिखने का काम किया। उन दिनों के बंगाल में आज का बिहार और उड़ीसा प्रांत भी इसमें शामिल थे। कलकत्ता चर्च से जुड़ी मिशनरियाँ इन क्षेत्रों में सक्रिय हुईं। और मुम्बई के चर्च ने महाराष्ट्र के साथ मध्यप्रदेश के महाकौशल और मालवा तक अपने पैर फैलाये जबकि मद्रास के चर्च ने केरल, तमिलनाडु आदि को अपने हाथ में लिया। भारत के जंगलों में सक्रिय मिशनरियों ने एक ओर अंग्रेजी सत्ता को मजबूत करने के लिये विभाजन कारी बातें फैलाना आरंभ किया और दूसरी ओर धर्मांतरण करके वनवासियों को ईसाई बनाने का अभियान चलाया। चर्च को लगता था कि यदि वनों का ईसाईकरण हो जाये तो वनवासी अंग्रेजों की सत्ता के समर्थन में आ जायेंगे और समूची वन संपदा पर अंग्रेजों का अधिकार हो जायेगा। चर्च का आभियान तेज चले इसके लिये अंग्रेजों ने एक कानून बनाया और कहा- वनवासियों का अपना कोई धर्म ही नहीं है। यदि वे ईसाई बनते हैं, चर्च में जाते हैं तो यह उनका धर्मान्तरण नहीं है बल्कि धर्म के मार्ग पर चलने की शुरुआत है। वनवासी भोले होते हैं। चालाकियाँ कम समझते हैं। सीधी सरल बात करते हैं। अंग्रेजों ने इस मनोविज्ञान को समझा और केवल रंग भेद की बात करके वनवासियों को समझाया कि गोरे लोग आर्य हैं और हमलावर जबकि काले लोग आदिवासी हैं मूल निवासी हैं। जबकि भारत में रंग का कोई भेद न था। सभी रंग के लोग भारत में मिलते हैं। एक ही घर में दो रंग के लोग मिल जाते हैं। रामजी का रंग साँवला और लक्ष्मण जी का रंग गोरा है। भारत में एक देवी कालिका जी हैं। एक दम काला रंग।

भगवान शिव कपूर के समान गोरे और भगवान विष्णु बादलों के समान काले। लेकिन अंग्रेजों का प्रचार इतना प्रबल था, कि भारतीय जनों का विवेक शून्य ही हो गया। वे अंग्रेजों की चाल में फंसने लगे। वहीं इतिहास लेखन और कानून बनाकर भारतीय समाज विभिन्न वर्गों और उप वर्गों में बाँट दिया इससे नकारात्मक प्रतिद्वंद्विता पैदा होने लगी। कहीं ब्राह्मणों को दलित समाज के विरुद्ध तो दलित समाज को अन्य वर्गों के विरुद्ध भड़काया। बात यहाँ तक ही न रुकी। क्षत्रिय समाज के भी दो उपवर्गों को सामने सामने खड़ा कर दिया। अन्य पिछड़ा वर्ग क्षत्रिय समाज का ही तो अंग है।

उम्मीद की जा रही थी कि अंग्रेजों के जाने के बाद उनके षडयंत्र उनके साथ ही चले जायेंगे। लेकिन उनके जाने के 75 साल बाद भी उनके द्वारा रोपी गयीं विष बेलें फैल रहीं हैं। यह विभाजन वादी प्रचार का ही परिणाम है कि अब व्यक्तिगत अपराध को भी जातिवाद से जोड़ा जाने लगा।

किसी एक व्यक्ति द्वारा कोई अपराध करना या मर्यादा हनन करना एक बात है लेकिन उस व्यक्ति या घटना के बहाने समाज को एक जुट करके आक्रामक बनाना बिल्कुल दूसरी बात। इन

दिनों भारत में यही सब हो रहा है। जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति, धर्म, क्षेत्र और भाषा के आधार पर बांटने का काम हो रहा है। हम यह समझ ही नहीं पा रहे कि अंग्रेजों ने तो बाकायदा ''बाँटो और राज करो'' का मंत्र तैयार किया था। लेकिन उनके जाने के बाद तो इस नारे और इस नीति को धरती के भीतर गाढ़ दी जाने चाहिए थी। लेकिन कुछ लोगों ने इसे सहेज कर रखा हुआ है। और पद, प्रतिष्ठिता, प्रभाव बढ़ाने के लिये यही फार्मूला अपनाया जा रहा है। यदि कोई सभी ''भारतीयों के एक डीएनए'' होने की बात कह दे तो उस पर हमले होते हैं। शाब्दिक और आरोपात्मक हमलों की बाढ़ आ जाती है। कोई ''सबका साथ सबका विकास'' का नारा लगाये तो शोर किया जाता है। इतना शोर कि कुछ साफ न दिखाई दे न सुनाई दे।

एक आश्चर्यजनक बात यह है कि वामपंथी भले पूरी दुनियाँ में साम्यवाद का नारा लगायें लेकिन वे भारत में वर्ण संघर्ष का ताना बाना बनाते हैं। तालिबानी मानसिकता के लोग भी सनातनी समाज के दो फाड़ करने के लिये दलित मुस्लिम एकजुटता का नारा लगाते हैं। यदि इस प्रकार विभाजन के नारे लगे, वर्ग, वर्ण और समाज को बांटने के नारे लगेंगे तो कैसे स्वाधीनता का अमृत महोत्सव सार्थक होगा। स्वाधीनता केवल राजनैतिक नहीं हो सकती, पराधीन भारत में केवल सत्ता प्राप्त करने भर के लिये संघर्ष नहीं हुआ था। संघर्ष तो स्वाधीनता के लिये हुआ था।

उस संघर्ष में कोई भेद न था। भला भीमा नायक ने, टंटया भील ने बिरसा मुंडा ने केवल आदिवासियों की रक्षा के लिये प्राण दिये थे या चंद्रशेखर आजाद ने जाति धर्म पूछकर भगतसिंह को अपने समूह में सम्मिलित किया था या सुखदेव और राजगुरु ने अशफाक उल्ला से जाति धर्म पूछा था? या रानी लक्ष्मीबाई ने झलकारी देवी को जाति धर्म पूछकर सखी बनाया था। आखिर वनवासी ऊदा देवी ने लखनऊ में अंग्रेज सिपाहियों की लाशों के ढेर किसके लिये लगाये थे। मिहिर सेन के संघर्ष में क्या केवल गुर्जर या राजपूत ही थे? शिवाजी महाराज के संघर्ष में भी सभी थे। महाराणा प्रताप के साथ प्राण देने वाले अधिकांश सैनिक भील वनवासी थे। तब इन वीरों और बलिदानियों के नाम पर वर्ग वर्ण भेद की बात क्यों होती है। आज हम जब स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो इस विषय पर भी विचार होना चाहिए कि अंग्रेज किस नीति से सफल हुये थे। हमारी कमजोरियाँ क्या थीं। उनके जाने के बाद कौन से षडयंत्र हैं जिनसे मुक्ति न हो सकी। हमें इन षडयंत्रों को भी उजागर करना चाहिये तभी भारतीय स्वाधीनता के अमृतत्व की यात्रा सफल होगी और भारत विश्व में अपनी खोई प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेगा। ▪

जनजातीय गौरव दिवस पर प्रधानमंत्री ने शुभकामनाऐं दी

प्रधानमंत्री ने भगवान बिरसा मुंडा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि 15 नवंबर आदिवासी परंपरा को मनाने का दिन है क्योंकि भगवान बिरसा मुंडा न केवल हमारे स्वतंत्रता संग्राम के नायक थे, बल्कि वह हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ऊर्जा के संवाहक थे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि भगवान बिरसा मुंडा और करोड़ों जनजातीय वीरों के सपनों को साकार करने के लिए राष्ट्र ''पंच प्राण'' की ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रहा है। जनजातीय गौरव दिवस के माध्यम से देश की आदिवासी विरासत पर गर्व व्यक्त करना और आदिवासी समुदाय के विकास का संकल्प इसी ऊर्जा का हिस्सा है।

प्रधानमंत्री ने भगवान बिरसा मुंडा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि 15 नवंबर आदिवासी परंपरा को मनाने का दिन है क्योंकि भगवान बिरसा मुंडा न केवल हमारे स्वतंत्रता संग्राम के नायक थे, बल्कि वह हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ऊर्जा के संवाहक थे।

प्रधानमंत्री ने स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय समुदाय के योगदान को नमन करते हुए प्रमुख आदिवासी आंदोलनों और स्वतंत्रता के लिए लड़े गए युद्धों का स्मरण किया। उन्होंने तिलक मांझी के नेतृत्व में दामिन संग्राम, बुद्ध भगत के नेतृत्व में लरका आंदोलन, सिद्धू-कान्हू क्रांति, ताना भगत आंदोलन, वेगड़ा भील आंदोलन, नायकड़ा आंदोलन, संत जोरिया परमेश्वर और रूप सिंह नायक, लिम्दी दाहोद युद्ध, अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में मानगढ़ और रंपा आंदोलन के गोविंद गुरु जी को भी याद किया।

प्रधानमंत्री ने जनजातीय योगदान को स्वीकार करने और उत्सव मनाने के कदमों को सूचीबद्ध किया। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में जनजातीय संग्रहालयों और जन धन, गोवर्धन, वन धन, स्वयं सहायता समूहों, स्वच्छ भारत, पीएम आवास योजना, मातृत्व वंदना योजना, ग्रामीण सड़क योजना, मोबाइल कनेक्टिविटी, एकलव्य स्कूल, वन उत्पादों के लिए 90 प्रतिशत तक एमएसपी, सिकल सेल एनीमिया, जनजातीय अनुसंधान संस्थान, निःशुल्क कोरोना वैक्सीन और मिशन इंद्रधनुष जैसी योजनाओं के संदर्भ में भी अपने विचार व्यक्त किए जिनसे जनजातीय समुदाय को बहुत लाभ मिला है। प्रधानमंत्री ने आदिवासी समाज की वीरता, सामुदायिक जीवन और समावेश का भी उल्लेख किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि ''भारत को इस भव्य विरासत से सीखकर अपने भविष्य को आकार देना है। मुझे विश्वास है कि जनजातीय गौरव दिवस इसके लिए एक अवसर और माध्यम बनेगा।'' ▪

देश विरोधियों को जवाब देगा, विकास का संदेश नीचे तक ले जाएगा सुघोष अभियान- विष्णुदत्त शर्मा

समाज की जो भी चाहत और जरूरत है, भाजपा को वहां पहुंचना है। सूचना क्रांति के बाद नेटवर्क भी गांव-गांव की मूलभूत जरूरत बन गया है और भाजपा के कार्यकर्ता सोशल नेटवर्क से लोगों को जोड़ेंगे। हमारा लक्ष्य हर बूथ पर 51 प्रतिशत वोट हासिल करना है।

यह अभियान इस लक्ष्य को हासिल करने में सहायक होगा और हमारी ताकत बनेगा। इस अभियान के दम पर हम आने वाले चुनाव में बड़ी जीत हासिल करेंगे।

आईटी एवं सोशल मीडिया विभाग द्वारा पूरे प्रदेश में चलाए जाने वाले सुघोष मंडल प्रशिक्षण अभियान-2022 के दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं को जो काम करना है, जो जिम्मेदारी निभानी है, वह कोई सामान्य काम नहीं है। यह अभियान आगे चलकर देश की राजनीति के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाने जा रहा है। इस अभियान के माध्यम से एक तरफ जहां झूठ और भ्रम फैलाकर देश तोड़ने की साजिश रचने वाले देश विरोधियों को जवाब दिया जाएगा, वहीं हमारी सरकारों की योजनाओं के माध्यम से विकास का संदेश बूथ स्तर तक ले जाया जाएगा।

राजनीतिक दल में तकनीकी क्रांति है सुघोष

सारी दुनिया तकनीकी के जरिए आगे बढऩा चाहती है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नड्डा जी, श्री अमित शाह जी ने अपने काम से यह बताया है कि तकनीकी क्रांति किस तरह की जा सकती है। कोरोना काल में जब लोग एक-दूसरे से मिल नहीं सकते थे, हमने वर्चुअल सभाएं और बैठकें की। हमारी आईटी और सोशल मीडिया की टीम ने इस तकनीकी को अपनाया और हम सभी को इसमें पारंगत बनाया। बूथ डिजिटाइजेशन के काम में हमने सफलतापूर्वक तकनीकी का उपयोग किया। अब हम संगठन एप पर प्रत्येक बूथ की जानकारी प्रदेश कार्यालय में बैठकर देख सकते हैं। हमारी आईटी और सोशल मीडिया की टीम ने तकनीकी के क्षेत्र में पिछड़े कहे जाने वाले मध्यप्रदेश को अग्रणी बना दिया है, जिसके लिए टीम के सभी लोग और पार्टी कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं। अपने लोगों को और सक्षम बनाने के लिए अब हम ''सुघोष मंडल प्रशिक्षण अभियान-2022'' शुरू करने जा रहे हैं, जो एक तकनीकी क्रांति साबित होगा।

हमें देश विरोधियों को जवाब देना है

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की सरकार ने देश की सेनाओं को सुसज्जित कर और अधिकार संपन्न बनाकर देश को सुरक्षित बना दिया है। अब कहीं विस्फोट नहीं होते। सीमाएं सुरक्षित हैं, लेकिन देश के अंदर कई ऐसे लोग हैं, जो झूठ और भ्रम फैलाकर देश तोडऩे का एजेंडा चला रहे हैं। लोगों को भड़का रहे हैं। अभी हाल ही में कांग्रेस ने एक ऐसा वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया है, जिसमें लोग खाद की बोरियां लूट रहे हैं। इसे कांग्रेस खाद की कमी के तौर पर प्रचारित कर रही है, लेकिन वास्तव में कांग्रेस के एक विधायक ने ही दुकान शटर खोलकर लोगों को खाद की बोरियां लूट लेने के लिए कहा था। इन लोगों को हम सोशल मीडिया पर सही तरीके से जवाब दे सकें , इसके लिए हमारे कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण हर स्तर पर आवश्यक है।

हमारी ताकत बनेगा यह अभियान

हमने जब बूथ डिजिटाइजेशन का काम शुरू किया था, तब किसी को यह कल्पना नहीं थी कि 64 हजार बूथ डिजिटल हो जाएंगे। लेकिन हमारे कार्यकर्ताओं ने इसे संभव बनाया। अब हम सुघोष अभियान के अंतर्गत सभी 64634 बूथों पर दो-दो नौजवान तैयार करने जा रहे हैं, जो आईटी, सोशल मीडिया के उपयोग में पारंगत होंगे। इस अभियान के माध्यम से हम अपनी सरकार के कामों और योजनाओं को तो बूथ स्तर तक पहुंचा ही पाएंगे, हर बूथ को सर्वस्पर्शी और सर्वव्यापी भी बना सकेंगे। समाज की जो भी चाहत और जरूरत है, भाजपा को वहां पहुंचना है। सूचना क्रांति के बाद नेटवर्क भी गांव-गांव की मूलभूत जरूरत बन गया है और भाजपा के कार्यकर्ता सोशल नेटवर्क से लोगों को जोड़ेंगे। हमारा लक्ष्य हर बूथ पर 51 प्रतिशत वोट हासिल करना है। यह अभियान इस लक्ष्य को हासिल करने में सहायक होगा और हमारी ताकत बनेगा। इस अभियान के दम पर हम आने वाले चुनाव में बड़ी जीत हासिल करेंगे। ▪

सिस्टम को पारदर्शी बनाना हमारी जिम्मेदारी: विष्णुदत्त शर्मा

मध्यप्रदेश के पार्टी संगठन को हमारे पूर्वजों ने अपने त्याग, तपस्या और परिश्रम से सींचा है। तब जाकर मध्यप्रदेश का पार्टी संगठन देश में नं.1 बना है। इसे वित्तीय प्रबंधन के मामले में भी शिखर पर पहुंचाना है और यह जिम्मेदारी सभी कोषाध्यक्षों, सह कोषाध्यक्षों की है। मध्यप्रदेश ने काम की एक पद्धति विकसित की है, इसे आगे बढ़ाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

भारतीय जनता पार्टी आज दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल है। दुनिया के कई देशों के लोग पार्टी के सिस्टम को देखने आते हैं कि इतना विशाल संगठन आखिर काम कैसे करता है? हम सभी इस सिस्टम के अंग हैं और इसे पारदर्शी बनाना हम सबकी जिम्मेदारी है। यही हमारा केंद्रीय नेतृत्व चाहता है। वित्तीय पारदर्शिता के लिए ही हमारे प्रधानमंत्री जी ने शपथ लेने के बाद सबसे पहले जनधन खाते खुलवाए, ताकि डीबीटी के माध्यम से पूरी पारदर्शिता के साथ राशि संबंधित व्यक्ति के खाते में पहुंच सके। हमें भी प्रधानमंत्री जी के इस अभियान में सहभागी बनना है। कोषाध्यक्षों की जिम्मेदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए वे अपनी भूमिका को पहचानें और उसके अनुरूप काम करें।

मध्यप्रदेश के पार्टी संगठन को हमारे पूर्वजों ने अपने त्याग, तपस्या और परिश्रम से सींचा है। तब जाकर मध्यप्रदेश का पार्टी संगठन देश में नं.1 बना है।

इसे वित्तीय प्रबंधन के मामले में भी शिखर पर पहुंचाना है और यह जिम्मेदारी सभी कोषाध्यक्षों, सह कोषाध्यक्षों की है। मध्यप्रदेश ने काम की एक पद्धति विकसित की है, इसे आगे बढ़ाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

कोष संबंधी काम कोषाध्यक्ष की सहमति के बाद ही हों: हितानंद जी

सोशल मीडिया एक शक्तिशाली माध्यम है और इसके समुचित उपयोग के लिए हमें हर बूथ पर दो युवा कार्यकर्ताओं को जोड़ने का काम जल्द ही पूरा करना है। अभी मतदाता सूची के पुनरीक्षण का काम चल रहा है। हमें नव मतदाताओं को सूची में जोड़ने के लिए स्कूलों में जाकर संपर्क करना चाहिए। अभी हमने बूथों के डिजिटाइजेशन के लिए अभियान चलाया था, अब हमें बूथ सशक्तीकरण के लिए अभियान चलाना है। इसके साथ ही प्रत्येक बूथ पर 10 प्रतिशत वोट शेयर बढ़ाने के लिए एक्शन प्लान भी तैयार करना है। यह बैठक वास्तव में कोष संबंधी विषयों को लेकर एक प्रशिक्षण है। जिला स्तर पर कोष संबंधी कोई भी काम कोषाध्यक्ष की सहमति के बाद ही किया जाना चाहिए तथा कोष संबंधी निर्णय एक टोली के द्वारा लिये जाना चाहिए।

पोर्टल पर दर्ज करें मिलने वाले डोनेशन की जानकारी: वेणी थापर

पार्टी की राष्ट्रीय अंकेक्षक सुश्री वेणी थापर ने बैठक में मार्गदर्शन देते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी की एक ही बैलेंसशीट तैयार होती है, जिसमें प्रत्येक जिले का हिसाब-किताब शामिल होता है। जब तक प्रत्येक जिले की जानकारी इसमें शामिल न हो जाए, बैलेंस शीट रुकी रहती है। इसलिए सभी कोषाध्यक्ष अपनी जानकारी और बैलेंस शीट समय पर भेजें। पार्टी ने मिलने वाले डोनेशन के लिए एक पोर्टल तैयार किया है, जिसे हमें जिला स्तर तक पहुंचाना है। सभी कोषाध्यक्ष पार्टी को मिलने पर डोनेशन की जानकारी इस पोर्टल पर ही दर्ज करें।

डिजिटल सॉफ्टवेयर से पारदर्शी होगा सिस्टम: अखिलेश जैन

पारदर्शिता के प्रति प्रधानमंत्री जी की मंशा के अनुरूप पार्टी ने भी अपने वित्तीय कामकाज के लिए एक डिजिटल सॉफ्टवेयर तैयार किया है। आने वाले तीन महीनों में इस पर काम शुरू हो जाएगा। इसके बाद किसी भी जिले के एकाउंटस प्रदेश कार्यालय में बैठकर देखे जा सकेंगे साथ ही पारदर्शिता भी बढ़ेगी। कोषाध्यक्षों के प्रशिक्षण के लिए हर दो माह में कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा। ▪

G-20 की World Population में दो-तिहाई, World Trade में तीन-चौथाई, और World GDP में 50% भागीदारी है। आप कल्पना कर सकते हैं - भारत 1 दिसंबर से इतने बड़े समूह की, इतने सामर्थ्यवान समूह की, अध्यक्षता करने जा रहा है।

भारत के लिए, हर भारतवासी के लिए, ये कितना बड़ा अवसर आया है। ये, इसलिए भी और विशेष हो जाता है क्योंकि ये जिम्मेदारी भारत को आजादी के अमृतकाल में मिली है।

देश के स्वर्णिम भविष्य में सबका स्वर्णिम भविष्य है

मन की बात का 95वाँ एपिसोड है। हम बहुत तेजी से 'मन की बात' के शतक की तरफ बढ़ रहे हैं। ये कार्यक्रम मेरे लिए 130 करोड़ देशवासियों से जुड़ने का एक और माध्यम है। हर एपिसोड से पहले, गाँव-शहरों से आये ढेर सारे पत्रों को पढ़ना, बच्चों से लेकर बुजुर्गों के audio message को सुनना, ये मेरे लिए एक आध्यात्मिक अनुभव की तरह होता है।

कार्यक्रम की शुरुआत एक अनूठे उपहार की चर्चा के साथ करना चाहता हूँ। तेलंगाना के राजन्ना सिर्सिल्ला जिले में एक बुनकर भाई हैं - येल्धी हरिप्रसाद गारू। उन्होंने मुझे अपने हाथों से G-20 का यह logo बुन करके भेजा है। ये शानदार उपहार देखकर तो मैं हैरान ही रह गया। हरिप्रसाद जी को अपनी कला में इतनी महारथ हासिल है कि वो सबका ध्यान आकर्षित कर लेते हैं। हरिप्रसाद जी ने हाथ से बुने G-20 के इस logo के साथ ही मुझे एक चिट्ठी भी भेजी है। इसमें उन्होंने लिखा है कि अगले साल G-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करना भारत के लिए बड़े ही गौरव की बात है। देश की इसी उपलब्धि की खुशी में उन्होंने G-20 का यह Logo अपने हाथों से तैयार किया है। बुनाई की यह बेहतरीन प्रतिभा उन्हें अपने पिता से विरासत में मिली है और आज वे पूरे Passion के साथ इसमें जुटे हुए हैं।

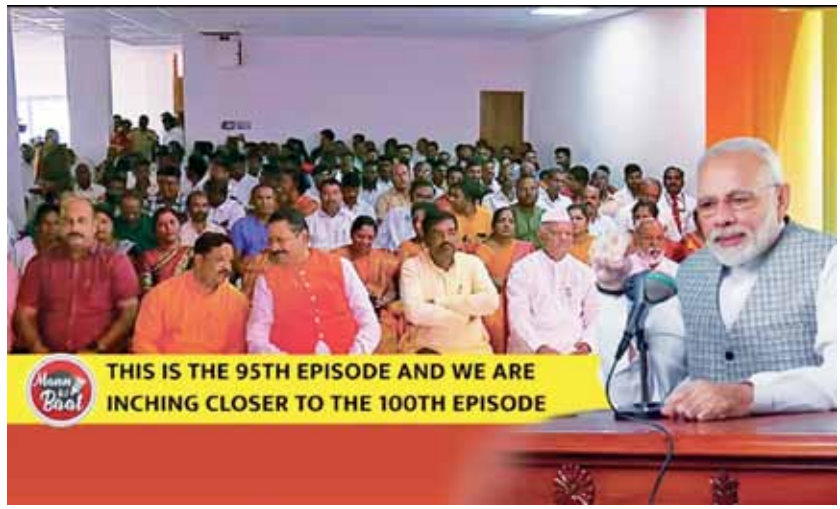

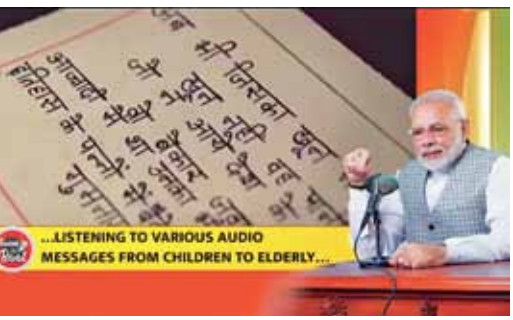

कुछ दिन पहले ही मुझे G-20 Logo और भारत की Presidency की website को launch करने का सौभाग्य मिला था। इस Logo का चुनाव एक Public contest के जरिए हुआ था। जब मुझे हरिप्रसाद गारू द्वारा भेजा गया ये उपहार मिला, तो मेरे मन में एक और विचार उठा। तेलंगाना के किसी जिले में बैठा व्यक्ति भी G-20 जैसी summit से खुद को कितना connect महसूस कर सकता है, ये देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। आज हरिप्रसाद गारू जैसे अनेकों लोगों ने मुझे चिट्ठी भेजकर ये लिखा है कि देश को इतने बड़े summit की मेजबानी मिलने से उनका सीना चौड़ा हो गया है। मैं आपसे पुणे के रहने वाले सुब्बा राव चिल्लारा जी और कोलकाता के तुषार जगमोहन उनके संदेशे का भी जिक्र करूँगा। इन्होंने G-20 को लेकर भारत के Pro-active efforts की बहुत सराहना की है।

G-20 की World Population में दो-तिहाई, World Trade में तीन-चौथाई, और World GDP में 50% भागीदारी है। आप कल्पना कर सकते हैं - भारत 1 दिसंबर से इतने बड़े समूह की, इतने सामर्थ्यवान समूह की, अध्यक्षता करने जा रहा है। भारत के लिए, हर भारतवासी के लिए, ये कितना बड़ा अवसर आया है। ये, इसलिए भी और विशेष हो जाता है क्योंकि ये जिम्मेदारी भारत को आजादी के अमृतकाल में मिली है।

G-20 की अध्यक्षता, हमारे लिए एक बड़ी opportunity बनकर आई है। हमें इस मौके का पूरा उपयोग करते हुए Global Good, विश्व कल्याण पर focus करना है। चाहे Peace हो या Unity, पर्यावरण को लेकर संवेदनशीलता की बात हो, या फिर Sustainable Development की, भारत के पास, इनसे जुड़ी चुनौतियों का समाधान है। हमने One Earth, One Family, One Future की जो theme दी है, उससे वसुधैव कुटुम्बकम के लिए हमारी प्रतिबद्धता जाहिर

होती है। हम हमेशा कहते हैं -

ॐ सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु ।
सर्वेषां शान्तिर्भवतु ।
सर्वेषां पुर्णंभवतु ।
सर्वेषां मङ्गलंभवतु ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अर्थात सबका कल्याण हो, सबको शांति मिले, सबको पूर्णता मिले और सबका मंगल हो। आने वाले दिनों में, देश के अलग-अलग हिस्सों में, G-20 से जुड़े अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस दौरान, दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से लोगों को आपके राज्यों में आने का मौका मिलेगा। यहाँ की संस्कृति के विविध और विशिष्ट रंगों को दुनिया के सामने लाएंगे और आपको ये भी याद रखना है कि G-20 में आने वाले लोग, भले ही अभी एक Delegate के रूप में आयें, लेकिन भविष्य के tourist भी हैं। सभी से एक आग्रह है, विशेष तौर से युवा साथियों से, हरिप्रसाद गारू की तरह ही, आप भी, किसी-ना-किसी रूप में G-20 से जरुर जुड़ें। कपड़े पर G-20 का भारतीय Logo, बहुत cool तरीके से, stylish तरीके से, बनाया जा सकता है, छापा जा सकता है। मैं स्कूलों, कॉलेजों, यूनिवर्सिटीज से भी आग्रह करूंगा कि वो अपने यहाँ G-20 से जुड़ी चर्चा, परिचर्चा, competition कराने के अवसर बनाएं। आप G20.in website पर जायेंगे तो आपको अपनी रूचि के अनुसार वहाँ बहुत सारी चीजें मिल जाएंगी।

18 नवंबर को पूरे देश ने Space Sector

में एक नया इतिहास बनते देखा। इस दिन भारत ने अपने पहले ऐसे Rocket को अंतरिक्ष में भेजा, जिसे भारत के Private Sector ने Design और तैयार किया था। इस Rocket का नाम है-'विक्रम-एस'। श्रीहरिकोटा से स्वदेशी Space Start-up के इस पहले रॉकेट ने जैसे ही ऐतिहासिक उड़ान भरी, हर भारतीय का सिर गर्व से ऊँचा हो गया।

'विक्रम-एस' Rocket कई सारी खूबियों से लैस है। दूसरे Rocket की तुलना में यह हल्का भी है, और सस्ता भी है। इसकी Development cost अंतरिक्ष अभियान से जुड़े दूसरे देशों की लागत से भी काफी कम है। कम कीमत में विश्वस्तरीय standard, space technology में अब तो ये भारत की पहचान बन चुकी है। इस Rocket को बनाने में एक और आधुनिक technology का इस्तेमाल हुआ है। आप ये जानकर हैरान रह जाएंगे कि इस Rocket के कुछ जरुरी हिस्से 3D Printing के जरिए बनाए गए हैं। सही में, 'विक्रम-एस' के Launch Mission को जो 'प्रारम्भ' नाम दिया गया है, वो बिल्कुल fit बैठता है। ये भारत में private space sector के लिए एक नए युग के उदय का प्रतीक है। ये देश में आत्मविश्वास से भरे एक नए युग का आरंभ है। आप कल्पना कर सकते हैं जो बच्चे कभी हाथ से कागज का हवाई जहाज बनाकर उड़ाया करते थे, उन्हें अब भारत में ही हवाई जहाज बनाने का मौका मिल रहा है। आप कल्पना कर सकते हैं कि जो बच्चे कभी चाँद-तारों को देखकर आसमान में आकृतियाँ बनाया करते थे, उन्हें अब भारत में ही रॉकेट बनाने का मौका मिल रहा है। space को private sector के लिए खोले जाने के बाद, युवाओं के ये सपने भी साकार हो रहे हैं। Rocket बना रहे ये युवा मानो कह रहे हैं - Sky is not the limit.

भारत space के sector में अपनी सफलता, अपने पड़ोसी देशों से भी साझा कर रहा है। भारत ने एक satellite launch की, जिसे भारत और भूटान ने मिलकर develop किया है। ये satellite बहुत ही अच्छे resolution की तस्वीरें भेजेगी जिससे भूटान को अपने प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में मदद मिलेगी। इस satellite की launching, भारत-भूटान के मजबूत सबंधों का प्रतिबिंब है।

आपने गौर किया होगा पिछले कुछ 'मन की बात' में हमने Space, Tech, Innovation पर खूब बात की है। इसकी दो खास वजह है, एक तो यह हमारे युवा इस क्षेत्र में बहुत ही शानदार काम कर रहें हैं। They are thinking Big and Achieving Big।

अब वे छोटी-छोटी उपलब्धियों से संतुष्ट होने वाले नहीं हैं। दूसरी यह कि Innovation और value creation के इस रोमांचक सफर में वे अपने बाकी युवा साथियों और Start-ups को भी Encourage कर रहें हैं।

जब हम Technology से जुड़े Innovations की बात कर रहें हैं, तो Drones को कैसे भूल सकते हैं? Drone के क्षेत्र में भी भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। कुछ दिनों पहले हमने देखा कि कैसे हिमाचल

18 नवंबर को पूरे देश ने Space Sector में एक नया इतिहास बनते देखा। इस दिन भारत ने अपने पहले ऐसे Rocket को अंतरिक्ष में भेजा, जिसे भारत के Private Sector ने Design और तैयार किया था। इस Rocket का नाम है-'विक्रम-एस'।

श्रीहरिकोटा से स्वदेशी Space Start-up के इस पहले रॉकेट ने जैसे ही ऐतिहासिक उड़ान भरी, हर भारतीय का सिर गर्व से ऊँचा हो गया।

प्रदेश के किन्नौर में Drones के जरिए सेब Transport किये गए। किन्नौर, हिमाचल का दूर-सुदूर जिला है और वहां इस मौसम में भारी बर्फ रहा करती है। इतनी बर्फ बारी में, किन्नौर का हफ्तों तक, राज्य के बाकी हिस्से से संपर्क बहुत मुश्किल हो जाता है। ऐसे में वहां से सेब का Transportation भी उतना ही कठिन होता है। अब Drone Technology से हिमाचल के स्वादिष्ट किन्नौरी सेब लोगों तक और जल्दी पहुँचने लगेंगे। इससे हमारे किसान

भाई-बहनों का खर्च कम होगा - सेब समय पर मंडी पहुँच पायेगा, सेब की बर्बादी कम होगी।

हमारे देशवासी अपने Innovations से उन चीजों को भी संभव बना रहे हैं, जिसकी पहले कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। इसे देखकर किसे खुशी नहीं होगी? हाल के वर्षों में हमारे देश ने उपलब्धियों का एक लम्बा सफर तय किया है। मुझे पूरा विश्वास है कि हम भारतीय और विशेषकर हमारी युवा-पीढ़ी अब रुकने वाली नहीं है।

एक छोटी सी clip

##(Song)##

आप सभी ने इस गीत को कभी-न-कभी जरुर सुना होगा। आखिर यह बापू का पसंदीदा गीत जो है, लेकिन, अगर मैं ये कहूं कि इसे सुरों में पिरोने वाले गायक Greece के हैं, तो आप हैरान जरुर हो जाएंगे! और ये बात आपको गर्व से भी भर देगी। इस गीत को गाने वाले Greece के गायक हैं - "Konstantinos Kalaitzis"। उन्होंने इसे गांधीजी के 150वें जन्म-जयंती समारोह के दौरान गया था। लेकिन आज मैं उनकी चर्चा किसी और वजह से कर रहा हूँ। उनके मन में India और Indian Music को लेकर गजब का Passion है। भारत से उन्हें इतना लगाव है, पिछले 42 (बयालीस) वर्षों में वे लगभग हर वर्ष भारत आए हैं। उन्होंने भारतीय संगीत के Origin, अलग-अलग Indian Musical systems विविध प्रकार के राग, ताल और रास के साथ ही विभिन्न घरानों के बारे में भी study की है। उन्होंने, भारतीय संगीत की कई महान विभूतियों के योगदान का अध्ययन किया है, भारत के Classical dances के अलग-अलग पहलुओं को भी उन्होंने करीब से समझा है। भारत से जुड़े अपने इन तमाम अनुभवों को अब उन्होंने एक पुस्तक में बहुत ही खूबसूरती से पिरोया है। Indian Music नाम की उनकी book में लगभग 760 तस्वीरें हैं। इनमें से अधिकांश तस्वीरें उन्होंने खुद ही खींची है। दूसरे देशों में भारतीय संस्कृति को लेकर ऐसा उत्साह और आकर्षण वाकई आनंद से भर देने वाला है।

कुछ सप्ताह पहले एक और खबर आई थी जो हमें गर्व से भरने वाली है। आपको जानकर अच्छा लगेगा कि बीते 8 वर्षों में भारत से Musical instruments का Export साढ़े तीन गुना बढ़ गया है। Electrical Musical Instruments की बात करें तो इनका Export 60 गुना बढ़ा है। इससे पता चलता है कि भारतीय संस्कृति और संगीत का craze दुनिया भर में बढ़ रहा है। Indian Musical Instruments के सबसे बड़े

खरीदार USA, Germany, France, Japan और UK जैसे विकसित देश हैं। हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है कि हमारे देश में Music, Dance और Art की इतनी समृद्ध विरासत है।

महान मनीषी कवि भर्तृहरि को हम सब उनके द्वारा रचित 'नीति शतक' के लिए जानते हैं। एक श्लोक में वे कहते हैं कि कला, संगीत और साहित्य से हमारा लगाव ही मानवता की असली पहचान है। वास्तव में, हमारी संस्कृति इसे Humanity से भी ऊपर Divinity तक ले जाती है। वेदों में सामवेद को तो हमारे विविध संगीतों का स्त्रोत कहा गया है। माँ सरस्वती की वीणा हो, भगवान श्रीकृष्ण की बांसुरी हो, या फिर भोलेनाथ का डमरू, हमारे देवी-देवता भी संगीत से अलग नहीं है। हम भारतीय, हर चीज में संगीत तलाश ही लेते हैं। चाहे वह नदी की कलकल हो, बारिश की बूंदें हों, पक्षियों का कलरव हो या फिर हवा का गूँजता स्वर, हमारी सभ्यता में संगीत हर तरफ समाया हुआ

है। यह संगीत न सिर्फ शरीर को सुकून देता है, बल्कि, मन को भी आनंदित करता है। संगीत हमारे समाज को भी जोड़ता है। यदि भांगड़ा और लावणी में जोश और आनन्द का भाव है, तो रविन्द्र संगीत, हमारी आत्मा को आह्लादित कर देता है। देशभर के आदिवासियों की अलग-अलग तरह की संगीत परम्पराएं हैं। ये हमें आपस में मिलजुल कर और प्रकृति के साथ रहने की प्रेरणा देती है।

संगीत की हमारी विधाओं ने, न केवल हमारी संस्कृति को समृद्ध किया है, बल्कि दुनिया भर के संगीत पर अपनी अमिट छाप भी छोड़ी है। भारतीय संगीत की ख्याति विश्व के कोने-कोने में फैल चुकी है। आप लोगों को एक और audio clip सुनाता हूँ।

##(song)##

आप सोच रहे होंगे कि घर के पास में किसी मंदिर में भजन कीर्तन चल रहा है। लेकिन ये आवाज भी आप तक भारत से हजारों मील दूर बसे South American देश Guyana से आई है। 19वीं और 20वीं सदी में बड़ी संख्या में हमारे यहाँ से लोग Guyana गए थे। वे यहाँ से भारत की कई परम्पराएं भी अपने साथ ले गए थे। उदाहरण के तौर पर, जैसे हम भारत में होली मनाते हैं, Guyana में भी होली का रंग सिर चढ़कर बोलता है। जहाँ होली के रंग होते हैं, वहाँ फगवा, यानि, फगुआ का संगीत भी होता है। Guyana के फगवा में वहाँ भगवान राम और भगवान कृष्ण से जुड़े विवाह के गीत गाने की एक विशेष परंपरा है। इन गीतों को चौताल कहा जाता है। इन्हें उसी प्रकार की धुन और High Pitch पर गाया जाता है, जैसा हमारे यहाँ होता है। इतना ही नहीं, Guyana में चौताल Competition भी होता है। इसी तरह बहुत सारे भारतीय, विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग Fiji भी गए थे। वे पारंपरिक भजन-कीर्तन गाते थे, जिसमें मुख्य रूप से रामचरितमानस के दोहे होते थे। उन्होंने Fiji में भी भजन-कीर्तन से जुड़ी कई मंडलियाँ बना डालीं। Fiji में रामायण मंडली के नाम से आज भी दो हजार से ज्यादा भजन-कीर्तन मंडलियाँ हैं। इन्हें आज हर गाँव-मोहल्ले में देखा जा सकता है। मैंने तो यहाँ केवल कुछ ही उदाहरण दिए हैं। अगर आप पूरी दुनिया में देखेंगे तो ये भारतीय संगीत को चाहने वालों की ये list काफी लम्बी है।

हम सब, हमेशा इस बात पर गर्व करते हैं, कि हमारा देश दुनिया में सबसे प्राचीन परम्पराओं का घर है। इसलिए, ये हमारी जिम्मेदारी भी है कि, हम, अपनी परम्पराओं और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करें, उसका संवर्धन भी करें और हो सके उतना आगे भी बढ़ाएँ। ऐसा ही एक सराहनीय प्रयास हमारे पूर्वोत्तर राज्य नागालैंड के कुछ साथी कर रहे हैं। मुझे ये प्रयास काफी अच्छा लगा, तो मैंने सोचा इसे 'मन की बात' के श्रोताओं के साथ भी share करूँ ।

नागालैंड में नागा समाज की जीवनशैली, उनकी कला- संस्कृति और संगीत, ये हर किसी को आकर्षित करती है। ये हमारे देश की गौरवशाली विरासत का अहम हिस्सा है। नागालैंड के लोगों का जीवन और उनके skills sustainable life style के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। इन परम्पराओं और skills को बचाकर अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए वहाँ के लोगों ने एक संस्था बनाई है, जिसका नाम है -'लिडि-क्रो-यू' नागा संस्कृति के जो खूबसूरत आयाम धीरे धीरे खोने लगे थे, 'लिडि-क्रो-यू' संस्था ने उन्हें फिर से पुनर्जीवित करने का काम किया है। उदाहरण के तौर पर, नागा लोक-संगीत अपने आप में एक बहुत समृद्ध विधा है। इस संस्था ने नागा संगीत की Albums launch करने का काम शुरू किया

है। अब तक ऐसी तीन albums launch की जा चुकी हैं। ये लोग लोक-संगीत, लोक-नृत्य से जुड़ी workshops भी आयोजित करते हैं। युवाओं को इन सब चीजों के लिए training भी दी जाती है। यही नहीं, नागालैंड की पारंपरिक शैली में कपड़े बनाने, सिलाई-बुनाई जैसे जो काम, उनकी भी training युवाओं को दी जाती है। पूर्वोत्तर में bamboo से भी कितने ही तरह के Products बनाए जाते हैं। नई पीढ़ी के युवाओं को bamboo products बनाने का भी सिखाया जाता है। इससे इन युवाओं का अपनी संस्कृति से जुड़ाव तो होता ही है, साथ ही उनके लिए रोजगार के नए-नए अवसर भी पैदा होते हैं। नागा लोक-संस्कृति के बारे में ज्यादा से ज्यादा लोग जानें, इसके लिए भी 'लिडि-क्रो-यू' के लोग प्रयास करते हैं।

आपके क्षेत्र में भी ऐसी सांस्कृतिक विधाएँ और परम्पराएँ होंगी। आप भी अपने-अपने क्षेत्र में इस तरह के प्रयास कर सकते हैं। अगर आपकी जानकारी में कहीं ऐसा कोई अनूठा प्रयास हो रहा है, तो आप उसकी जानकारी मेरे साथ भी जरूर साझा करिए।

हमारे यहाँ कहा गया है -

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्

अर्थात, कोई अगर विद्या का दान कर रहा है, तो वो समाज हित में सबसे बड़ा काम कर रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में जलाया गया एक छोटा सा दीपक भी पूरे समाज को रोशन कर सकता है। मुझे यह देखकर बहुत खुशी होती है कि आज देश-भर में ऐसे कई प्रयास किए जा रहे है। यूपी

की राजधानी लखनऊ से 70-80 किलोमीटर दूर हरदोई का एक गांव है बांसा। मुझे इस गांव के जतिन ललित सिंह जी के बारे में जानकारी मिली है, जो शिक्षा की अलख जगाने में जुटे हैं। जतिन जी ने दो साल पहले यहां 'Community Library and Resource Centre' शुरू किया था। उनके इस Library में हिंदी और अंग्रेजी साहित्य, कंप्यूटर, लॉ और कई सरकारी परीक्षाओं की तैयारियों से जुड़ी 3000 से अधिक किताबें मौजूद हैं। इस Library में बच्चों की पसंद का भी पूरा ख्याल रखा गया है। यहां मौजूद comics की किताबें हों या फिर Educational Toys, बच्चों को खूब भा रहे हैं। छोटे बच्चे खेल-खेल में यहां नई-नई चीजें सीखने आते हैं। पढ़ाई Offline हो या फिर Online, करीब 40 Volunteers इस Centre पर Students को Guide करने में जुटे रहते हैं। हर रोज गांव के तकरीबन 80 विद्यार्थी इस Library में पढ़ने आते हैं।

झारखंड के संजय कश्यप जी भी गरीब बच्चों के सपनों को नई उड़ाने दे रहे हैं। अपने विद्यार्थी जीवन में संजय जी को अच्छी पुस्तकों की कमी का सामना करना पड़ा था। ऐसे में उन्होंने ठान लिया कि किताबों की कमी से वे अपने क्षेत्र के बच्चों का भविष्य अंधकारमय नहीं होने देंगे। अपने इसी मिशन की वजह से आज वो झारखंड के कई जिलों में बच्चों के लिए 'Library Man' बन गए हैं। संजय जी ने जब अपनी नौकरी की शुरुआत की थी, उन्होंने पहला पुस्तकालय अपने पैतृक स्थान पर बनवाया था। नौकरी के दौरान उनका जहां भी Transfer होता था, वहां वे गरीब और आदिवासी बच्चों की पढ़ाई के लिए Library खोलने के mission में जुट जाते हैं। ऐसा करते हुए उन्होंने झारखंड के कई जिलों में बच्चों के लिए Library खोल दी है। Library खोलने का उनका यह mission आज एक सामाजिक आंदोलन का रूप ले रहा है। संजय जी हो या जतिन जी ऐसे अनेक प्रयासों के लिए मैं उनकी विशेष सराहना करता हूं।

Medical science की दुनिया ने research और innovation के साथ ही अत्याधुनिक technology और उपकरणों के सहारे काफी प्रगति की है, लेकिन कुछ बीमारियाँ, आज भी हमारे लिए, बहुत बड़ी चुनौती बनी हुई है। ऐसी ही एक बीमारी है - Muscular Dystrophy ! यह मुख्य रूप से एक ऐसी अनुवांशिक बीमारी है जो किसी भी उम्र में हो सकती है इसमें शरीर की मांसपेशियाँ कमजोर होने लगती हैं। रोगी के लिए रोजमर्रा के अपने छोटे-छोटे कामकाज करना भी मुश्किल हो जाता है ऐसे मरीजों के उपचार और देखभाल के लिए बड़े सेवा-भाव की जरूरत होती है। हमारे यहां हिमाचल प्रदेश में सोलन में एक ऐसा centre है, जो Muscular Dystrophy के मरीजों के लिए उम्मीद की नई किरण बना है। इस centre का नाम है - 'मानव मंदिर', इसे Indian Association Of Muscular Dystrophy द्वारा संचालित किया जा रहा है। मानव मंदिर अपने नाम के अनुरूप ही मानव सेवा की अदभुत मिसाल है। यहां मरीजों के लिए OPD और admission की सेवाएं तीन-चार साल पहले शुरू हुई थी। मानव मंदिर में करीब 50 मरीजों के लिए beds की सुविधा भी है। Physiotherapy, Electrotherapy, और Hydrotherapy के साथ-साथ योग-प्राणायाम की मदद से भी यहां रोग का उपचार किया जाता है।

हर तरह की hi-tech सुविधाओं के जरिए इस केंद्र में रोगियों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का भी प्रयास होता है। Muscular Dystrophy से जुड़ी एक चुनौती इसके बारे में जागरूकता का अभाव भी है। इसीलिए, यह केंद्र हिमाचल प्रदेश ही नहीं, देशभर में मरीजों के लिए जागरूकता शिविर भी आयोजित करता है। सबसे ज्यादा हौसला देने वाली बात यह है कि इस संस्था का प्रबंधन मुख्य रूप से इस बीमारी से पीड़ित लोग ही कर रहे हैं, जैसे सामाजिक कार्यकर्ता, उर्मिला बाल्दी जी, Indian Association of Muscular Dystrophy की अध्यक्ष बहन संजना गोयल जी, और इस Association

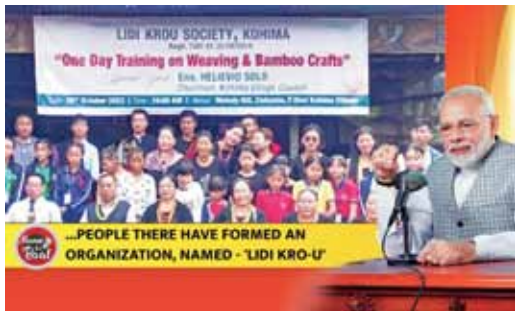

के गठन में अहम् भूमिका निभाने वाले श्रीमान् विपुल गोयल जी, इस संस्थान के लिए बहुत अहम् भूमिका निभा रहे हैं। मानव मंदिर को Hospital और Research centre के तौर पर विकसित करने की कोशिशें भी जारी हैं। इससे यहां मरीजों को और बेहतर इलाज मिल सकेगा। मैं इस दिशा में प्रयासरत सभी लोगों की हृदय से सराहना करता हूँ, साथ ही Muscular Dystrophy का सामना कर रहे सभी लोगों की बेहतरी की कामना करता हूँ।

आज 'मन की बात' में हमने देशवासियों के जिन रचनात्मक और सामाजिक कार्यों की चर्चा की, वो, देश की ऊर्जा और उत्साह के उदाहरण हैं। आज हर देशवासी किसी-न-किसी क्षेत्र में, हर स्तर पर, देश के लिए कुछ अलग से काम करने का प्रयास कर रहा है। आज की चर्चा में ही हमने देखा, G-20 जैसे अन्तर्राष्ट्रीय प्रयोजन में हमारे एक बुनकर साथी ने अपनी जिम्मेदारी समझी, उसे निभाने के लिए आगे आए। इसी तरह, कोई पर्यावरण के लिए प्रयास कर रहा है, कोई पानी के लिए काम कर रहा है, कितने ही लोग शिक्षा, चिकित्सा और Science Technology से लेकर संस्कृति-परंपराओं तक, असाधारण काम कर रहे हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि आज हमारा हर नागरिक अपने कर्तव्य को समझ रहा है जब ऐसी कर्तव्य भावना किसी राष्ट्र के नागरिकों में आ जाती है, तो उसका स्वर्णिम भविष्य अपने आप तय हो जाता है, और, देश के ही स्वर्णिम भविष्य में हम सबका भी स्वर्णिम भविष्य है। ▪

सरदार पटेल अपने कामों से ही अजर-अमर और अटल हैं- अमित शाह

सरदार वल्लभ भाई पटेल कल्पना को जमीन पर उतारने के लिए कठोर परिश्रम और पुरूषार्थ करने वाले कर्मयोगी थे। सरदार पटेल ने अपना पूरा जीवन भारत की आजादी, अखंड भारत के निर्माण और नए भारत की नींव डालने में लगा दिया। काफी लंबे समय तक सरदार पटेल को भुलाने का प्रयास किया गया। सरदार वल्लभ भाई पटेल को भारत रत्न मिलने, उनका स्मारक बनाने और उनके विचारों को संकलित करके युवा बच्चों की प्रेरणा बनाने में कई साल लग गए। सरदार पटेल अपने कामों से ही अजर-अमर और अटल हैं।

हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं और सरदार पटेल के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने 19वीं सदी में थे।

मोदी जी के नेतृत्व में देश के 3 लाख से ज्यादा गांव के करोड़ों किसानों के खेती के औजारों के लोहे को पिघलाकर Statue of Unity बनाया गया है। मोदी जी ने देश के लोगों की आशा, अपेक्षा और स्वप्नों को सरदार साहब की प्रतिमा में संजोने का काम किया है।

जमीनी समस्याओं के निवारण में सरदार पटेल जैसी मूल विचारधारा किसी के पास नहीं थी। देश में सहकारिता आंदोलन को जमीन पर उतारने का काम भी सरदार पटेल ने ही किया था। बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि सरदार पटेल ने ही अमूल का बीज बोया और त्रिभुवनदास पटेल जी ने सरदार साहब के विचार, मार्गदर्शन व प्रेरणा से ही अमूल की स्थापना की।

1920 से 1930 के बीच देश में किसानों के शोषण के खिलाफ आवाज उठ रही थी और जिस बखूबी से सरदार पटेल ने किसानों को एकत्रित किया, उसे देखकर गांधी जी ने उन्हें सरदार का नाम दिया। लक्षद्वीप, अंडमान निकोबार, जोधपुर, जूनागढ़ और हैदराबाद आज अगर भारत का हिस्सा हैं, तो वो सरदार पटेल के ही कारण हैं। सरदार पटेल के कारण ही भारत माता का मुकुट मणि कश्मीर भी आज भारत के पास है। सरदार पटेल ने ही निर्णय कर वहां सेना भेजने का काम किया था, जिसने पाकिस्तान के सैनिकों को परास्त कर कश्मीर को भारत के साथ जोड़ा।

सरदार पटेल न होते तो भारत का मानचित्र

सरदार पटेल के अहिंसा के विचार भी बहुत वास्तविक थे और उन्होंने हर समस्या का समाधान खोजकर यश पाने की इच्छा ना रखते हुए परिणाम लाने का काम किया। देश को एक ओर जहां महात्मा गांधी जी का आदर्शवादी और आध्यात्मिक नेतृत्व मिला, तो वहीं दूसरी तरफ सरदार पटेल जैसे व्यवहारिक, दूरदर्शी और वास्तविक नेता का साथ मिला।

इन दोनों के कॉम्बिनेशन ने भारत को बहुत कुछ दिया है। भारत के संविधान निर्माण की प्रक्रिया के दौरान सरदार पटेल ने कई अहम फैसले लिए।

हमें महात्मा गांधी और सरदार पटेल की कल्पना का आत्मविश्वास से भरपूर ऐसा भारत बनाना है जो दुनिया की स्पर्धा में सबसे आगे निकले और ऐसा भारत तभी बन सकता है जब हम भाषा की हीन भावना को छोड़ें।

कुछ लोगों द्वारा भुलाने के किए गए लाख प्रयासों के बावजूद सरदार पटेल आज भी देश के हर व्यक्ति के मन में बसे हुए हैं, क्योंकि वे भारत की मिट्टी की सुगंध से उपजे एक व्यावहारिक नेता और भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे, जिन्होंने कभी कुछ प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखी।

जैसा आज है वैसा न होता। आजादी के बाद सरदार पटेल ने पूरे भारत की 500 से ज्यादा रियासतों और राजाओं-रजवाड़ों को एकत्रित करने का काम किया। खराब स्वास्थ्य के बावजूद देशभर की यात्रा कर 500 से ज्यादा रियासतों को भारतीय संघ में जोड़ने का काम सरदार पटेल ने किया।

आजादी के बाद भारत में लोकतंत्र की नींव डाली गयी और सरदार वल्लभभाई पटेल के अथक प्रयासों से भारत को एक किया गया। आजादी के समय ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने कहा था कि अंग्रेजों के जाते ही भारत खंड-खंड हो जाएगा। भारतीय नेता कम क्षमता वाले है वो सत्ता के लिए लड़ेंगे, लेकिन सरदार साहब ने पूरे देश को एक किया और आज भारत उसी ब्रिटेन को पीछे छोड़ विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया।

भारत में लोकतंत्र की नींव 75 सालों में बहुत गहरी हुई है और इसी का परिणाम है कि आजादी के बाद लोगों द्वारा शांति से वोट द्वारा लिए गए फैसले को सभी ने माना और बिना किसी रक्तपात के देश में कई बार सत्ता परिवर्तन हुए। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल ने अथक परिश्रम कर रियासतों का एकीकरण तो किया ही, साथ ही साथ अखिल भारतीय सेवाओं और आसूचना ब्यूरो की नींव डाली, केंद्रीय पुलिस की कल्पना की और प्रशासनिक सेवाओं के सारे नियम भारतीय स्वरूप में ढालने का कार्य भी किया। सरदार वल्लभभाई पटेल के ही प्रयासों का परिणाम है कि भारत में केंद्र-राज्य के ढांचे में इस प्रकार विभाजन किया गया है कि किसी भी प्रकार का कोई मतभेद न हो और इसी का नतीजा है कि केंद्र-राज्यों के मध्य आज कोई अंतर्विरोध नहीं है।

सरदार पटेल के अहिंसा के विचार भी बहुत वास्तविक थे और उन्होंने हर समस्या का समाधान खोजकर यश पाने की इच्छा ना रखते हुए परिणाम लाने का काम किया। देश को एक ओर जहां महात्मा गांधी जी का आदर्शवादी और आध्यात्मिक नेतृत्व मिला, तो वहीं दूसरी तरफ सरदार पटेल जैसे व्यवहारिक, दूरदर्शी और वास्तविक नेता का साथ मिला। इन दोनों के कॉम्बिनेशन ने भारत को बहुत कुछ दिया है। भारत के संविधान निर्माण की प्रक्रिया के दौरान सरदार पटेल ने कई अहम फैसले लिए। उन्होंने बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अंबेडकर को संविधान का प्रारुप बनाने और संकलन करने का काम देने की पैरवी की और संविधान को संतुलित बनाने के लिए कई बार अपने विचार संविधान सभा के सामने रखे। इन सबके बारे में जानने और संविधान की आत्मा को समझने के लिए सरदार पटेल, के. एम. मुन्शी और बाबासाहेब डॉ. बी. आर. अंबेडकर की संविधान चर्चाओं को पढ़ना चाहिए।

आजादी के बाद के 75 साल बहुत कठिन रहे। कभी युद्ध तो कभी आतंकवाद का सामना करना पड़ा, कई वैश्विक और आर्थिक समस्याओं से भी गुजरना पड़ा, लेकिन इन सब कठिनाइयों के बावजूद भारत ने विगत 75 वर्षों में सर्वस्पर्शी और सर्वसमावेशी विकास करते हुए लोकतंत्र की नींव को गहरा किया। देश को संविधान की स्प्रिट के अनुसार चलाया और देश की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जिसके चलते दुनिया में कोई भी भारत की सीमा और सेना का अपमान करने का दुस्साहस नहीं कर सकता। भारत ने विकास को गति देते हुए दुनिया भर में अपने अर्थतंत्र को मजबूती के साथ आगे बढ़ाया है और कुछ ही सालों में इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले में भी भारत दुनिया के प्रमुख देशों के नजदीक पहुंच जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आजादी के अमृत महोत्सव को मनाने का निर्णय तीन उद्देश्य से किया।

एक, देश की आने वाली युवा पीढ़ी आजादी के आंदोलन और संघर्ष को समझे, दूसरा, 75 साल में हमने जो प्राप्त किया है हम उसको जानें और तीसरा, हम सब आजादी की शताब्दी वर्ष का लक्ष्य तय करें। कोई भी एक छोटा सा संकल्प लें और उसे पूरा करने के लिए कटिबद्ध रहना चाहिए।

सरदार पटेल विद्यालय में पूरी प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होती है, हिंदी के साथ-साथ तमिल, उर्दू और बांग्ला को भी सीखने का अवसर मिलता है। हम भारत की किसी भी भाषा व बोली को लुप्त नहीं होने देंगे। हम कोई भी भाषा सीखें मगर अपनी मातृभाषा कभी मत छोड़ें, क्योंकि व्यक्ति की क्षमता बढ़ाने, निर्णय पर पहुंचने व विश्लेषण की प्रक्रिया करने का सबसे अच्छा माध्यम उसकी मातृभाषा होती है। देश में अंग्रेजी की जानकारी को बौद्धिक क्षमता के साथ जोड़ा जाता है परन्तु भाषा मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम है, भाषा आपकी क्षमता की परिचायक नहीं है और अगर आपके अंदर क्षमता है तो दुनिया को आपको सुनना ही पड़ेगा। अभिभावकों से बच्चों के साथ अपनी मातृभाषा में बात करना चाहिए। युवाओं की यह जिम्मेदारी है कि वे भाषा के कारण बने इंफेरियारिटी कॉम्प्लेक्स के माहौल को तोड़ें। देश के विकास में योगदान का श्रेय यदि हम केवल अच्छी अंग्रेजी बोलने वाले कुछ ही लोगों को देते हैं तो अपनी भाषा में सोचने, बोलने, लिखने, रिसर्च एंड डेवलपमेंट करने वाले अधिकांश बच्चों को विकास की प्रक्रिया से काटकर सोसाइटी के अंदर दो हिस्से कर देते हैं। भाषा से हम अपनी संस्कृति और साहित्य को जानते हैं और सोचने की प्रक्रिया को ज्यादा प्रबल व प्रखर बनाते हैं। मोदी सरकार की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का भी महत्वपूर्ण आयाम है कि बच्चों की प्राथमिक शिक्षा अपनी भाषा में होनी चाहिए, टेक्निकल एजुकेशन, अनुसंधान और मेडिकल एजुकेशन भी स्थानीय भाषा में उपलब्ध होनी चाहिए।

हमें महात्मा गांधी और सरदार पटेल की कल्पना का आत्मविश्वास से भरपूर ऐसा भारत बनाना है जो दुनिया की स्पर्धा में सबसे आगे निकले और ऐसा भारत तभी बन सकता है जब हम भाषा की हीन भावना को छोड़ें। कुछ लोगों द्वारा भुलाने के किए गए लाख प्रयासों के बावजूद सरदार पटेल आज भी देश के हर व्यक्ति के मन में बसे हुए हैं, क्योंकि वे भारत की मिट्टी की सुगंध से उपजे एक व्यावहारिक नेता और भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे, जिन्होंने कभी कुछ प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखी।

लौह पुरुष सरदार पटेल ने आजादी के समय कांग्रेस की वर्किंग कमेटी में सबसे ज्यादा वोट मिलने के बाद भी देश के प्रधानमंत्री पद का त्याग कर दिया, ताकि देश के अंदर बन रही नई सरकार में विवाद न उपजे और हमारे दुश्मन मजबूत न हों। सरदार वल्लभभाई पटेल के बारे में पढ़ने और उनके बताए मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए, ताकि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आजादी की शताब्दी में भारत को दुनिया में नंबर एक बनाने के लिए चलाए गए अभियान को ताकत मिले। ▪

ठाकरेजी के जीवन को मैंने स्वयं देखा है

लालकृष्ण आडवाणी

कार्यकर्ताओं के मन में यह बात पैदा करने की कोशिश की जाती है कि हमारी विचारधारा बड़ी ताकत है, लेकिन उसके पीछे असली ताकत हमारे कुशाभाऊ जैसे आदर्श कार्यकर्ता हैं।

बहुतों को पं. दीनदयाल जी को प्रत्यक्ष देखने का शायद अवसर न मिला हो, लेकिन दीनदयाल जी की संगठन में जो भूमिका थी और जिसके कारण संगठन इतना व्यापक और मजबूत बना है, वो गुण अगर किसी में कूट-कूट कर भरे हुए थे, तो कह सकते हैं वह कुशाभाऊ ठाकरे में थे। खासकर स्वयं के बारे में कभी न सोचने की प्रवृत्ति, केवल संगठन कार्य के बारे में सोचना और उसी के लिए समर्पित जीवन बिताना। वो प्रकृति से इतने सरल थे कि पिछले दिनों में उनके देहान्त के बाद जो बातें छपी, वो पढ़-पढ़ के लोग हैरान होते हैं कि जिस पार्टी की केन्द्र में सत्ता हो और उस पार्टी का प्रमुख व्यक्ति जो उसके अध्यक्ष रहे, वह कहां रहते थे? उनके कमरे को कोई जाकर देखेगा, जहां वो रहते थे, अकल्पनीय है। इतना सादगीपूर्ण जीवन। कभी कामना नहीं की कि मैं किसी अच्छे स्थान पर रहूँ। एक बार रहना पड़ा था अध्यक्ष के नाते, लेकिन जिस दिन अध्यक्षता पूर्ण हुई उसके अगले दिन वापस आकर भाजपा मुख्यालय स्थित कमरे में रहने लगे। मुझे रायपुर या भोपाल में प्रवास के दौरान ऐसा महसूस होता है कि उनके जीवन की एक बहुत बड़ी साज पूरी हुई। हममें से जिन लोगों ने देश भर में भाजपा का कार्य देखा है, वे इस बात को स्वीकार करेंगे कि बाकी प्रदेशों में पार्टी का उतार-चढ़ाव होता रहा होगा, कभी सत्ता पक्ष बना, कभी विपक्ष बना लेकिन अगर कोई ऐसा एक क्षेत्र है कि जहां पर पार्टी का विस्तार और पार्टी का कार्य सर्वाधिक मजबूत हुआ और सबसे गहरे रूप में पार्टी का प्रभाव बढ़ा तो वो शायद मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ है। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए हजारों कार्यकर्ताओं ने परिश्रम किया है, लेकिन अगर किसी एक व्यक्ति को उसका सबसे अधिक श्रेय दिया जा सकता है तो वह कुशाभाऊ ठाकरे को है। जिन्होंने जनसंघ की स्थापना से लेकर भाजपा के इस सशक्त रूप को प्राप्त करने में अथक परिश्रम किया। पहले उन्होंने जनसंघ के मध्य भारत प्रान्त के संगठन मंत्री के रूप में कार्य किया। आगे चलकर व्यवस्था थोड़ी बदली तो संगठन मंत्री के स्थान पर मंत्री का दायित्व संभाला और फिर आगे चलकर के उनको केन्द्र में जवाबदारी मिली और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बने।

भले ही दायित्व उनका राष्ट्रीय अध्यक्ष का था, लेकन प्रकृति से वे संगठन मंत्री की भूमिका में ही रहे। सन् 1951 में जब डॉ. मुखर्जी ने जनसंघ की स्थापना की, तब जो कल्पना की थी कि एक ऐसा व्यक्ति कि जिसकी कोई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा न हो, केवल संगठन की चिंता करने वाला, कार्यकर्ताओं को जोड़ने वाला, कार्यकर्ताओं की देखभाल करने वाला हो, जिसका नाम पत्र-पत्रिकाओं में न छपे यानि मीडिया से दूर और एक मजबूत संगठन के नींव का पत्थर बनकर चले। ऐसे दायित्व वाले संगठन मंत्री हो और कुशाभाऊ इन आदर्शों की साकार प्रतिमूर्ति साबित हुए। ठीक है कि वो हमसे अलग हो गए, बिछुड़ गए। उन्हें उनके मन पर इस बात का संतोष झलकता था कि मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में, जहां उन्होंने गांव-गांव घूमकर संगठन को मजबूत बनाया, वहां पर इस प्रकार पार्टी का वर्चस्व बना है और उनके सहयोगी वहां के मुख्यमंत्री बनकर गए हैं, लेकिन ऐसा भी अनुभव होता था कि मानो उनके जीवन की सार्थकता पूरी हो गई। कुशाभाऊ कह रहे थे कि 'अब तो मेरा कार्य पूरा हो गया है। मैं वापस जा रहा हूँ' और उसके बाद मुझे याद है बिना डाक्टर की अनुमति से अशोक रोड आ गए। उनके सहयोगियों से सूचना मिली कि वो भोजन भी नहीं कर रहे हैं, दवाई भी नहीं ले रहे है और वो कह रहे है कि मेरा तो समय अब आ गया जाने का। मुझे जाने की आप छुट्टी दीजिए। मुझे जबर्दस्ती भोजन मत करवाइए। मुझे जबर्दस्ती दवाई मत दीजिए और मैं जब मिलने गया था, वो दृश्य मैं भूल नहीं सकता हूं कि किस प्रकार से एक व्यक्ति, जो कष्ट में है, लेकिन इसकी चिंता नहीं, मन ही मन में उनको लगता है कि मुझे ईश्वर ने जिस कार्य के लिए भेजा, वह अपने सामर्थ्य से पूरा किया और अब मेरे जाने का समय हो गया। इस परिस्थिति में हम लोगों ने प्रयास कर उन्हें हॉस्पिटल में भेजा, लेकिन उन्होंने अपने जीवन का अंत मान लिया था और चले गए। हां, इतना जरूर है कि बाकी महापुरूषों के बारे में लोगों से सुना जाता है, इस महापुरूष के जीवन को मुझे स्वयं देखने का सौभाग्य मिला। वे सदैव प्रेरणापुंज बने रहेंगे। राजनीतिक जीवन में एक आदर्श कार्यकर्ता कैसा होना चाहिए उसके लिए एक उदाहरण है कुशाभाऊ।

आज भारतीय जनता पार्टी के ऊपर देश की इतनी बड़ी जवाबदारी है। उसका आधार राष्ट्रवाद की विचारधारा है। मुझे याद है कि 1989 में जब भाजपा को बड़ी सफलता मिली थी और लोकसभा में हमारे 86 सांसद निर्वाचित हुए थे। जनता दल सबसे बड़ी पार्टी उभरकर आई थी और उसी दल के प्रधानमंत्री बने, तब एक पत्रिका ने 1989 के चुनाव पर टिप्पणी करते हुए छापा था और उसका शीर्षक था- Winner comes to come. माने जो विजयी दल है वो दूसरे नम्बर पर आया है। उन्होंने जनता दल को विजयी नहीं माना। भारतीय जनता पार्टी को विजयी मानकर कहा कि It has come Second और विश्लेषण करते हुए कहा कि इसके कारण लोग बड़े विश्लेषण करते है कि इस कारण हुआ, इस कारण हुआ लेकिन उसका विश्लेषण था, कांग्रेस पार्टी की जो हार हुई है, उसका कारण है कि उनके लोगों का पतन हुआ है, वे भ्रष्टाचार में फंसे है। भाजपा के बारे में यह धारणा बनी कि उसमें पतन नहीं हुआ है, ये लोग सात्विक है, अच्छे है, समाज की सेवा के लिए निःस्वार्थ भाव से काम करते है। इस पार्टी को जनता ने आगे बढ़ाया। यह विश्लेषण एक विदेशी अखबार ने किया। तब से लेकर कार्यकर्ताओ के मन में यह बात पैदा करने की कोशिश की जाती है कि हमारी विचारधारा बड़ी ताकत है, लेकिन उसके पीछे असली ताकत हमारे कुशाभाऊ जैसे आदर्श कार्यकर्ता हैं। जिसके आचरण और व्यवहार के कारण पार्टी की विश्वसनीयता बढ़ी है और इस विश्वसनीयता को जितनी मात्रा में हम सबल बनायेंगे, उतनी ही मात्रा में पार्टी आगे बढ़ती जाएगी, इसमें कोई संदेह नहीं। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने वरिष्ठ सहयोगी और हमारे लिए आदर्श बने हुए आदरणीय कुशाभाऊ को नमन् करता हूं। ▪

धर्मो रक्षति रक्षितः

पं. मदन मोहन मालवीय

सृष्टि के आदि से जब से हिन्दू जाति, आर्य-सन्तानों का कुछ इतिहास हमको मिलता है, उस समय से आज तक सब समय में और सब दशाओं में सतयुग, त्रेता और द्वापर में और कलियुग में भी, यदि हिन्दू जाति ने कोई सबसे अधिक विशेषता दिखलायी है तो वह उसका धर्म का प्रेम, धर्म का हठ है। वेदों मे और उपनिषदों में, स्मृतियों में और धर्मशास्त्रों में, इतिहासों में और पुराणों में और अन्ततः काव्यों में और नाटकों में, पृथ्वीराज के रासों में और आल्हा-ऊदल की कथा में, टाड के राजस्थान में और विदेशीय यात्रियों के लेखों में, यदि आर्य सन्तान का कोई एक गुण सबसे अधिक जाज्वल्यमान पाया गया है तो वह उसका धर्म का प्रेम है।

राजा हरिश्चन्द्र ने राज्य त्याग दिया, अपने को बेच दिया, केवल धर्म की रक्षा के लिए। दशरथजी ने अपने प्राण से अधिक प्रिय पुत्र युवराज रामचन्द्र को वन भेज दिया, और उनके विरह में अपना प्राण त्याग दिया-केवल धर्म के लिए। भगवान रामचन्द्र ने राज्य-सिंहासन की संपदा और सुख को छोड़कर वन-वन में घूमने का व्रत धारण किया, केवल अपने धर्म के लिए। जब वे वन को जाने लगे, तब माता कौशल्या ने हृदय के दुःख को रोक कर उनका जो मंगल मनाया उस समय कहा है-

यं पालयसि धर्म त्वं प्रीत्या च नियमेन च।
स वै राधवशार्दूल धर्मस्त्वामभिरक्षतु।।

अर्थात् हे रघुकुलशार्दूल! जिस धर्म का तुम प्रीति और नियम के साथ पालन करके वन को जाते हो वही धर्म तुम्हारी रक्षा करे।

पतिव्रता-शिरोमणि सीता ने धर्म ही का पालन करने में अयोध्या का सब सुख छोड़कर वनचारिणी का वेश धारण कर अपने प्राणपति के साथ वन की यात्रा की थी और सोने की लंका के स्वामी तीन लोक को कंपाने वाले प्रचंड प्रतापशाली रावण ने उनको जब अनेक प्रकार का लालच और डर दिखाया, तब धर्म ही का प्रेम था, जिसके कारण पतिव्रताओं की सिरमौर सीता ने उस पापी के सहस्रों प्रलोभनों का तिरस्कार कर उससे कहा-

श्री रघुनाथ प्रताप पतिव्रत सीता
सत नहिं टरई।

द्वापर में भगवान कृष्णचन्द्र ने धर्म की रक्षा के लिए ही कंस और उसके साथी राक्षसगणों को मारा था और उत्तरा के मरे हुए पुत्र के जिलाने के समय ही कहा था-

यथा कंसश्च केशी व धर्मेण निहतौ मया।
तेन सत्येन बालोऽद्य पुनः संजीवतादयम्।।

अर्थात् जैसे मैंने धर्मपूर्वक कंस और केशी को मारा था उसी सत्य के बल से आज यह बालक जी उठे। भगवान कृष्णचन्द्र के विषय में अधिक विस्तार करने की आवश्यकता नहीं है। यह प्रसिद्ध वचन **'यतो धर्मस्ततो कृष्णः, यतो कृष्णास्ततो जयः'** उनके समस्त उपदेश और कार्यों को संक्षेप में प्रकट करती है। इसके अतिरिक्त धर्मराज युधिष्ठिर और उनके चार धर्मचारी भाईयों का पवित्र चरित्र, आदि से अन्त तक, बड़े संकट में भी धर्म पालन करने की कथा है। उनका समस्त आचरण धर्मात्मा युधिष्ठिर के इस एक वचन से भली भाँति प्रकाशित हो जाता है कि -

मम प्रतिज्ञां च निबोध सत्यां,
वृणे धर्मममृताज्जीविताच्च।
राज्यं च पुत्राश्च यशो धनं च,
सर्वं न सत्यस्य कलामुपैति।।

अर्थात् 'मेरी प्रतिज्ञा को सत्य जानो। मैं धर्म को जीवन से और मोक्ष से भी अधिक अच्छा समझता हूं। राज्य और पुत्र एवं यश और धन-ये सत्य की एक कला के बराबर भी नहीं है।'

आधुनिक समय में जब से इस देश पर यवनों का आक्रमण प्रारम्भ हुआ, तब से भी लाखों आर्य सन्तानों और आर्य ललनाओं ने प्राण दे करके अपने धर्म की रक्षा की है और अपने रूधिर से भारतभूमि पर ये अमिट वाक्य लिख दिया है -

प्राण जाहिं बरू धर्म न जाहीं।।

चित्तौड़ और राजपूताना की अनन्य वीरभूमि में जहां आर्य ललनाओं ने चिता लगाकर अपने सुकुमार शरीर को जला देना स्वीकार किया, किन्तु अपने धर्म से डिगने का विचार तक मन में नहीं आने दिया और जिस भूमि में सहस्त्रों वीर क्षत्रीय शत्रु से लड़ते-लड़ते मर गए और उनको माथा नहीं नवाया, उसी के वीरों का यह सिंहनाद था-

जो हठ राखै धर्म की,
तेहि राखै करतार।

न केवल राजपूताना में अपितु भारतवर्ष के सभी छोटे और बड़े, ऊँचे और नीचे विभागों में हिमालय के ऊंचे शिखरों पर और समुद्र के तट पर अनन्त आर्य सन्तान कठिन से कठिन समय में भी प्राण को पण कर अपने आर्य धर्म की रक्षा करते चले आए हैं। औरंगजेब के समय में क्या-क्या अत्याचार हिन्दुओं पर नहीं हुए, कितने द्विजों के माथे का तिलक नहीं मिटा दिया गया, कितनों के जनेऊ नहीं उतार लिये गए, किन्तु उस समय भी करोड़ों हिन्दू अपने धर्म से नहीं डिगे। इतिहास के पढ़ने वालों को उस समय के विकराल अत्याचारों की कुछ आभामात्र दिखायी देती है। छत्रपति शिवाजी का नाम यदि आर्य सन्तान आज आदर, धन्यवाद और हर्ष के साथ स्मरण करती है, तो इसका कारण उस अत्याचार की पराकाष्ठा है जो हिन्दुओं को औरंगजेब के समय में सहना पड़ता था और जिससे शिवाजी ने उनको छुड़ा कर फिर आर्य धर्म को सनाथ और सजीव किया था। लेख के विस्तार करने की आवश्यकता नहीं। सब विदेशी लेखक भी इस बात को स्वीकार करते आए हैं कि इतिहास के आदि से हिन्दू समाज एक धर्मप्रधान समाज चला आया है। आर्य सन्तान धर्म को सबसे बड़ा धन मानते आए हैं। राज्य खो दिया है, धन-धान्य त्याग दिया है, बन्धुओं का बिछोह सह लिया है, और प्राण को भी त्याग दिया है, किन्तु सामर्थ्य रहते अपने धर्म का त्याग नहीं किया और कैसे करें? भगवान श्रीकृष्ण गीता में कह गए हैं-

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।

और वेदव्यास जी ने सब वेदों और पुराणों के उपदेशों के निचोड़ को महाभारत के अंत के

इस उपदेश में भर दिया है-

न जातु कामान्न भयान्न लोभात्,
धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हे तोः।
धर्मो नित्यः सुख दुःखे त्वनित्ये,
जीवो नित्यो हेतुरस्यत्व नित्यः।।

अर्थात्- 'धर्म को कभी काम के वश होकर, भय से अथवा किसी प्रकार के लोभ में पड़कर भी कभी न छोड़े। प्राण बचाने के लिए भी न छोड़े। धर्म अविनाशी है, सुख और दुख आते-जाते हैं, जीव अविनाशी है, जिन कारणों से वह देह को धारण करता है, वे अनित्य हैं।'

हमको विश्वास है कि यदि आर्य सन्तानों को उनके धर्म का उपदेश होता जायेगा, तो जब से पृथ्वीमंडल पर वेद और उपनिषद्, स्मृति और पुराण, रामायण और महाभारत स्थित है। जब तक गंगा और यमुना, सिंधु और गोदावरी और अन्य पुण्यतोया नदियां भारतभूमि पर प्रवाहित हैं, जब तक मरीचिमालि भगवान सूर्य तथा सुधा-रश्मि चन्द्रमा ईश्वर की महिमा का स्मरण दिलाते भारत के गगनमंडल में उदित होते हैं- तब तक भारत सन्तान अपने पवित्र पुरातन परम उत्कृष्ट धर्म का कदापि त्याग न करेंगे। किन्तु हमारा हृदय इस बात को सोचकर दुःखित होता है कि जिस धर्म को हमारे पूर्वजों ने, हमारे भाइयों ने और हमारी बहिनों ने अनेक प्रकार की यातनाएं सहने पर, अनेक प्रकार का लालच दिखाये जाने पर भी नहीं छोड़ा, उस धर्म की महिमा न जानने के कारण आज हम उसकी उपेक्षा करने लगे हैं। हम उस लोभ के वश में हो रहे हैं, जिसको भीष्म पितामहजी ने सब पापों का मूल कहा है और जिसके विषय में श्रीमद्भागवत में लिखा है-

यशो यशस्विनां शुद्धं श्लाध्या ये
गुणिनां गुणाः।
लोभः स्वल्पोऽपि तान् हन्ति श्वित्रो
रूपमिवेप्सितम्।।

अर्थात्- 'जिस प्रकार सुन्दर रूप को श्वेत कुष्ठ का एक छोटा सा भी दाग नष्ट कर देता है, उसी प्रकार थोड़ा सा लोभ भी यशस्वियों के शुद्ध यश को और गुणवानों के प्रशंसनीय गुणों को नष्ट कर देता है।'

जो लोग अज्ञान के कारण अपने धर्म से विमुख हो जाते हैं, उनके विषय में समस्त हिन्दू अपराधी हैं, जो अपने धर्म का ज्ञान अपने भाइयों में नहीं फैलाते।

ज्ञानं प्राप्यं तु संसारे यः परेभ्यो न यच्छति।
ज्ञानरूपी हरिस्तस्मै अप्रसन्नो हि लक्ष्यते।।

अर्थात्- 'संसार में ज्ञान प्राप्त करके, जो दूसरों को ज्ञान नहीं देता, उसके ऊपर ज्ञानरूपी ईश्वर अप्रसन्न से दिखलायी देते हैं।' ▪

प्रस्तुती - पं. सलिल मालवीय

मोड़ पर

अटल बिहारी वाजपेयी

मुझे दूर का दिखाई देता है,
मैं दीवार पर लिखा पढ़ सकता हूँ,
मगर हाथ की रेखाएँ नहीं पढ़ पाता।

सीमा के पार भड़कते शोले
मुझे दिखाई देते हैं।

पर पाँवों के इर्द-गिर्द फैली गर्म राख
नजर नहीं आती।
क्या मैं बूढ़ा हो चला हूँ?

हर पचीस दिसम्बर को
जीने की एक नई सीढ़ी चढ़ता हूँ
नए मोड़ पर
औरों से कम,स्वयं से ज्यादा लड़ता हूँ।

मैं भीड़ को चुप करा देता हूँ,
मगर अपने को जवाब नही दे पाता,
मेरा मन मुझे अपनी ही अदालत में खड़ा कर,
जब जिरह करता है,
मेरा हलफनामा मेरे ही खिलाफ पेश करता है,
तो मैं मुकदमा हार जाता हूँ,
अपनी ही नजर में गुनहगार बन जाता हूँ।

तब मुझे कुछ दिखाई नहीं देता,
न दूर का, न पास का,
मेरी उम्र अचानक दस साल बढ़ जाती है,
मैं सचमुच बूढ़ा हो जाता हूँ।

सोमनाथ मंदिर के पुर्नरूद्धार पर
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का प्रेरक उद्‌बोधन

सोमनाथ मंदिर आज हमें यह याद दिलाते हुए खड़ा है कि कोई दुर्बल राष्ट्र यदि बाह्य आक्रमणों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो वह अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता से भी बढ़कर बहुत कुछ खो बैठता है।

पं. नेहरू ने राष्ट्रपति के सोमनाथ मंदिर के उद्‌घाटन के लिए जाने का जोरदार विरोध किया। लेकिन राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने उनके विरोध की ओर ध्यान नहीं दिया और अपने वचन का पालन किया। इस अवसर पर दिया गया उनका भाषण भारत के किसी राष्ट्रपति द्वारा पंथनिरपेक्षवाद पर दिए गए सबसे महत्वपूर्ण भाषणों में एक है। सृष्टि अथवा ब्रम्हांड की रचना करने वाले ब्रह्मा भी भगवान विष्णु की नाभि में रहते हैं। इसी तरह मनुष्य के हृदय में भी सृजन-शक्ति और धार्मिक आस्था का वास होता है, जो संसार के बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्रों, बड़ी-बड़ी सेनाओं और सम्राटों की शक्ति से भी बढ़कर है। प्राचीन युग में भारत सोने और चांदी का भंडार था। सदियों पूर्व दुनिया के कुल सोने का अधिकांश भाग भारत के मंदिरों में था। मेरा विश्वास है कि सोमनाथ मंदिर का पुर्नरूद्धार उस दिन पूर्ण होगा जब इस आधारशिला पर न केवल एक भव्य मूर्ति खड़ी होगी, बल्कि उसके साथ ही भारत की वास्तविक समृद्धि का महल भी खड़ा होगा, वह समृद्धि जिसका सोमनाथ का यह प्राचीन मंदिर प्रतीक रहा है।

सोमनाथ मंदिर को राष्ट्रीय श्रद्धा व विश्वास का प्रतीक बताते हुए राजेन्द्र बाबू ने आगे कहा था- अपने ध्वंसावशेषों से ही पुनः पुनः खड़ा होने वाला सोमनाथ का यह मंदिर पुकार-पुकार कर दुनिया से कह रहा है कि जिसके प्रति लोगों के हृदय में अगाध श्रद्धा है, उसे दुनिया की कोई भी शक्ति नष्ट नहीं कर सकती। आज जो कुछ हम कर रहे हैं, वह इतिहास के परिमार्जन के लिए नहीं है। हमारा एकमात्र उद्देश्य अपने परंपरागत मूल्यों, आदर्शों और श्रद्धा के प्रति अपने लगाव को एक बार फिर दोहराना है, जिन पर आदिकाल से ही हमारे धर्म और धार्मिक विश्वास की इमारत खड़ी हुई है।

सोमनाथ मंदिर को राष्ट्रीय श्रद्धा व विश्वास का प्रतीक बताते हुए राजेन्द्र बाबू ने आगे कहा था-

अपने ध्वंसावशेषों से ही पुन: पुन: खड़ा होने वाला सोमनाथ का यह मंदिर पुकार-पुकार कर दुनिया से कह रहा है कि जिसके प्रति लोगों के हृदय में अगाध श्रद्धा है, उसे दुनिया की कोई भी शक्ति नष्ट नहीं कर सकती।

यहाँ यह उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि सोमनाथ मंदिर के पुर्नरूद्धार की पाकिस्तान ने कड़ी निंदा की थी। इस संबंध में भारत सरकार की निंदा के लिए कराची में एक जनसभा भी आयोजित की गई थी।

सोमनाथ मंदिर आज हमें यह याद दिलाते हुए खड़ा है कि कोई दुर्बल राष्ट्र यदि बाह्य आक्रमणों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो वह अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता से भी बढ़कर बहुत कुछ खो बैठता है। वह अपनी सांस्कृतिक विरासत भी खो बैठता है, और यही सांस्कृतिक विरासत भारत की आत्मा है। महात्मा गांधी और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के शुभाशीष से भारत सरकार की ओर से सोमनाथ मंदिर का पुर्नरूद्धार करके सरदार पटेल और के.एम. मुंशी ने यह गौरवपूर्ण प्रमाण दे दिया कि भारत में वह दृढ़ इच्छा शक्ति है, जिसके बल पर वह धर्मांधता से प्रेरित विदेशी आक्रमणों के इतिहास को मिटाकर अपने खोए हुए सांस्कृतिक गौरव को पुनः प्राप्त कर सकता है, और अपना मस्तक ऊँचा करके खड़ा रह सकता है। इस संदर्भ में देखा जाए तो सोमनाथ मंदिर भारत भर में स्थित सैकड़ों-हजारों मंदिरों से सचमुच बिल्कुल अलग और अनोखा है। ▪

(मेरा देश मेरा जीवन से साभार)

मौन कर्म साधक परमपूज्य बालासाहब देवरस

बालासाहब सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षधर थे। उनका प्रसिद्ध वाक्य था-''यदि छुआछूत पाप नहीं तो फिर कुछ भी पाप नहीं है।''

परमपूज्य बालासाहब देवरस का जन्म 11 दिसम्बर 1915, मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी वि. संवत 1972 को नागपुर के इतवारी क्षेत्र के देवरस बाड़े में हुआ। देवरस परिवार मूलतः बालाघाट म.प्र. का रहने वाला था। बालाघाट जिले के कारंजा नामक स्थान में उनकी कृषि थी। यह लांजी तहसील में है। बालासाहब पाँच भाई थे। इनका स्थान भाईयों में चौथे क्रम पर था। उनकी तीन बहनें थीं। 1927 में बालासाहब प. पू. डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार के सम्पर्क में आए। यहीं से उनका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश हुआ। 1925 में संघ प्रारंभ हुआ था। अतः यह कहना उचित होगा कि बालासाहब प्रारंभ से ही संघ के स्वयंसेवक थे।

1931 में बालासाहब ने न्यू इंग्लिश हाईस्कूल नागपुर से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1932 में डॉ. हेडगेवार ने उन्हें इतवारी शाखा प्रारंभ करने का दायित्व सौंपा। 1935 में उन्होंने मारेस महाविद्यालय नागपुर से संस्कृत एवं दर्शन शास्त्र में स्नातक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। 1937 में एल.एल.बी. मैरिट में उत्तीर्ण की। उसी वर्ष उन्हें नगर कार्यवाह की जिम्मेदारी सौंपी गई। अपने निजी खर्च की व्यवस्था हेतु अनाथ विद्यार्थी-गृह नागपुर में शिक्षक की नौकरी शुरु की। इस बीच पुणे के संघ प्रशिक्षण वर्ग में मुख्य शिक्षक के दायित्व का भी संपादन किया। 1939 में वे कलकत्ता में प्रचारक बन कर गए।

1940 में प.पू. डॉ. हेडगेवार जी का निधन हो गया। उनके बाद परम पूज्यनीय गुरुजी को सरसंघचालक का दायित्व सौंपा गया। 1946-47 में बाला साहब को सह-सरकार्यवाह का अखिल भारतीय दायित्व सौंपा गया। 1948 में महात्मा गाँधी जी की हत्या का मिथ्या आरोप लगाकर संघ पर प्रथम प्रतिबंध लगाया गया। इस सिलसिले में बालासाहब जी चार मास तक कारागार में रहे। प्रतिबंध उठवाने के लिए राजकीय नेताओं से भेंट वार्तालाप करने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही।

1949 में प.पू. गुरुजी ने उन्हें नागपुर से तरुण भारत के संपादन तथा प्रकाशन की विशेष जिम्मेदारी सौंपी। 1965 में माननीय भैयाजी दाणी के देहावसान के बाद इनको सरकार्यवाह का दायित्व सौंपा गया जिसका 1973 तक उन्होंने सफलता पूर्वक निर्वहन किया।

1973 में प.पू. गुरुजी के स्वर्गवास के उपरान्त बालासाहब ने संघ के सरसंघचालक पद का दायित्व संभाला। संगठन की दृष्टि से यह सर्वोत्तम दायित्व था। परम पूज्य गुरुजी पूर्व में यह उद्घोषणा मा. दादा गोरवाडकर जी के सम्मुख कर गए थे कि बाला साहब अपने संघ के भावी सरसंघचालक हैं। 21 वर्ष तक बालासाहब ने सरसंघचालक के दायित्व का अत्यंत कुशलतापूर्वक निर्वाह किया। इस अवधि में अनेक आनुषांगिक कार्यों के रूप में संघ कार्य का विस्तार हुआ। 1975 में संघ पर आपातकाल के कारण दोबारा प्रतिबंध लगा। 1977 में यह प्रतिबंध उठा। 1992 में संघ पर तीसरा प्रतिबंध लगा जो एक साल बाद उठा। 11 मार्च 1994 को बालासाहब ने अपने गिरते हुए स्वास्थ्य के कारण सरसंघचालक के पद से निवृत्ति की घोषणा की।

17 जून 1996 रात्रि 8 बजकर 10 मिनट पर, पुणे के रूबी हाल क्लीनिक नाम के प्रसिद्ध चिकित्सालय में इनकी इहलीला समाप्त हो गई। 18 जून 1996 को सायंकाल को नागपुर के गंगाघाट पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

प.पू. बालासाहब एक मौन कर्मसाधक थे। किसी भी समस्या पर शीघ्र एवं अचूक निर्णय की उनकी क्षमता असाधारण थी। व्यवस्थापन में कुशलता, अनुभव, समृद्धता, गहन चिंतन उनके व्यक्तित्व के अन्य महत्वपूर्ण गुण थे। उनका ध्यान सैद्धान्तिक की बजाय व्यवहार्य बातों पर अधिक रहता था। भारतीय जन समाज ने समाज के इस मौन साधक को उनकी सेवाओं के परिप्रेक्ष्य में अनेक बार सम्मानित किया। 01 अगस्त 1991 को उन्हें लोकमान्य तिलक सम्मान से, अक्टूबर 2 को नागपुर के विश्व हिन्दू परिषद् के संत सम्मेलन में 'यति सम्राट की उपाधि से', 1994 में जीजामाता प्रतिष्ठान की ओर से जीजामाता पुरस्कार से तथा 1996 में स्वातंत्र्यवीर सावरकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बालासाहब सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षधर थे। उनका प्रसिद्ध वाक्य था-''यदि छुआछूत पाप नहीं तो फिर कुछ भी पाप नहीं है।'' सामाजिक समरसता के लिए प्रत्येक विद्यालय उपेक्षित बस्तियों में एक संस्कार केन्द्र चलाए, यह उनकी बड़ी आंकाक्षा थी। उनके व्यक्तित्व में आदर्शवादिता एवं व्यवहारिकता का बहुत ही संतुलित समन्वय एवं मेल था। उनका पूरा जीवन भारतीय संस्कृति एंव हिन्दुत्व की रक्षा के लिए समर्पित रहा। संघ को बालासाहब की सबसे बड़ी देन यह थी कि उन्होंने संघ के तत्वज्ञान को, समाज कार्य के लिए व्यवहार रूप में रूपान्तरित किया। वे हमेशा स्वयंसेवकों को संघ के तत्वज्ञान को अपने आचरण में उतारने के लिए प्रेरित करते रहते थे। संगीत, साहित्य एवं अध्यात्म से उनका गहरा लगाव था। उन्हें श्रीमद्भागवद्गीता एंव महाकवि कालिदास का मेघदूत पूरी तरह कंठस्थ था। वीर सावरकर जी की कविताएं भी उन्हें बहुत प्रिय थी। विशेषकर उनकी लिखी स्वातंत्रदेवता की आरती 'ज्योस्तुते श्री महन्मंगले' को वे अक्सर सुनना पसन्द करते थे। उनके देहान्त पर रांची एक्सप्रेस, रांची बिहार ने अपने संपादकीय में लिखा था- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख के रूप मे, बालासाहब ने अपने लगभग दो दशकों के कार्यकाल के दौरान न केवल लाखों लोगों को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया बल्कि भारतीयता के गंध में, रचे-बसे नए भारत के निर्माण की राह भी दिखलाई। वे मानते थे कि सेवा भाव से ही समाज की विभिन्न इकाइयों का दिल जीता जा सकता है और उन्हें आपस में जोड़कर, अन्ततः राष्ट्रचेतना का विकास किया जा सकता है।

प.पू. बालासाहब देवरस सांस्कृतिक एकता के प्रबल समर्थक थे और इस अर्थ में वे एक सामाजिक अभियन्ता के रूप में, नए भारत के नव निर्माण के लिए एक-एक ईंट जोड़ते रहे। संघ का बीजारोपण यदि डॉक्टर हेडगेवार ने किया तो प.पू. गुरुजी ने उसे पुष्पित और पल्लवित किया और उसे अपार विस्तार माननीय बालासाहब देवरस ने दिया। आधुनिक भारतीय इतिहास उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के उल्लेख के बिना अपूर्ण है। ▪

प्रमुख लोगों की दृष्टि में डॉ. अंबेडकर

डॉ. भीमराव अंबेडकर का व्यक्तित्व वर्ण रंजित था। गरीबी में जन्म लेकर जीवन भर अस्पृश्यता का अपमान कारक बिल्ला माथे पर लेकर सैकड़ों कष्टों से झुलसते हुए वे आगे बढ़े। फिर भी समस्याओं के सामने न झुककर हर पग पर लड़ते-जूझते मेधावी प्राध्यापक, यथार्थवादी शिक्षाशास्त्री, उच्च कोटि के अर्थशास्त्रज्ञ, समर्थ न्यायवादी, गंभीर ग्रंथलेखक, दलित-पीड़ित-शोषितों के सामाजिक तिरस्कार जनित दुःख को दूर कराने वाले संघर्षकर्ता, अभिनव स्मृतिकार और दूरदर्शी समाज सुधारक के रूप में इन प्रशस्य गुणों से भरा था उनका जीवन। अपने जीवन में उनकी निज साधनाजन्य उपलब्धियों के शिखरों में से ये कुछ हैं। व्यक्ति में निःस्वार्थ महत्वाकांक्षा और उसे पाने के लिए अथक परिश्रम एवं आवश्यक पसीना बहाने योग्य मानसिक शारीरिक स्थिरता हो तो उसका जीवन किस प्रकार आश्चर्यजनक ढंग से उन्नति की ओर बढ़ सकता है महोन्नति तक पहुँच सकता है इसके लिए एक अंबेडकर का उदाहरण ही पर्याप्त है। अपने सामने रखे, प्रांजल ध्येयवाद के कारण उन्होंने अपार कार्य सामर्थ्य, विलक्षण नैतिक पौरूष प्राप्त किया था। एक ओर पांडित्यपूर्ण चिंतन और दूसरी ओर ईमानदारी से भरी क्रियाशीलतायें दोनों तानेबाने के धागे बनकर उनके जीवन में बुन चुके थे। इसीलिए वे स्वयं ही नहीं, अपने समूचे समुदाय को ऊपर उठाने में सफल हुए।

कुछ समकालीन नेताओं और विविधपत्र दुष्टताओं के खिलाफ विद्रोह के प्रतीक थे। डॉ. अंबेडकर के प्रति विचार यहाँ प्रस्तुत हैं जिनसे उनके हिमगिरिशिखर जैसे उन्नत व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं:

'वे बहुत प्रखर न्यायिक प्रज्ञा रखने वाले, सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे। अपार विद्वत्ता सपन्न, स्वाभिमानी और निःसंकोच होने के साथ ही सहृदय व्यक्ति थे। उचित ढंग से और निष्कलंक मन से संपर्क करने वालों के प्रति वे स्नेहशील थे।'

(चक्रवर्ती राजगोपालचारी, भारत के प्रथम गवर्नर जनरल)

'संविधान रचना समिति के लिए अंबेडकर को अध्यक्ष नियुक्त करने का अत्यंत उचित निर्णय किया समिति ने। शायद इससे अच्छा निर्णय और कोई हो नहीं सकता था। उन्होंने अपने कर्तव्य या दायित्व को न केवल दक्षता से पूरा किया, अपितु उसको अधिक ऊँची गुणवत्ता प्रदान की। इस पद के समर्थ निर्वाह से यह सिद्ध हो चुका है उनका चुनाव सभी प्रकार से सुयोग्य है।'

'अंबेडकर का व्यक्तित्व, विद्वता, संगठन कौशल और प्रभावी नेतृत्व जैसे गुणों का संगम है। इसीलिए वे देश के आधार स्तंभ माने गये हैं। अस्पृश्यता के निवारण में तथा लाखों अस्पृश्यों में आत्मविश्वास और आत्मशक्ति जगाने में उनको जितनी सफलता मिली है वह सचमुच भारत के लिए उनकी बड़ी सेवा है। उनका कार्य बहुत समय तक रहने वाला है। वह स्वदेशाभिमान तथा मानवता से प्रेरित कार्य है। अस्पृश्य कहलाने वाली जाति में अंबेडकर जैसे महान व्यक्ति का जन्म लेना ही अस्पृश्यों के मन की निराश भावना को मिटा देने वाली बात थी। अंबेडकर के जीवन से प्रेरित होकर ये लोग अन्य लोगों की प्रगति के साथ साथ ऊपर उठने का साहसपूर्ण प्रयत्न करने में पीछे नहीं रहेंगे। अंबेडकर के व्यक्तित्व को, उनके कार्य को मैं आदरांजलि समर्पित करता हूँ। उनकी दीर्घायु, आरोग्य और सफल जीवन के लिए शुभ कामना समर्पित करता हूँ।'

(क्रांतिकारी स्वाधीनता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर द्वारा डॉ. अंबेडकर के पचासवें जन्मदिन पर प्रेषित भावपूर्ण संदेश)

डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर के 73वें जन्मदिन के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक प.पू. श्री गुरूजी ने लिखा पूर्ण पत्र यहाँ दिया जा रहा है:

दिनांक 09.08.1963

आपने चाहा कि मैं एक लेख लिख भेजूँ। इस प्रकार आपने मुझे बहुत गौरवान्वित किया। इस प्रकार के सम्मान के लिए मैं बिल्कुल योग्य नहीं हूँ, क्योंकि लेख लिखने का अभ्यास मुझे नहीं है। फिर भी वंदनीय डॉ. अंबेडकर की पुण्य स्मृति में श्रद्धा समर्पित करना अपना पवित्र कर्तव्य मानता हूँ। भारत के संदेश की गर्जना से सारे संसार को चकित कर देने वाला स्वामी विवेकानंद का एक संदेश है: दीन, दरिद्र, दुर्बल, अज्ञान में तड़फड़ाने वाले, भारतवासी मेरे लिए देव समान हैं। उनकी सेवा में लगना, उनकी चेतना जगाना, उनके जीवन को सुखमय बनाकर उन्नत करना यही सचमुच में भगवान की सेवा है। अपने समाज की 'छुओ मत' वाली असत् प्रवृत्ति को देखकर उससे उदित सभी प्रकार की रूढ़ियों पर स्वामी जी ने कठोर प्रहार किया है। नये समाज की रचना के लिए उन्होंने सारे संसार को जागृति का आव्हान किया। उस पुकार को अपने प्रत्यक्ष आचरण में उतारने, आवेश के साथ सामने आये डॉ. अंबेडकर। राजनीतिक तथा सामाजिक अवहेलनाओं से क्रुद्ध अंबेडकर अलग अलग शब्दों में अलग अलग मार्गों से इस कार्य में जुट गये। इस समाज में अज्ञान, अपमान और दुःख से पीड़ित एक बड़े महत्वपूर्ण भाग को आत्मसम्मान के साथ खड़ा करने का उनका कार्य असाधारण है। राष्ट्र के लिए यह उनका बहुत बड़ा उपकार है। उनका ऋण चुकाना सरल कार्य नहीं।

'श्री शंकराचार्य की जैसी कुशाग्र बुद्धि और भगवान बुद्ध जैसे परम कारूण्य पूर्ण उदार हृदय के संगम से ही भारत का उद्धार संभव है।' यह स्वामी विवेकानंद का कहना था। बौद्धमत स्वीकार कर उसे पुनः गतिशील बनाते हुए डॉ. अंबेडकर ने स्वामी जी के बताये मार्ग पर एक महत्वपूर्ण कदम रखा है। अंबेडकर की तीक्ष्ण चिकित्सक बुद्धि को तत्वज्ञान की दृष्टि से बौद्धमत में कुछ कमियाँ भी दिखाई देती थी। उनके सुधार पर प्रस्ताव भी उन्होंने किया। लेकिन जीवन में समानता, शुचित्व, आपस में यथार्थ पूर्ण स्नेहशीलता जैसे उसके गुणों के कारण मानव सेवा का विशुद्ध प्रेम जागृत होता है। बौद्ध मत पर श्रद्धा से उत्पन्न होने वाली यह प्रेरणा हमारे राष्ट्र के समस्त मानव समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है। मेरा विचार है कि इस तत्व को पहचान कर ही डॉ. अंबेडकर ने बौद्ध मत को स्वीकारा होगा। भूतकाल में समाज सुधार के लिए भगवान बुद्ध ने प्रचलित सामाजिक रूढ़ियों की आलोचना की थी, समाज से कटकर अलग होने के लिए नहीं। वर्तमान काल में भी डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने समाज की भलाई के लिए, धर्म के हित के लिए, हमारे चिरंजीवी समाज को दोष मुक्त शुद्ध बनाने की दृष्टि से काम किया, समाज से कटकर अन्य पंथ बनाने की दृष्टि से नहीं। अतएव डॉ. अंबेडकर भगवान बुद्ध के उत्तराधिकारी हैं, इस स्वरूप से उनकी पवित्र स्मृति में अपना हार्दिक प्रणाम अर्पित करता हूँ। ▪

राष्ट्र और राज्य

पं. दीनदयाल उपाध्याय

राष्ट्र और राज्य दो अलग-अलग सत्ताएँ हैं। बहुत से लोग इस अन्तर को नहीं समझ पाते। वे राज्य और राष्ट्र को एक ही समझ कर चलते हैं और वैसा ही प्रयोग करते हैं।

राज्य के लिए राष्ट्र या राष्ट्र के लिए राज्य? इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर पाना है तो हमें इन दोनों के वास्तविक महत्व को समझना होगा।

आज जिस अर्थ में शासन की ओर से राष्ट्रीयकरण की मांग गुंजायी जा रही है हम आँख बंद करके इसके समर्थक नहीं हो सकते। एक सज्जन कहने लगे कि आप राष्ट्र के प्रति सम्पूर्ण समर्पण के लिए कृतसंकल्प हैं, फिर राष्ट्रीयकरण में मर्यादा की बात आप क्यों करते हैं? निस्संदेह यह प्रश्न जितना सरल है उसका उत्तर उतना ही गम्भीर है। राष्ट्रकार्य के व्रती प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र और राज्य का अन्तर भली-भांति समझ लेना चाहिए चारों ओर व्याप्त राजनीति के कोलाहल में आज राष्ट्र और राज्य के बीच मूलगामी और सूक्ष्म अन्तर को समझ पाना कठिन होता जा रहा है। यही कारण है जो हम राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय प्रगति, राष्ट्रीय लक्ष्य आदि कितने ही महत्वपूर्ण प्रश्नों का समाधानकारक उत्तर खोज पाने में असमर्थ हो रहे हैं। यहाँ तक कि हम अपने राष्ट्र-जीवन की शुद्ध सांस्कृतिक धारा के सम्बन्ध में भी भ्रमित-चित्त हो गये हैं। वास्तव में राष्ट्र और राज्य दो अलग-अलग सत्ताएँ हैं। बहुत से लोग इस अन्तर को नहीं समझ पाते। वे राज्य और राष्ट्र को एक ही समझ कर चलते हैं और वैसा ही प्रयोग करते हैं। राज्य के लिए राष्ट्र या राष्ट्र के लिए राज्य? इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर पाना है तो हमें इन दोनों के वास्तविक महत्व को समझना होगा।

राष्ट्र एक जीवमान इकाई है। वर्षों-शताब्दियों लम्बे कालखण्ड में इसका विकास होता है। किसी निश्चित भू-भाग में निवास करने वाला मानव समुदाय जब उस भूमि के साथ तादात्म्य का अनुभव करने लगता है, जीवन के विशिष्ट गुणों को आचरित करता हुआ समान परम्परा और महत्वाकांक्षाओं से युक्त होता है, सुख-दुःख की समान स्मृतियाँ और शत्रु-मित्र की समान अनुभूतियाँ प्राप्त कर परस्पर हित सम्बन्धों में ग्रथित होता है, संगठित होकर अपने श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों की स्थापना के लिए सचेष्ट होता है और इस परम्परा का निर्वाह करने वाले तथा उसे अधिकाधिक तेजस्वी बनाने के लिए महान तप, त्याग, परिश्रम करने वाले महापुरूषों की श्रृंखला निर्माण होती है तब पृथ्वी के अन्य मानव समुदायों से भिन्न एक सांस्कृतिक जीवन प्रकट होता है। इस भावात्मक स्वरूप को ही राष्ट्र कहा जाता है।

जब तक यह राष्ट्रीय अस्मिता बनी रहती है राष्ट्र जीवित रहता है। इसके क्षीण होने से राष्ट्र क्षीण होता है और नष्ट होने से राष्ट्र नष्ट हो जाता है। इस प्रकार राष्ट्र एक स्थायी सत्य है। राष्ट्र की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए राज्य पैदा होता है। राज्य की उत्पत्ति के दो कारण बताये जाते है। याने राज्य की आवश्यकता दो स्थितियों में होती है। पहली आवश्यकता तब होती है जब राष्ट्र के लोगों में कोई विकृति आ जाये। उसके कारण उत्पन्न समस्याओं का नियमन करने के लिए राज्य उपस्थित किया जाता है। उदाहरण के लिए किसी मोहल्ले में यदि कोई झगड़ा न हो और न ही ऐसी कोई सम्भावना हो तो पुलिस कही नहीं दिखाई पड़ती। किन्तु यदि झगड़ा हो जाये तो झट पुलिस को बुलाया जाता है। दूसरी आवश्यकता तब पड़ती है जब समाज में कोई जटिलता आ उपस्थित हुई हो। सार्वजनिक जीवन में व्यवस्था निर्माण करना जरूरी हो। निर्बलता, असहायता और दरिद्रता का लाभ शक्तिशाली, सम्पन्न और साधन-युक्त वर्ग न उठा सके, सब न्याय की सीमाओं में बंधे चल सकें, इसके लिए राज्य का निर्माण किया जाता है। वास्तव में इन दो कारणों से ही 'राज्य' उत्पन्न होता है। समाज में आई हुई विकृति का नियमन करने के लिए विकृत व्यक्तियों को दण्डित करना याने शांति स्थापित करना और समाज में आई हुई जटिलता को सुलझाकर प्रत्येक व्यक्ति के लिए न्यायपूर्ण, सम्मानित जीवन बना देना याने सुव्यवस्था करना ही राज्य के कार्य माने गये हैं। तीसरा एक कार्य जो इन्हीं दोनों कार्यों की पूर्ति का महत्वपूर्ण अंग है वह विश्व के अन्य राज्यों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना है। याने बाहरी आक्रमण से रक्षा करने का कार्य भी राज्य करता है।

इसके लिए राज्य राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरणार्थ जिसे हम संयुक्त राष्ट्र संघ कहते है, वास्तव में वह राष्ट्रों का संघ नहीं, राज्यों का संघ है। राष्ट्रों के प्रतिनिधि के रूप में वहाँ राज्य उपस्थित हैं। किन्तु यदि राज्य में विकृति आ जाये अथवा वह अपने दायित्व को निभाने में असमर्थ सिद्ध हो तो राष्ट्र ऐसे राज्य को बदल डालता है। राष्ट्र अपने प्रतिनिधि को बदल डालता है। साधारण अर्थ में कहते हैं कि अमुक देश में सरकार बदल गई। जिसे हम प्रजातंत्र कहते हैं वह भी राज्य के

राष्ट्र के लिए राज्य है, राज्य के लिए राष्ट्र नहीं। इस प्रकार राजनीति के लिए राष्ट्रीयता नहीं राष्ट्रीयता के पोषण के लिए राजनीति होनी चाहिए।

वह राजनीति जो राष्ट्र को क्षीण करे अवांछनीय रहेगी। यही बात सुराज्य और स्वराज्य में भी भेद स्पष्ट करती है। स्वराज्य में यदि कष्ट हो तो भी वह उचित है बजाय उस सुराज्य के जो पराया हो।

उपयोगी बनाये रखने और आवश्यकता पड़ने पर उसे बदल डालने की प्रक्रिया का ही नाम है। राज्य बदला जा सकता है किन्तु कोई भी प्रजातंत्र राष्ट्र को नहीं बदल सकता। राष्ट्र का अस्तित्व बहुमत और अल्पमत पर आधारित नहीं रहता। राष्ट्र की एक स्वयंभू सत्ता है। वह स्वयं प्रकट होती है और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में विभिन्न इकाइयों की स्थापना करती है। ये विभिन्न इकाइयाँ जिनमें राज्य भी एक है आपस में परस्पर अनुकूल होकर कार्य करें और राष्ट्र की शक्ति को मजबूत करने के लिए अथक प्रयत्नशील हों इसके लिए आवश्यक होता है कि राष्ट्र को सदैव जाग्रत रखा जाये।

राष्ट्र के सुप्त होने से ही सब प्रकार की खराबियाँ घर करती हैं। राष्ट्र सुप्त होने से उसकी विभिन्न इकाइयों का प्रतिनिधित्व करने वाली सत्ताएँ जैसे राज्य, पंचायत, परिवार आदि सभी अनियंत्रित और उच्छृंखल हो जाती है। राज्य भ्रष्ट हो सकता है। प्रभुता पाय काहि मद नाहीं वाली चौपाई सही उतरती है। किन्तु यदि राष्ट्र जाग्रत और दक्ष हो तो राज्य की प्रभुता मर्यादित रहती है। राज्य तो राष्ट्र का वकील है। कई बार वकील अपने मुवक्किल की ओर से पैरवी करते समय ऐसी भाषा में बातचीत करता है मानों वही प्रार्थी है। ऐसा करना जरूरी होता है। वकालतनामा लिख दिया जाता है किन्तु यदि वकील ठीक काम न करे तो वकालतनामा बदला जा सकता है। यही बात राज्य के साथ भी है। राज्य के समस्त अधिकार राष्ट्र द्वारा ही प्रदान किये जाते हैं और यदि राष्ट्र जाग्रत न रहा तो राज्य उन अधिकारों का दुरूपयोग कर सकता है। राज्य यदि अनियंत्रित होकर राष्ट्र के समस्त सत्ताओं का अपहरण कर ले तो तानाशाही स्थापित हो जाती है और राष्ट्र पंगु हो जाता है।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि राज्य का महत्व कम है। राज्य का महत्व विवादातीत है। राष्ट्र की अभिवृद्धि करना, संरक्षण करना वैभवशाली बनाना, राष्ट्र की आवश्यकतानुसार निर्णय लेकर विश्व सम्बन्धों में पग उठाना आदि कार्य राज्य के हैं। इतना होते हुए भी राज्य सदा स्थायी नहीं रहता। ऐसे अवसर भी आ सकते हैं जब राज्य न हो परन्तु राष्ट्र विद्यमान रहता है। सतयुग का ऐसा ही वर्णन मिलता है। सतयुग का वर्णन करते हुए कहा गया है न राज्य न च राजाऽऽसीत न दण्ड्यो न च दाण्डिकः याने तब न राज्य था, न राजा था, न दण्ड था, न दण्ड देने वाला। किन्तु तब भी राष्ट्र तो था ही। इसी प्रकार की कल्पना साम्यवादी उद्घोषक कार्लमार्क्स ने भी विदरिंग अवे आफ दी स्टेट (राज्य के क्षीण हो जाने) के माध्यम से स्वीकार की है। उसकी भी यही कल्पना है कि अन्त में राज्य नहीं रहेगा। तब क्या रहेगा? निश्चित ही किन्हीं सर्वमान्य सिद्धान्तों के आधार पर राष्ट्र रहेगा। भले ही १९वीं शती में मार्क्स ने राष्ट्र को नहीं माना किन्तु विगत ५० वर्षों के कम्युनिस्ट अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है राष्ट्र की प्रेरणा महज पूंजीवादी व्यवस्था की उपज नहीं है, अपितु कम्युनिस्ट व्यवस्था में भी वही जीवन की सबसे शक्तिदायी प्रेरणा है। इतना ही नहीं जब कोई राष्ट्र गुलाम हो जाता है या उस राष्ट्र की भूमि का कोई हिस्सा गुलाम हो जाता है याने पराया राज्य स्थापित हो जाता है तब भी राष्ट्र रहता है। जैसे कि जब अंग्रेज यहाँ आये, उसका शासन हुआ देश गुलाम हुआ तो ब्रिटिश गवर्नमेंट कही जाने लगी।

उस समय भारतीय राज्य नष्ट हो गया था अथवा भारतीय राजाओं की संकुचित सीमाओं में कुण्ठित होकर पराये राज्य का आश्रित बन गया था। लेकिन क्या कोई कह सकता है कि तब भारतीय राष्ट्र नहीं रहा था? यदि भारत का राष्ट्रजीवन न रहा होता तो आजादी के प्रयत्न ही नहीं होते। राज्य नष्ट होने पर भी राष्ट्र विद्यमान था। इसलिए राष्ट्रीय-जागरण का मंत्र फूँका गया। चेतना जगी। राष्ट्र अपनी अभिव्यक्ति के लिए स्वराज्य घोष करने लगा। वह कौन था जो राज्य न होते हुए भी स्वराज्य की प्राप्ति के लिए फांसी के फंदों को चूमने या काले पानी की सजा भुगतने के समय हृदय में विश्वास और आनन्द की सृष्टि करता था? उस समय भी राष्ट्र विद्यमान था। साहित्य, कला, दर्शन, वाणिज्य के विविध क्षेत्रों में इसी के प्रतिबिम्ब मुखरित हो रहे थे। वन्दे मातरम् के घोष पर वह किसकी प्रेरणा थी जो बलिदान के लिए उद्यत करती थी? कौन था जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक भाव का अलख गुंजा रहा था? निश्चित ही वह राष्ट्र था राज्य नहीं। ऐसे ही जब राष्ट्र पूर्ण विकसित होता है तो उसके अन्तर्गत अनेक राज्य हो सकते हैं। ये राज्य भिन्न-भिन्न रूप और पद्धतियों के भी हो सकते हैं। भारतीय इतिहास में हम ऐसे कई राजवंशों का वर्णन पाते हैं। ये राज्य भिन्न-भिन्न पद्धतियों का भी पालन करते हैं। कहीं गणराज्य थे तो कहीं संघराज्य, कहीं वैराज्य था तो कहीं राजतंत्र। इनके आकार भी भिन्न थे। ये सब राज्य सत्ताएँ उभरती और विलीन होती रही। किन्तु राष्ट्र सर्वकाल विद्यमान रहा और इन परिवर्तनों का नियमन करता रहा। राज्य स्थायी नहीं रहते। जैसे शरीर पर कपड़े आवश्यकतानुसार बदलते रहते हैं वैसे राज्य भी राष्ट्र की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रकट होते हैं और आवश्यकतानुसार उनके विविध स्वरूप हो सकते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि राष्ट्र के लिए राज्य है, राज्य के लिए राष्ट्र नहीं। इस प्रकार राजनीति के लिए राष्ट्रीयता नहीं राष्ट्रीयता के पोषण के लिए राजनीति होनी चाहिए। वह राजनीति जो राष्ट्र को क्षीण करे अवांछनीय रहेगी। यही बात सुराज्य और स्वराज्य में भी भेद स्पष्ट करती है। स्वराज्य में यदि कष्ट हो तो भी वह उचित है बजाय उस सुराज्य के जो पराया हो। स्वराज्य की व्याख्या में तीन बातें प्रमुख रूप से आती हैं। पहली बात तो यह है कि राज्य उन लोगों के द्वारा संचालित हो जो राष्ट्र के अंग है। दूसरी विशेषता यह है कि ऐसा राज्य राष्ट्र के हित में चलना चाहिए याने राष्ट्रीय हित में नीतियों का संचालन होना चाहिए। और तीसरी बात यह है कि ऐसे राज्य में राष्ट्र का हित साधने का सामर्थ्य अपना स्वयं का होना चाहिए याने स्वावलम्बन के बिना स्वराज्य की कल्पना करना ही गलत है। राज्य अपने राष्ट्र के घटकों के हाथ में रहने पर भी यदि आर्थिक अथवा वैदेशिक मामलों में किसी अन्य राष्ट्र का पिछलग्गू बन गया या दबाव में आने लगा तो स्वराज्य निरर्थक हो जाता है। सुरक्षा के मामले में यदि राज्य आत्मनिर्भर नहीं, नीतियों के मामले में स्वतंत्र नहीं और आर्थिक योजना में स्वयं पूर्ण नहीं तो वह राष्ट्र के लिए अहितकर कार्य करने की ओर प्रेरित हो जाता है।

ऐसा परावलम्बी राज्य विनाश का कारण बनता है। इसलिए स्वराज्य भी तभी तक उपयोगी और सार्थक है जब तक वह स्वराष्ट्र की आवश्यकता की पूर्ति करता है। यह तभी हो सकता है जब राष्ट्रीय समाज राज्य से बढ़कर राष्ट्र की आराधना करें। सच्चा सामर्थ्य राज्य में नहीं राष्ट्र में ही रहता है। इसलिए जो राष्ट्र के प्रेमी हैं वे राजनीति के ऊपर राष्ट्रभाव का आराधन करते हैं। राष्ट्र ही एकमेव सत्य है। इस सत्य की उपासना करना सांस्कृतिक कार्य कहलाता है। राजनीतिक कार्य भी तभी सफल हो सकते हैं जब इस प्रकार के प्रखर राष्ट्रवाद से युक्त सांस्कृतिक कार्य की शक्ति उसके पीछे सदैव विद्यमान रहे। ▪

(राष्ट्र जीवन की दिशा से साभार)

► मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने दिल्ली में चुनावी सभा को सम्बोधित किया।

► प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णु दत्त शर्मा और केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर विधि प्रकोष्ठ सम्मेलन में शामिल हुए।

► मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने 'पेसा जागरूकता सम्मेलन' को संबोधित किया।

► प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने अहमदाबाद में जनसंपर्क किया।

► मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी व अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने लाड़ली लक्ष्मी योजना के 15 वर्ष की प्रगति यात्रा पुस्तिका का विमोचन किया।

► मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने हरी झंडी दिखाकर गौरव यात्रा को रवाना किया।

► मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने गुजरात में मांडवी में जनसभा को संबोधित किया।

► प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने ग्रामीण निकाय जनप्रतिनिधियों के प्रशिक्षण वर्ग को सम्बोधित किया।